सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 129, नई दिल्ली, शुक्रवार 18 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सबसे कठिन काम है कार्य करने का निर्णय लेना, बाकी सब केवल दृढ़ता है...

03 प्लास्टिक हब बनने की ओर भारत,1300 अरब डॉलर के बाजार में दावेदारी
06 ट्रंप आब सिर्फ कारोबारी
08 सड़कों पर उतरने से पहले अपनी सरकार के कामों की समीक्षा करें : बीजेपी

भारत देश के बाजार में (टेलीग्राम एवं विभिन्न मोबाइल ऐप्स) वाहन विवरण, चालान विवरण, ड्राइविंग लाइसेंस विवरण (धारक का फोटो, पता और मोबाईल नंबर), वाहन प्रदूषण प्रमाण पत्र विवरण की सरे आम अवैध बिक्री

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। हम पहले भी कई बार आपको सूचित कर चुके हैं की भारत देश के सभी राज्यों के परिवहन विभागों में आप सभी का उपलब्ध अति गोपनीय सुरक्षित डाटा (वाहनों से संबंधित, वाहन चालानों का विवरण, प्रदूषण प्रमाण पत्रों की जानकारी, और ड्राइविंग लाइसेंस डाटा फोटो, पता और मोबाइल नंबर) खुले आम बाजार में टेलीग्राम एवम् अन्य मोबाइल ऐप्स पर बेचा जा रहा है अर्थात आसानी से कुछ रकम लेकर उपलब्ध कराया जा रहा है जैसे कि यह कुछ भी नहीं है। सबसे बुरी बात यह है कि यह वास्तविक समय में ही उपलब्ध कराया जा रहा है, इससे यह तो स्पष्ट है की डाटा संरक्षण विभाग का ही कोई अंदरूनी व्यक्ति यह सारी निजी जानकारी बाजार में बेचने के लिए उपलब्ध करवा रहा है।

आपकी जानकारी हेतु कुछ ऐप्स के लिंक जहाँ ऐसा हो रहा है:

* RTO Vehicle Pollution Info App - https://play.google.com/store/apps/details?id=com.aitan.puc_status&hl=en_IN
* Vehicle & Driving Licence Info- https://play.google.com/store/apps/details?id=com.treespot.hometech.vehicle.drivinglicenceinfo
* Vehicle Information App - https://play.google.com/store/apps/details?id=com.gofinger.vehicleinfo
* Vehicleinfo - Bharat RTO App- https://play.google.com/store/apps/details?id=com.vehicle.rto.vahan.status.information.register
* Cars 24- https://play.google.com/store/apps/details?id=com.cars24.seller
* Park plus- https://play.google.com/store/apps/details?id=com.ovunque.parkwheels
* Bike Info- https://play.google.com/store/apps/details?id=com.cuvora.carinfo.rto.bikeinfo
* RTO Vehicle Info-car & Bike - https://play.google.com/store/apps/details?id=com.trafficinfo.rtovehicleinfo
* RTO Vehicle Info App & Challan - https://play.google.com/store/apps/details?id=com.dualapps.trendingapps.vahaninfo
* RTO Vehicle Information - https://play.google.com/store/apps/details?id=com.vehicleregistrationdetails.rtovehicleinformation.drivinglicenceapplyonline
* Vehicle Information App- https://play.google.com/store/apps/details?id=rto.owner.address.parivahan.car.malik.address.finder

आपकी जानकारी हेतु बता दें की इन्ही ऐप्स का इस्तेमाल दिल्ली दंगों के दौरान वाहन मालिक के धर्म के आधार पर वाहनों को आग लगाने के लिए भी किया गया था- https://newsmeter.in/is-govts-vahan-responsible-for-torched-vehicles-of-muslims-in-delhi/

इन ऐप्स द्वारा ट्रांसपोर्ट सर्वर से प्राप्त ओटीपी/एसएमएस का उपयोग किया जा रहा है, जो उपयोग के आधार पर लाखों में हो सकते है, जिसके परिणामस्वरूप सरकारी खजाने को भी भारी भरकम नुकसान हो रहा है और जनता के जान माल को नुकसान।

वाहन मालिकों के डेटा की सुरक्षा की जिम्मेदारी एमओआरटीएच (सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय) और एनआईसी (राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र) विभाग की है। **जिस तरह से वाहनों का डेटा बाजार में मोबाइल ऐप पर आसानी से उपलब्ध है, वह एनआईसी के वरिष्ठ अधिकारियों की मिलीभगत के बिना संभव नहीं हो सकता ऐसा इसलिए क्योंकि परिवहन विभाग का सॉफ्टवेयर एनआईसी ने ही बनाया है और डेटा सर्वर भी एनआईसी के नियंत्रण में है।** साफ है एनआईसी अधिकारियों की संलिप्तता के बिना यह डेटा कभी भी लीक नहीं हो सकता है।

आज बाजार में इन मोबाइल ऐप्स द्वारा किसी भी नए पंजीकृत वाहन का डेटा उसी दिन उपलब्ध कराया जा रहा है जो यह दर्शाता है की डाटा की उपलब्धता एनआईसी के संलिप्त अधिकारी/अधिकारियों द्वारा किसी लाइव विधि का उपयोग कर किया जा रहा है जैसे की डेटा को एपीआई के माध्यम से साझा किया जा रहा है। इस तरह व्यापक डेटा लीक होने से आने वाले खतरों का अंदाजा भी लगाना मुश्किल है। **इसका साफ अर्थ है की कोई भी अति विशिष्ट व्यक्ति, कोई भी अधिकारी, कोई भी महिला और कोई भी स्कूल या कॉलेज जाने वाली लड़की सुरक्षित नहीं है।** नाम से, वाहन के नंबर से, मोबाइल नंबर से, पते से व्यक्ति का पूरा विवरण (उसका पूरा नाम, पता और मोबाइल नंबर) जान सकते हैं जिसका अर्थ साफ है की किसी को भी चोट पहुंचाने, जान माल पर हाथ डालने के लिए असामाजिक तत्व कितनी खतरनाक स्थिति उत्पन्न कर सकते है।

आपको हमने पहले दिखाया था की भारत देश के प्रधानमंत्री के वाहनों का डाटा इन ऐप्स द्वारा उपलब्ध कराया जा रहा था और अब देखे दिल्ली के मुख्यमंत्री के वाहन का विवरण जो इन ऐप्स द्वारा उपलब्ध कराया गया

"license_plate": "DL11CM0001",
"owner_name": "DY SECRETARY GAD",
"is_financed": false,
"present_address": "GENERAL ADMINISTRATION DEPARTMENT, 2ND LVL IP ESTATE DELHI SECRETARIAT,, -110002",
"class": "Motor Car(LMV)",
"category": null,
"registration_date": "2022-04-22",
"pucc_upto": "2025-12-13",
"pucc_number": "DL00301030003865",
"chassis_number": "MZ7JD64JD5H005469",
"engine_number": "M9219068800",
"fuel_type": "DIESEL",
"brand_name": "JSW MG MOTOR INDIA PVT LTD",
"brand_model": "GLOSTER DE 4X4 6 SEAT SAVVY",
"body_type": "BODY ON CHASSIS FRAME",
"cubic_capacity": "1996.00",
"gross_weight": "3100 Kgs.",
"cylinders": "4",
"color": "METAL BLACK",
"norms": "BHARAT STAGE VI",
"fit_up_to": "2037-04-21",
"rto_name": "MALL ROAD, Delhi"

1. प्रश्न यह उठता है की आखिर इन बड़े कारनामों/घोटालों को अंजाम दिलवाने के पीछे कौन है?

2. इतने बड़े स्तर पर भारत देश की जनता के साथ अति अति विशिष्ट व्यक्तियों के जान माल को असुरक्षित करने वाले के खिलाफ अब तक कार्यवाही क्यों नहीं?

3. खुले आम मोबाइल ऐप्स पर अति सुरक्षित डाटा को साझा करने/बेचने वालो के खिलाफ साइबर क्राइम शाखा द्वारा अब तक कार्यवाही क्यों नहीं?

क्या एनआईसी (राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र) के अधिकारी/अधिकारियों जो भी इस प्रकार डाटा लीक कर जनता के जान माल को खतरा उत्पन्न कर रहे के पीछे किसी अति अति विशिष्ट व्यक्ति का हाथ है जो वह बेखौफ होकर खुले आम ऐसा कर रहा है और सभी बैठे हैं चुप?

गुरुग्राम में 5 महीने से प्रदूषण पर 'पर्दा' जनवरी के बाद से नहीं मिल रहा डाटा

गुरुग्राम में प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड पर प्रदूषण के आंकड़े छुपाने का आरोप है। पिछले पांच महीनों से प्रदूषण मापने वाले यंत्र बंद पड़े हैं जिससे डेटा नहीं मिल रहा है। सरकार प्रदूषण कम करने के लिए करोड़ों खर्च करने की योजना बना रही है लेकिन अधिकारियों की लापरवाही से यह योजना विफल हो रही है। शहर में निर्माण कार्य और वाहनों के कारण प्रदूषण बढ़ रहा है।

गुरुग्राम। देश ही नहीं दुनिया के प्रदूषित शहरों में शामिल गुरुग्राम में प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी प्रदूषण पर पर्दा डाल रहे हैं। पांच महीने से प्रदूषण मापक यंत्रों से प्रदूषण का डाटा नहीं मिल रहा है।

शहर में विकास सदन, सेक्टर 51 और ग्वाल पहाड़ी में प्रदूषण मापक यंत्र लगे हुए हैं, लेकिन जनवरी के बाद से यह बंद पड़े हैं। फरवरी से लेकर अब तक पांच महीने से ज्यादा समय बीत गया है, पर अधिकारियों को इन यंत्रों को चालू करवाने की चिंता नहीं है।

यह हाल तब है, जब प्रदेश सरकार प्रदूषण से निपटने और एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) सुधारने के लिए 3600 करोड़ रुपये खर्च करने की योजना बना चुकी है, लेकिन प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी ऐसी योजनाओं पर पानी फेर रहे हैं।

कैसे कम होगा प्रदूषण?

गुरुग्राम में प्रदूषण खतरनाक स्तर पर रहता है और जब प्रतिदिन एक्यूआई का डाटा ही उपलब्ध नहीं होगा तो ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि प्रदूषण को कम करने के लिए उपाय कैसे होंगे।

गुरुग्राम मेट्रोपालिटन डेवलपमेंट अथॉरिटी (जीएमडीए) ने भी गुरुग्राम और फरीदाबाद में आठ वैदर स्टेशन बनाने की योजना बनाई थी, लेकिन दो साल बाद भी धरातल पर कोई काम नहीं हुआ। इस संबंध में प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की क्षेत्रीय अधिकारी आकांक्षा तंवर को फोन किया गया और वाट्सएप पर मैसेज भेजे, लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया।

गैस चैंबर बन जाता है गुरुग्राम

आइटी- इंडस्ट्री का हब होने के कारण गुरुग्राम में पिछले डेढ दशक में आबादी बढ़ने के साथ ही सड़कों पर वाहनों का दबाव भी बढ़ गया है। बिल्डिंग निर्माण कार्य भी दिन-रात हो रहे हैं, यही वजह है कि प्रदूषण लोगों का दम घोंटने लगा है। वैसे तो पूरे साल शहर का एयर क्वालिटी इंडेक्स खराब रहता है, लेकिन अक्टूबर से लेकर फरवरी तक पूरा एनसीआर गैस चैंबर बन जाता है।

सांसों में जहर घोल रही गैसें

सर्दियों में एक्यूआई 400 को पार कर जाता है, वहीं दीपावली के आसपास एक्यूआई 500 के समीप पहुंच जाता है। स्मॉग नहीं छंटने के कारण प्रदूषण बच्चों से लेकर बजुर्गों तक की सेहत पर दुष्प्रभाव रहता है। बेहद खराब स्थिति होने पर कई बार स्कूलों में भी अवकाश घोषित हो जाता है।

वाहनों से निकले धुएं, धूल से कार्बन मोनोआक्साइड, कार्बन डाइआक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड सहित अन्य गैसें सांसों में जहर घोलती हैं। इसके कारण सांस लेना भी मुश्किल हो जाता है। लोग आंखों में जलन, गले में खराश, खांसी और सिरदर्द जैसी समस्या पूरा साल झेलते हैं।

धूल और धुएं में उड़ते हैं नियम

ज्यादा प्रदूषण होने पर उपायों के तौर पर ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) के प्रतिबंध लागू रहते हैं। ग्रेप के तीसरे चरण में बिल्डिंग निर्माण कार्य भी बंद होते हैं, लेकिन इसके बावजूद नियमों का पालन नहीं होता।

जिला प्रशासन, नगर निगम सहित अन्य विभाग सड़कों पर पानी का छिड़काव करके खानापूर्ति कर देते हैं। प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए बीएस 3 (पेट्रोल) और बीएस 4 (डीजल) वाहनों के इस्तेमाल पर रोक लगाने जैसे सरकारी आदेश जारी होते हैं, लेकिन यह सब हवा को स्वच्छ बनाने की दिशा में स्थायी इंतजाम नहीं है।

शहर में बन गए मलबे के पहाड़

मलबा निपटान की जिम्मेदारी गुरुग्राम नगर निगम की है, लेकिन सेक्टर 29 सहित गोल्फ कोर्स एक्सटेंशन रोड, दिल्ली जयपुर हाईवे पर नरसिंहपुर, फरीदाबाद रोड और सेक्टर 31 में हाईवे के किनारे मलबा फेंका जा रहा है। इसके कारण भी प्रदूषण बढ़ रहा है। ज्यादा धूल उड़ने वाले क्षेत्रों में एंटी स्मोग गन लगाकर प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

50 से ऊपर एक्यूआई स्वास्थ्य के लिए खतरनाक

एक्यूआई - स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव

0-50 - कोई दुष्प्रभाव नहीं

51-100 - संवेदनशील लोगों को सांस लेने में तकलीफ

101-150 - आंखों में जलन, सांस और दिल के मरीजों के लिए खतरनाक

151-200 - सभी लोगों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

201-300 - घर के अंदर रहने की सलाह

301- 500 - अति प्रदूषित, स्वास्थ्य के लिए अलर्ट

पौधरोपण का सिर्फ कागजी प्लान

शहर में आबादी बढ़ने के साथ ही हरियाली का दायरा लगातार घट रहा है। शहर के आसपास खाली जमीन नहीं बची है। कृषि योग्य भूमि से भी पेड़ों की कटाई होती है।

नगर निगम गुरुग्राम, नगर निगम मानेसर और गुरुग्राम मेट्रोपालिटन डेवलपमेंट अथॉरिटी (जीएमडीए) द्वारा हर साल मानसून में लाखों पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है, लेकिन पौधे लगाने और इनकी देखभाल करने के लिए जमीनी स्तर पर प्रयास नहीं किए गए हैं। इस मानसून के लिए भी जीएमडीए और नगर निगम के पास पौधरोपण की कोई खास योजना नहीं है।

गुरुग्राम मेट्रोपालिटन डेवलपमेंट अथॉरिटी (जीएमडीए) ने भी गुरुग्राम और फरीदाबाद में आठ वैदर स्टेशन बनाने की योजना बनाई थी, लेकिन दो साल बाद भी धरातल पर कोई काम नहीं हुआ। इस संबंध में प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की क्षेत्रीय अधिकारी आकांक्षा तंवर को फोन किया गया और वाट्सएप पर मैसेज भेजे, लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। आइटी- इंडस्ट्री का हब होने के कारण गुरुग्राम में पिछले डेढ दशक में आबादी बढ़ने के साथ ही सड़कों पर वाहनों का दबाव भी बढ़ गया है। बिल्डिंग निर्माण कार्य भी दिन-रात हो रहे हैं, यही वजह है कि प्रदूषण लोगों का दम घोंटने लगा है। वैसे तो पूरे साल शहर का एयर क्वालिटी इंडेक्स खराब रहता है, लेकिन अक्टूबर से लेकर फरवरी तक पूरा एनसीआर गैस चैंबर बन जाता है।

वृंदावन के सात ठाकुर जी

1.गोविंद देव जी
2.मदन मोहन जी
3.गोपीनाथ जी
4.जुगल किशोर जी
5.राधावल्लभ जी
6.बांके बिहारी जी
7.राधा रमण जी

श्री राधा गोविंददेव जी

श्री राधा मदन मोहन जी

श्री गोपीनाथ जी

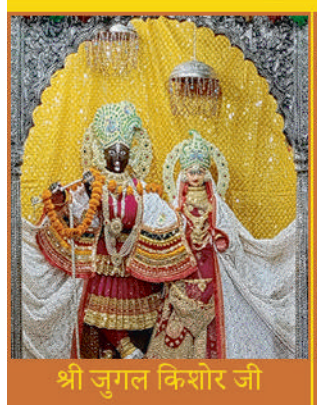
श्री जुगल किशोर जी

श्री राधा रमण जी

श्री बांके बिहारी जी

श्री राधा बल्लभ जी

गोविंद देव जी जयपुर

ओमर के राजा मानसिंह ने वृंदावन में गोविंद देव जी का भव्य मंदिर बनवाया, जहां गोविंद देव जी 80 साल तक विराजे। लेकिन जब औरंगजेब के शासन काल में ब्रज धाम पर हमले हुए, तब गोविंद देव जी के भक्त उन्हें जयपुर ले गए। तब से गोविंद देव जी जयपुर के राजकीय मंदिर में विराजमान हैं।

मदन मोहन जू करौली

मुगल शासन के दौरान जब ब्रज के मंदिरों और धर्म स्थानों में हमले हो रहे थे, तब भक्त मदन मोहन जी को बचाने के लिए राजस्थान करौली ले गए। करौली के राजा गोपाल सिंह ने अपने महल के पास मदन मोहन जी के लिए एक भव्य मंदिर बनवाया और उन्हें वहां स्थापित किया।

गोपीनाथ जी जयपुर

गोपीनाथ जी की मूर्ति यमुना किनारे बंसीवट पर संत परमानंद भट्ट को मिली थी, जिसे उन्होंने सेवा के लिए मधु गोस्वामी को सौंप दी थी। बाद में रायसल के राजपूतों में गोपीनाथ जी के लिए वृंदावन में मंदिर बनाई, लेकिन औरंगजेब के शासन काल में हो रहे आक्रमण के चलते गोपीनाथ जी को जयपुर ले जाया गया। तभी से गोपीनाथ जी जयपुर की पुरानी बस्ती स्थित मंदिर में विराजित हैं।

जुगल किशोर जी पन्ना

जुगल किशोर जी की मूर्ति हरिराम जी को वृंदावन के किशोरवन में मिली थी। उन्हें वहीं प्रतिष्ठित किया गया, बाद में ओरछा के राजा ने वहां भव्य मंदिर बनवाया। सालों बाद जब औरंगजेब के शासनकाल में वृंदावन के मंदिरों को तोड़ा जा रहा था, तब भक्त जुगल किशोर जी को ओरछा के पास पन्ना (मध्य प्रदेश) ले गए।

राधावल्लभ जी वृंदावन

राधावल्लभ जी की यह मूर्ति हरिवंश जी को दहेज में मिली थी, जिसे वृंदावन के सेवा कुंज में स्थापित किया गया और बाद में सुंदरलाल भटनागर जी द्वारा बनवाए गए लाल पत्थरों की पुरानी मंदिर में प्रतिष्ठित किया गया। मुगल हमले के दौरान राधावल्लभ जी को राजस्थान ले गए और बाद में फिर मूर्ति को वृंदावन लाया गया और नवनिर्मित मंदिर में भगवान की स्थापना की गई।

बांके बिहारी जी वृंदावन

स्वामी हरिदास जी की भक्ति से प्रसन्न होकर बांके बिहारी जी निधिवन में प्रकट हुए, जहां स्वामी जी ने बिहारी जी को वहीं प्रतिष्ठित कर दिया। मुगल आक्रमण के दौरान भक्त उन्हें भरतपुर ले गए। बाद में वृंदावन के भरतपुर वाला बगीचा नामक स्थान में मंदिर निर्माण कर बांकेबिहारी जी को फिर से प्रतिष्ठित किया गया।

राधारमण जी वृंदावन

श्रीला गोपाल भट्ट गोस्वामी को गंडक नदी में एक शालिग्राम शिला मिला था, जिसे वे वृंदावन ले आए और केशीघाट के पास एक मंदिर में उन्हें प्रतिष्ठित कर दिया। भक्तों के द्वारा शालिग्राम को वस्त्र धारण न करवा पाना और किसी दर्शनार्थी ने शालिग्राम को लेकर निंदा कर दी कि चंदन लगाए हुए शालिग्राम, कढ़ी में बैंगन पक रहा हो ऐसे लगते हैं। यह सुन गोस्वामी जी बहुत दुखी हुए, लेकिन सुबह होती ही शालिग्राम से राधारमण जी का दिव्य रूप प्रकट हुआ। मुगल हमलों के बाद भी वृंदावन में यह मूर्ति विराजमान रही और हमले के दौरान भक्त राधारमण जी की मूर्ति को छिपाकर रखे।

माता-पिता संतान के संरक्षक/अभिभावक मात्र होते हैं, विधाता कभी नहीं बन सकते हैं। अपने-अपने प्रारब्ध/लेख तो संतान को स्वयं ही सुख-दुख के माध्यम से भोगने पड़ते हैं।

राजा दशरथ के पुत्र प्रभु श्रीराम जी से, राजा जनक की बेटी सीता का अलौकिक विवाह हुआ, परन्तु मिला वनवास। फिर वनवास में भी अपहरण, फिर अग्निपरीक्षा। अंत में भी गर्भवती सीता को परिवार से वियोग देखना पड़ा। पृथ्वी पर राज करने वाले पिता और ससुर चाहकर भी, साधन देकर भी सीता को सुख नहीं दे पाए। फिर एक साधारण मनुष्य कैसे अपनी संतान को उनके अपने कर्म के बिना सुख दे सकता है? यही है जीवन का मूल मंत्र कि हम परिवार/संबंधियों की परवरिश में तन-मन-धन से प्रयास करते रहें परन्तु यह भूल न जाए कि किसी को सुख उसके अपने कर्म से ही मिलता है, दूसरे के कर्मों से नहीं।

राष्ट्रीय खट्टी कैंडी दिवस आज

18 जुलाई को राष्ट्रीय खट्टी कैंडी दिवस है, और हमारी स्वाद कलिकाएँ पहले से ही उत्सुकता से झूम रही हैं! मीठी कैंडी को छोड़ो, और इस दिन के सम्मान में खट्टी कैंडी को अपने ऊपर हावी होने दो। ये मज़ेदार, चटपटी बाइट-साइज़ कैंडीज़ सभी आकार, साइज़ और स्वाद में आती हैं, और हम उन सभी का स्वाद लेने के लिए इंतज़ार नहीं कर सकते! चबाने वाली ट्विस्ट और रस्सियों से लेकर छोटी सख्त कैंडीज़ तक, हर एक कैंडी हमारे मुंह के अंदर खटास का एक बड़ा पंच बनाने का अपना वादा पूरा करती है।

राष्ट्रीय खट्टी कैंडी दिवस का इतिहास : पूरे इतिहास में, लोगों ने खट्टे फलों और खाद्य पदार्थों का आनंद लिया है, लेकिन खट्टी कैंडी एक अपेक्षाकृत नई घटना है, यहां तक कि नियमित कैंडी की तुलना में भी। एनपीआर का कहना है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि 19वीं शताब्दी में जब उद्योग पहली बार शुरू हुआ था, तब बड़े पैमाने पर उत्पादित कैंडी की बहुत अच्छी प्रतिष्ठा नहीं थी। लोग उन अशुद्ध परिस्थितियों के बारे में चिंतित थे जिनमें उन्हें बनाया गया था और रंगीन मिठाइयों में संभावित रूप से हानिकारक रसायनों का उपयोग किया जा रहा था। अधिकांश भाग के लिए, निर्माता खट्टी कैंडी बनाने के लिए अज्ञात क्षेत्र में नहीं गए। हालाँकि, कुछ अपवाद थे। ये निर्माता अम्लीय अवयवों पर निर्भर थे - सबसे आम तौर पर, सिरका - गन्ने की चीनी को ग्लूकोज में बदलने के लिए, एक मीठा-तीखा संयोजन बनाते हैं। पिछले कुछ सालों में कैंडी निर्माताओं को अपनी लोकप्रियता बढ़ाने की चाहत होने लगी। इसलिए उन्होंने सबसे बढ़िया अवसर की ओर रुख किया - हैलोवीन। उन्होंने हैलोवीन थीम पर विज्ञापन चलाए, जिससे इस त्यौहार और कैंडी के बीच एक स्थायी संबंध स्थापित हुआ। इस संबंध ने कैंडी निर्माताओं को ऐसे फ्लेवर के साथ प्रयोग करने की अनुमति दी, जो आम तौर पर लोगों को नहीं बेचे जाते, और खट्टी कैंडी का बाजार आधिकारिक तौर पर शुरू हो गया। उदाहरण के लिए, फेरारा पैन कैंडी कंपनी ने अमेरिकी सेना द्वारा हाइड्रोजन बम के पहले विस्फोट के समय के आसपास एटॉमिक फायरबॉल नामक खट्टी कैंडी पेश की। कैप्साइसिन और सिनामेल्डिहाइड से भरी यह कैंडी मुंह को सुन्न कर देती थी। 19वीं सदी के अंत तक खट्टी कैंडी का क्रेज पूरे अमेरिका में फैल गया था। इसका एक कारण फॉरेन कैंडी कंपनी द्वारा बनाई जाने वाली खट्टी कैंडी थी, जिसे वॉरहेड्स के नाम से जाना जाता था। उनके संस्थापक, पीटर डी यागर ने वास्तव में खट्टी कैंडी के लिए ग्राउंड जीरो - पूरे पूर्वी एशिया की यात्रा की थी - ताकि कैंडी की सबसे खट्टी किस्म की खोज की जा सके और उन्हें यह ताइवान में मिली।

अमेरिकन लिकोरिस कंपनी - जिसकी अपनी खट्टी कैंडी लाइन है - ने राष्ट्रीय खट्टी कैंडी दिवस की स्थापना की। वे इस मिठाई का जश्न मनाना चाहते थे और वे इस दिन खट्टी कैंडी के सभी अद्भुत स्वादों का अनुभव करने के लिए अधिक लोगों को प्रोत्साहित करते हैं।

सनातन धर्म की दुर्लभ जानकारी...

एक ईश्वर : ॐ ।। ओ म ।।
दो लिंग : नर और नारी ।
दो पक्ष : शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष।
दो पूजा : वैदिक और पुराणोक्त।
दो अयन : उत्तरायन और दक्षिणायन।
तीन भगवंत : ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
तीन भगवती :
महा सरस्वती, महा लक्ष्मी, महा गौरी।
तीन लोक : पृथ्वी, आकाश, पाताल।
तीन गुण : सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण।
तीन स्थिति : घन, द्रव, वायु।
तीन स्तर : प्रारंभ, मध्य, अंत।
तीन पड़ाव : बचपन, जवानी, बुढ़ापा।
तीन रचनाएं : देव, दानव, मानव।
तीन अवस्था : जागृत, मृत, बेहोशी।
तीन काल : भूत, भविष्य, वर्तमान।
तीन नाड़ियां : इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना।
तीन संध्या : प्रातः, मध्याह्न, सायं।
तीन शक्ति :
इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति।
चार धाम :
बद्रीनाथ, जगन्नाथ, रामेश्वरम्, द्वारका।
चार मुनि :
सनत, सनातन, सनंद, सनत कुमार।
चार वर्ण : ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
चार निति : साम, दाम, दंड, भेद।
चार वेद :
सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद।
चार स्त्री : माता, पत्नी, बहन, पुत्री।
चार युग :
सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग, कलयुग।
चार समय : सुबह, दोपहर, शाम, रात।
चार अप्सरा :
उर्वशी, रंभा, मेनका, तिलोत्तमा।
चार गुरु :
माता, पिता, शिक्षक, आध्यात्मिक गुरु।
चार प्राणी :
जलचर, थलचर, नभचर, उभयचर।
चार जीव :
अण्डज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज।
चार वाणी :
ओम्कार्, अकार्, उकार, मकार्।
चार आश्रम :
ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास।
चार भोज्य : खाद्य, पेय, लेह्य, चोष्य।
चार पुरुषार्थ : धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।
चार वाद्य : तत, सुषिर, अवनद्ध, घन।
पांच तत्व :
पृथ्वी, आकाश, अग्नि, जल, वायु।
पांच भगवंत :
ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, सूर्य।
पांच ज्ञानेन्द्रियां :
आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा।
पांच कर्म : रस, रुप, गंध, स्पर्श, ध्वनि।
पांच उंगलियां : अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा।
पांच पूजा उपचार :
गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।
पांच अमृत :
दूध, दही, घी, शहद, शक्कर।
पांच प्रेत :
भूत, पिशाच, वैताल, कुष्मांड, ब्रह्मराक्षस।
पांच स्वाद :
मीठा, चर्खा, खट्टा, खारा, कड़वा।
पांच वायु :
प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान।
पांच इन्द्रियां :
आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा, मन।
पांच वटवृक्ष : सिद्धवट (उज्जैन), अक्षय वट (प्रयागराज), बोधिवट (बोधगया), वंशीवट (वृंदावन), साक्षी वट (गया)।
पांच पत्ते :
आम, पीपल, बरगद, गुलर, अशोक।
पांच कन्या :
अहिल्या, तारा, मंदोदरी, कुंती, द्रौपदी।
छ ऋतु :
शीत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, बसंत, शिशिर।
छ ज्ञान के अंग : शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष।
छ कर्म : देव पूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप, दान।
छ दोष : काम, क्रोध, मद (घमंड), लोभ (लालच), मोह, आलस्य।
सात छंद : गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप, वृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप, जगती।
सात स्वर : सा, रे, ग, म, प, ध, नि।
सात सुर : षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद।
सात चक्र : सहस्त्रार, आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, स्वाधिष्ठान, मूलाधार।
सात वार :
रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।
सात मिट्टी : गौशाला, घुड़साल, हाथी साल, राज द्वार, बाम्बी की मिट्टी, नदी संगम, तालाब।
सात महाद्वीप : जम्बुद्वीप (एशिया), प्लक्षद्वीप, शाल्मली द्वीप, कुशद्वीप, क्रौंच द्वीप, शाकद्वीप, पुष्कर द्वीप।
सात ऋषि : वशिष्ठ, विश्वामित्र, कण्व, भारद्वाज, अत्रि, वामदेव, शौनक।
सात ऋषि : वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र, भारद्वाज।
सात धातु (शारीरिक) : रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य।
सात रंग : बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी, लाल।
सात पाताल : अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल।
सात पुरी : मथुरा, हरिद्वार, काशी, अयोध्या, उज्जैन, द्वारका, कांची।
सात धान्य : गेहूं, चना, चांवल, जौ, मूंग, उड़द, बाजरा।
आठ मातृका :
ब्राह्मी, वैष्णवी, माहेश्वरी, कौमारी, ऐन्द्री, वाराही, नारसिंही, चामुंडा।
आठ लक्ष्मी : आदि लक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी, गजलक्ष्मी, संतान लक्ष्मी, वीर लक्ष्मी, विजय लक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी।
आठ वसु : अप (अहः/अयज), ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्युष, प्रभास।
आठ सिद्धि : अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व।
आठ धातु : सोना, चांदी, तांबा, सीसा जस्ता, टिन, लोहा, पारा।
नवदुर्गा : शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्र घंटा, कुष्मांडा, स्कन्द माता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री।
नवग्रह : सुर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु।
नवरत्न : हीरा, पन्ना, मोती, माणिक, मूंगा, पुखराज, नीलम, गोमेद, लहसुनियां।
नवनिधि : पद्म निधि, महापद्म निधि, नील निधि, मुकुंद निधि, नंदनिधि, मकर निधि, कच्छप निधि, शंख निधि, खर्व/मिश्र निधि।
दस महाविद्या : काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्तिका, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमला।
दस दिशाएं :
पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ईशान, ऊपर, नीचे।
दस दिग्पाल :
इन्द्र, अग्नि, यमराज, नैऋति, वरुण, वायुदेव, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा, अनंत।
दस अवतार (विष्णुजी) :
मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि।
दस सती : सावित्री, अनुसुइया, मंदोदरी, तुलसी, द्रौपदी, गांधारी, सीता, दमयंती, सुलक्षणा, अरुंधती।
नए भारत का वैश्विक संकल्प...
सनातन वैदिक धर्म...विश्व धर्म
अखंड हिंदु राष्ट्र भारत...विश्व गुरु भारत
धर्मो रक्षति रक्षितः...

खराश या सूखी खाँसी के लिये अदरक और गुड़

1. गले में खराश या सूखी खाँसी होने पर पिसी हुई अदरक में गुड़ और घी मिलाकर खाएँ। गुड़ और घी के स्थान पर शहद का प्रयोग भी किया जा सकता है। आराम मिलेगा।

2. दमे के लिये तुलसी और वासा - दमे के रोगियों को तुलसी की 10 पत्तियों के साथ वासा (अडूसा या वासक) का 250 मिलीलीटर पानी में उबालकर काढ़ा बनाकर दें। लगभग 21 दिनों तक सुबह यह काढ़ा पीने से आराम आ जाता है।

3. अरुचि के लिये मुनक्का हरड़ और चीनी - भूख न लगती हो तो बराबर मात्रा में मुनक्का (बीज निकाल दें), हरड़ और चीनी को पीसकर चटनी बना लें। इसे पाँच छह ग्राम की मात्रा में (एक छोटा चम्मच), थोड़ा शहद मिला कर खाने से पहले दिन में दो बार चाटें।

4. मौसमी खाँसी के लिये सेंधा नमक - सेंधे नमक की लगभग एक सौ ग्राम डली को चिमटे से पकड़कर आग पर, गैस पर या तवे पर अच्छी तरह गर्म कर लें। जब लाल होने लगे तब गर्म डली को तुरंत आधा कप पानी में डुबोकर निकाल लें और नमकीन गर्म पानी को एक ही बार में पी जाएँ। ऐसा नमकीन पानी सोते समय लगातार दो-तीन दिन पीने से खाँसी, विशेषकर बलगमी खाँसी से आराम मिलता है। नमक की डली को सुखाकर रख लें एक ही डली का बार बार प्रयोग किया जा सकता है।

लोग बोलें ---- सत्यवादी महाऋषि राहुलजी आपको अपनी प्यारी मम्मीजी की कसम हैं -- देश का नागरिक होने के नातें ईमानदारी से बताइएं कि -- देश में 6 करोड़ से अधिक अबैध विदेशी घुसपैठिये और अबैध शरणार्थी कैसे आएं??? बताएं

देश का नागरिक होने के बाद भी आप और आपके सहयोगी हमारे शांतिप्रिय देश के नगरीकों और ग़रीब जनता को बर्गलाने, बहकाने और गुमराह करने की साजिश क्यों कर रहें हो??? बताएं

नई दिल्ली, संजय साग़र सिंह। शांतिप्रिय देश के नगरीकों और ग़रीब जनता को बर्गलाने, बहकाने और गुमराह करने की साजिश को लोगों ने देश के लिए खतरनाक बताया और इनसे तीखे सबाल करते हुई अपनी प्रतिक्रिया दी, साथ ही इनके शासन काल के कुकर्म और करनामों का खुलासा करते हुए बताया कि हमारे शांतिप्रिय देश के सत्यवादी महाऋषि राहुलजी आपको अपकी प्यारी मम्मीजी की कसम हैं, देश का नागरिक होने के नातें ईमानदारी से देश की जनता और अपने सहयोगियों को बताइएं कि देश में 6 करोड़ से अधिक अबैध विदेशी घुसपैठिये और अबैध शरणार्थी आखिर कैसे और किधर से किसके सपोर्ट और लालच के कारण हमारे देश में घुस आएं?

उन्होंने बताया कि विदेशी दुश्मन कि सह और साजिश के तहत देश में हो रहें खतरनाक अबैध धर्मान्तरण नेटवर्क, इससे जुड़े डराने धमकाने, धमकी और झूठा मुकदमा करने बाले गुंडों के टास्क फ़ोर्स, विदेशी फंडिंग, बेईमानी-धोखे का ज़बरन प्यार, मजहबी आड़ में सडयंत के तहत गरीबों कि जमीन, मकान, दुकान और सम्पत्तियों पर बजहब की आड़ में ज़बरन कट्टर गुंडाई और मनमानी से अबैध कब्ज़े और विदेशे एजेंडे की आड़ में देश की बेटियों कि हत्याओं और उनकी इज्जत की सुरक्षा पर आप और आपकी मम्मीजी कब खुलकर बोलेगी? बताएं।----

दुबारा सत्ता पाने के आप और आपके दुश्मन देश के प्रेमी समर्थक बहुमत और वोट पाने एवं देश का माहौल खराब करने बाले विदेशी एजेंट -- ग़रीब असहाय कमजोर दलितों के कंडे पर अपने विदेशी एजेंडे की बंदूक रखकर क्यों चला रहें हैं आप ग़रीब ग़रीब दलितों को भड़काने और गुमराह करने काम और उनपर विदेशी मजहबी साजिश के तहत अत्याचार करना बंद कब करेंगे? देश का नागरिक होने के बाद भी आप और आपके सहयोगी हमारे शांतिप्रिय देश के नगरीकों और ग़रीब दलितों को बर्गलाने, बहकाने और गुमराह करने की साजिश क्यों कर रहें हो??? बताएं

आप के शासन का इतिहास गवाह हैं आप यातो गुलाम बनते हो या दलितों को गुलाम बनाते हो इसीलिए दलितों का स्वर्णिम इतिहास छुपाने के लिए आप ने विदेशी लुटेरों का सालों साल किताबों में इतिहास पढ़ाया आ यही नहीं रुके आप ने बाबा साहब के संबिधान को अपने शासन काल में 100 से अधिक बार बदला और दलितों का उत्पीड़न करने के लिए अपने प्यारे विशेष वर्ग के लिए जबरदस्ती ऐसे ऐसे क़ानून बनाये जिनके कारण आज़ भी देश जल रहा हैं। इन्होने आरक्षण और मेरिट पर 40 और 80 का झूठ फैलाया और सर्व समाज को आपस में लड़ाया वहीं, मेरिट के संबंध में 2003 से 2017 तक की सर्च में जबकि पाया गया कि पैसा, ग़रीबी और संसाधनों ना होने के बाद भी बिना मदद के दलित युवाओं का मेरिट लिस्ट में अंतर सिर्फ 5% हैं। आज ज़ब दलित अपनी मेहनत और ईमानदारी से पढ़ लिखकर समाज में तरक्की कर रहें हैं तो आप और आपके सहयोगी राष्ट्रवादी दलित वर्ग को बर्गलाने, बहकाने और गुमराह करने की साजिश कर रहें हैं और दलित को बार बार छोटी सी लाल किताब दिखाकर वोट देने के लिए लुभा रहें हैं लेक़नि अब दलित इनके भड़काने में आने बाला नहीं हैं सब इनकी साजिश समझ गए हैं। इसीलिए ये अब साजिश के तहत ग़रीब दलित वर्ग को मोहरा बनाने का प्रयास कर रहें हैं। लेक़नि ये तो बताइए संबिधान और बाबा साहब का आप, आपकी पार्टी और सहयोगियों ने कभी भी सम्मान क्यों नहीं किया??? पहले ये बताएं

आप को, आपकी मम्मीजी और आपकी पार्टी को ग़रीब दलित वर्ग से अगर इतना ही लगाब हैं तो बताओं -- अपने डॉ बाबा साहब जी को भारत रत्न क्यों नहीं दिया? आप ने 50 साल इस देश पर राज किया लेक़नि अपने कमजोर दलितों को उनका अधिकार कभी भी नहीं दिया उल्टा उनकों बैरहमी से मरबाया पिटवाया और अपने 50 साल के कार्यकाल में मनमानी से दबंगाई से अमानवीय अत्याचार किये और तो और अपने एक विशेष वर्ग और पुलिस प्रशासन अधिकारीयों और मन्त्रीयों को दलितों पर खुलकर मनमानी से गुंडाई और हर प्रकार के अमानवीय अत्याचार करने की खुली छुट्टी दे रखी दी -- बेचारे असहाय दलित बेबात पीटते थे और उस समय कोई उनकी आवाज़ सुनने बाला नहीं था और दलितों पर हर जगह होरहे अमानवीय अत्याचारों को रोकने बाला भी नहीं था। उस समय पूरी सत्ता अंधी गूंगी और बहरी बनी हुई थी -लेक़नि ज़ब दलितों की इनको हाय और बद्दुआ लगी तो इनके पापो का भरा घड़ा फूट गया और अत्याचारी सत्ता चली गयी। लेक़नि दलितों के साथ इतना सब करने के बाद भी ये आज़ दुबारा सत्ता में आने के लिए फिर से दलितों से वोट मांग रहें पहले ये बताओं अपने शासन काल में कितने अत्याचारियों पर कार्यवाही की? ग़रीब कमजोर असहाय दलितों को उनका अधिकार और मान-सम्मान क्यों नहीं दिया? उनके साथ जानबरों जैसा भेदभाव क्यों किया???बताओं

जनवरी 2025 में भी "आप" ने स्कूलों को मिली धमकी का राजनीतिक दुरूपयोग करने का प्रयास किया था

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की किसी भी शैक्षणिक संस्थान को धमकी को दिल्ली पुलिस पूरी गम्भीरता से लेती रही है और ना सिर्फ फौरी सुरक्षा जांच करती है बल्कि त्वरित साइबर जांच कर धमकी देने वाले तक को सामने लाती है।

दिल्ली पुलिस की जांच में सामने आया है की स्कूल में छुट्टी के इच्छुक एक स्कूली छात्र ने ही फर्जी धमकी देकर स्कूल आदि को फर्जी ईमेल भेजने का कुकृत्य किया।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की यह दुर्भाग्यपूर्ण है की अरविंद केजरीवाल ने इस संवेदनशील मुद्दे का राजनीतिक स्वार्थ साधने के लिए प्रयोग करने की कोशिश की और ब्यानबाज़ी कर दिल्ली में छात्रों एवं अभिभावकों में तनाव पैदा करने की कोशिश की।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की जनवरी 2025 में भी ₹आप₹ ने स्कूलों को मिली धमकी का राजनीतिक दुरूपयोग करने का प्रयास किया था पर अंततः वह उस पर जवाबदेह बनी क्योंकि तब भी एक 12 वर्षीय छात्र दोषी निकला था और उस छात्र के पिता के तार तत्कालीन मुख्य मंत्री सुश्री आतिशी मार्लेना के माता पिता की एन.जी.ओ. से जुड़े निकले थे।

उन्होंने कहा है की आज का छात्र साइबर प्रयोग में काफी सक्रिय है सोशल मीडिया पर सक्रिय है और स्कूल पाठ्यक्रम में भी ईमेल का प्रयोग हो रहा है ऐसे में उनके पास कम उम्र से ईमेल आदि के प्रयोग की छूट रहती है और एक कमजोर क्षण में कोई बच्चा उस छूट का दुरुपयोग कर जाता है। हम मानते हैं यह वही मामले हैं।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की बेहतर होगा अरविंद केजरीवाल दिल्ली की जनता को गुमराह करने भयभीत करने की कोशिश के लिए माफी मांगें।

दिल्ली वाले आशा करते हैं की भविष्य में स्कूल से हवाई याण कम्पनी तक किसी को भी धमकी मिलने पर अरविंद केजरीवाल एवं उनकी पार्टी ओछी राजनीतिक ब्यानबाज़ी से बचते हुए सुरक्षा एजेंसियों पर विश्वास रखेंगे।

प्लास्टिक हब बनने की ओर भारत, 1300 अरब डॉलर के बाजार में दावेदारी

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। भारत ने वैश्विक प्लास्टिक व्यापार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने के उद्देश्य से एक महत्त्वाकांक्षी रणनीति की घोषणा की है। ऑल इंडिया प्लास्टिक्स मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (एआईपीएमए) द्वारा राजधानी दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में केंद्र सरकार के दो वरिष्ठ अधिकारियों ने स्पष्ट संकेत दिया कि देश अब आयात-प्रतिस्थापन की नीति से आगे बढ़कर निर्यात-संचालित विकास की दिशा में बढ़ रहा है।

सम्मेलन को केंद्रीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय के अपर सचिव एवं विकास आयुक्त डॉ. रजनीश ने भी संबोधित किया। उन्होंने बताया कि एमएसएमई क्षेत्र भारत की जीडीपी में 30% योगदान देता है और लगभग 28 करोड़ लोगों को रोज़गार प्रदान करता है। उन्होंने कोविड के बाद देश की आर्थिक वापसी में इस क्षेत्र की भूमिका को 'अद्वितीय' बताया।

डॉ. रजनीश ने बताया कि 2023 में जहाँ केवल 1.6 करोड़ एमएसएमई पंजीकृत थीं, वहीं आज यह संख्या 6.5 करोड़ से अधिक हो चुकी है — यानी सिर्फ दो वर्षों में चार गुना वृद्धि। इसी तरह क्रेडिट गारंटी योजना में भी दो वर्षों में 6 लाख करोड़ रुपये के ऋण को सुरक्षित किया गया है, जबकि 2000–2022 के बीच 3 लाख करोड़ रुपये ही गारंटी के अंतर्गत थे।

उन्होंने एआईपीएमए के ₹चार गुना निर्यात लक्ष्य₹ को "व्यावहारिक और आकांक्षी₹ बताते हुए कहा कि ₹यह लक्ष्य न केवल पूरा होगा, बल्कि उम्मीद से अधिक परिणाम भी देगा, क्योंकि भारतीय उद्यमियों की क्षमताएँ आँकड़ों से कहीं आगे हैं।"

सम्मेलन के दौरान रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के संयुक्त सचिव (पेट्रोकेमिकल्स) दीपक मिश्रा ने कहा कि भारत का प्लास्टिक निर्यात वर्तमान में लगभग 4.5 अरब डॉलर है, जबकि आयात 5 अरब डॉलर — यानी लगभग 0.5 अरब डॉलर का व्यापार घाटा। अब सरकार की रणनीति यह घाटा मिटाने के साथ-साथ वैश्विक बाजार में भारत की उपस्थिति मजबूत करने की है।

उन्होंने कहा कि पारंपरिक एशियाई देशों के साथ हुए व्यापार समझौतों के स्थान पर अब यूएस, यूके, यूरोपीय संघ और ऑस्ट्रेलिया जैसे उपभोक्ता बाजारों के साथ नई एफटीए संधियाँ की जा रही हैं, जिससे 2–5% तक टैरिफ में छूट मिल सकती है और प्रतिस्पर्धा में भारत को बढ़त मिलेगी।

दीपक मिश्रा ने ईपीआर नीति, एकल-उपयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध और उत्पाद गुणवत्ता व अंतरराष्ट्रीय प्रमाणन को निर्यात की सफलता की अनिवार्य शर्तें बताया। उन्होंने प्लास्टिक उद्योग से अपील की कि वह स्व-नियमन अपनाते हुए प्रतिबंधित सामग्री के निर्माण और विपणन पर स्वयं अंकुश लगाए, अन्यथा कड़े सरकारी कदमों की चेतावनी दी गई है।

एआईपीएमए गवर्निंग काउंसिल के चेयरमैन अरविंद मेहता ने बताया कि प्लास्टिक फिनिश्ड उत्पादों का वैश्विक व्यापार करीब 1300 अरब डॉलर का है, जिसमें भारत की हिस्सेदारी मात्र 12.5 अरब डॉलर — यानी 1.2% है। उन्होंने अमेरिका का उदाहरण देते हुए कहा कि अकेले अमेरिका 72.35 अरब डॉलर का प्लास्टिक आयात करता है, जबकि भारत इसमें 1.2% से भी कम की आपूर्ति करता है।

मेहता ने स्पष्ट किया कि यह मिशन केवल निर्यात बढ़ाने की योजना नहीं, बल्कि भारत को वैश्विक प्लास्टिक विनिर्माण हब बनाने की राष्ट्रीय रणनीति है। इसके अंतर्गत नए पॉलीमर प्लांट, अत्याधुनिक मशीनरी, और एमएसएमई यूनिट्स का आधुनिकीकरण प्रमुख लक्ष्य होंगे।

भारत में इस समय 50,000 से अधिक प्लास्टिक आधारित एमएसएमई इकाइयाँ कार्यरत हैं, जो 46 लाख से अधिक रोजगार प्रदान कर रही हैं। यदि चार गुना निर्यात लक्ष्य साकार होता है, तो यह आंकड़ा 60 लाख रोजगार तक पहुँच सकता है।

एआईपीएमए अध्यक्ष मनोज आर. शाह ने बताया कि संगठन वर्ष 2025 में तीन राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित कर रहा है — पहला सम्मेलन आज दिल्ली में संपन्न हुआ, दूसरा 22 अगस्त को अहमदाबाद, और तीसरा 17 सितंबर को मुंबई में प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त वर्षांत में 'प्लास्टीवर्ल्ड' नामक अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा, जो विशेष रूप से प्लास्टिक फिनिश्ड उत्पादों पर केंद्रित होगी।

इस प्रदर्शनी में मेडिकल, ऑटोमोबाइल, पैकेजिंग, स्पोर्ट्स और घरेलू प्लास्टिक उत्पादों को वैश्विक खरीदारों के सामने पेश किया जाएगा।

सम्मेलन में विभिन्न मंत्रालयों के अधिकारी, नीति-निर्माता, प्लास्टिक उद्योग से जुड़ी प्रमुख हस्तियां और देशभर के एमएसएमई प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

भारत का प्लास्टिक उद्योग अब केवल उत्पादन तक सीमित नहीं, बल्कि गुणवत्ता, नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से एक नया युग गढ़ रहा है। सरकार का सहयोग, उद्योग की प्रतिबद्धता और उद्यमशीलता की भावना मिलकर भारत को "प्लास्टिक का विश्वगुरु" बनाने की दिशा में तेजी से अग्रसर कर रहे हैं।

पीपुल फोरम ऑफ इंडिया ने की नई नियुक्तियों की घोषणा

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। पीपुल फोरम ऑफ इंडिया ने अपनी राष्ट्रीय और राज्य नेतृत्व टीम में कई प्रमुख नियुक्तियों की घोषणा की है। इन नियुक्तियों का उद्देश्य संगठनात्मक कार्यप्रणाली को सुव्यवस्थित करना और जमीनी स्तर पर भागीदारी को मजबूत करना है।

डॉ. सेल्वगणेश को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और राष्ट्रीय सलाहकार समिति प्रभारी बनाया गया है। डॉ. मैलारास्वामी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और दक्षिण भारत प्रभारी होंगे। इसके अलावा, बी.पी. सुरेश राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष और जसबीर सिंह अंतरराष्ट्रीय राजदूत के रूप में कार्य करेंगे।

तमिलनाडु राज्य में बी.के. परंथमन को राज्य अध्यक्ष और राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य बनाया गया है। किरण कर्नाटक राज्य अध्यक्ष और पी.जे. अतुल केरल राज्य युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष होंगे। हिमांशु पाल बिहार राज्य श्रम प्रकोष्ठ सचिव के रूप में कार्य करेंगे।

इन नियुक्तियों के बारे में राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस. मणिमोझियान ने कहा कि संगठन का उद्देश्य पारदर्शी और समावेशी नेतृत्व तैयार करना है जो लोगों से जुड़ा हो और जमीनी बदलाव लाए।

अभिनेत्री नीतू चंद्रा को बिहार चुनाव आयोग का आइकॉन फेस नियुक्त किया गया

मुख्य संवाददाता

बिहार चुनाव आयोग ने एक ऐतिहासिक फैसले में, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित अभिनेत्री और राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता निर्माता नीतू चंद्रा को बिहार का आइकॉन फेस नियुक्त किया है। यह ऐतिहासिक नियुक्ति न केवल एक सम्मान है, बल्कि उस नागरिक का सम्मान है जिसने अथक परिश्रम करके बिहार की पहचान को वैश्विक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक मंचों पर ऊँचा किया है। नीतू चंद्रा सिर्फ़ बिहार का चेहरा ही नहीं, बल्कि बिहार का गौरव हैं।

पटना में एक साधारण शुरुआत से लेकर हॉलीवुड के चमकदार रेड कार्पेट तक, उनका सफ़र असाधारण से कम नहीं है। बिहार में उनका योगदान सिनेमा, खेल, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक प्रभाव तक फैला हुआ है, जो उन्हें चुनाव प्रचार के दौरान लाखों लोगों को प्रेरित करने के लिए सबसे योग्य और सशक्त विकल्प बनाता है। अक्षय कुमार और जॉन अब्राहम के साथ गरम मसाला में उनके धमाकेदार बॉलीवुड डेब्यू से लेकर ट्रैफ़िक सिग्नल, ओए लकी! में प्रशंसित अभिनय तक। लकी ओए!, रण और 15 से ज़्यादा हिंदी फ़िल्मों में, नीतू ने अमिताभ बच्चन, अनिल कपूर, सुष्मिता सेन, आर. माधवन, अभय देओल और कुणाल खेमू जैसे कलाकारों के साथ अभिनय किया है। वह बिहार की पहली व्यावसायिक बॉलीवुड अभिनेत्री थीं, जिन्होंने उद्योग के मानदंडों को तोड़कर दूसरों के लिए रास्ता बनाया। सिल्वर स्क्रीन से परे, उन्होंने राष्ट्रीय ताइक्वांडो चैंपियनशिप में नौ बार भारत का प्रतिनिधित्व करके, यह उपलब्धि हासिल करने वाली बिहार की पहली मार्शल आर्टिस्ट बनकर, पदक जीतकर और खेल इतिहास रचकर राज्य को अपार गौरवान्वित किया है।

दैनिक जागरण अखबार ने आप प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज के खिलाफ छापी थी गलत खबर

मुख्य संवाददाता

नईदिल्ली। पार्टी मुख्यालय में हुई एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने बताया, कि उन्होंने दैनिक जागरण अखबार को एक मामले में मानहानि का नोटिस दिया है। उन्होंने बताया कि पिछले महीने 24 जून को उपराज्यपाल महोदय के कार्यालय से एक प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई थी, जिसमें यह कहा गया था, कि एक अस्पताल घोटाले के मामले में जांच की अनुमति दे दी गई है। इस प्रेस रिलीज के आधार पर दैनिक जागरण अखबार ने 25 जून को इस संबंध में एक खबर प्रथम पन्ने पर छापी, जिसमें दैनिक जागरण ने लिखा था, कि 1000 करोड़ के अस्पताल घोटाले मामले में पूर्व मंत्री भारद्वाज और जैन के खिलाफ होगी एसीबी जांच। अखबार ने आगे लिखा था कि वर्ष 2018-19 में दोनों तत्कालीन मंत्रियों ने 5590 करोड़ की लागत की 24 अस्पताल परियोजनाओ को मंजूरी दी थी। सौरभ भारद्वाज ने उपराज्यपाल कार्यालय द्वारा जारी की गई प्रेस विज्ञप्ति पर भी नाराजगी जताते हुए कहा, कि उपराज्यपाल महोदय को अपनी प्रेस विज्ञप्ति में घोटाला शब्द का प्रयोग न करके तथाकथित घोटाला या आरोप शब्द का प्रयोग करना चाहिए था।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली के सभी पत्रकारों को इस बात की भली भांति जानकारी है, कि 2015 से 2020 का जो दिल्ली सरकार का कार्यकाल रहा, मैं उसमें मंत्री पद पर नहीं था। बावजूद इसके दैनिक जागरण अखबार ने 2018-19 में मुझे मंत्री बताया। उन्होंने कहा कि दैनिक जागरण में छपी इस गलत खबर पर प्रतिक्रिया देते हुए 26 जून को एक प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से और एक वीडियो सोशल मीडिया के माध्यम से जारी करते हुए, दैनिक जागरण अखबार को और बाकी सभी मीडिया को यह जानकारी दी थी, कि अखबार में छपी खबर गलत है। वर्ष 2018-19 में मैं किसी मंत्री पद पर आसीन नहीं था। उन्होंने कहा कि मेरे द्वारा यह बात साफ कर देने के बावजूद की 2018-19 में मैं किसी मंत्री पद पर आसीन नहीं था, दैनिक जागरण अखबार ने 27 जून को दोबारा एक खबर छापी, और इस बार यह खबर संपादक महोदय के माध्यम से छापी गई, जिसमें अखबार ने फिर से मुझे तत्कालीन मंत्री बताया।

प्रेस वार्ता के माध्यम से दैनिक जागरण को चेतावनी देते हुए सौरभ भारद्वाज ने कहा, कि मेरे द्वारा यह बता दिए जाने के बावजूद की वर्ष 2018-19 में मैं किसी मंत्री पद पर आसीन नहीं था, उसके बावजूद दैनिक जागरण अखबार ने दोबारा मेरे बारे में गलत खबर छापी। उन्होंने कहा कि मेरा दैनिक जागरण अखबार से यह अनुरोध है, कि वह अपनी इस त्रुटि को स्वीकार करें और उसमें सुधार करें, अन्यथा मैं दैनिक जागरण अखबार पर मानहानि का मुकदमा करूंगा। सौरभ भारद्वाज ने कहा कि मैं सभी पत्रकार बंधुओ को यह बताना चाहता हूं, कि किसी पत्रकार के खिलाफ या किसी संपादक के खिलाफ इस प्रकार का मुकदमा करना हमें बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता। बड़े भारी मन के साथ मैने यह मानहानि का नोटिस जारी किया है। परंतु पत्रकारिता जगत से जुड़े लोगों को भी इस बात का ख्याल रखना पड़ेगा, कि जब कोई व्यक्ति राजनीति में पूरी ईमानदारी के साथ काम करता है, तो उसमें बड़ा त्याग होता है। न केवल उस व्यक्ति का त्याग होता है, बल्कि उसके पीछे उसके पूरे परिवार का त्याग होता है। उन्होंने कहा कि इतनी ईमानदारी और त्यागी के साथ काम करने वाले व्यक्ति पर लगे किसी तथा कथित आरोप को आप जांच शुरू होने से पहले ही यदि घोटाला कहकर संबोधित करेंगे तो यह बात ठीक नहीं है।

दक्षिणी दिल्ली में पूर्व सांसद रमेश बिधूड़ी के जन्मदिन की धूम, उनकी लोकप्रियता का तकाजा

रमेश बिधूड़ी के जन्मदिन पर आयोजित स्वास्थ्य शिविर में सैकड़ों क्षेत्रवासियों ने उठाया स्वास्थ्य सेवा का लाभ

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। यह पूर्व सांसद रमेश बिधूड़ी की लोकप्रियता का जीता जागता प्रमाण है कि जन्मदिन के कई दिन पहले से ही पूरे दक्षिणी दिल्ली में जन सेवा, निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर, रोजगार मेला आदि का आयोजन कर उनके जन्मोत्सव को यादगार बनाया जा रहा है। इसी कड़ी में श्री बिधूड़ी के जन्म दिवस पर कृष्णा मंदिर मदनगीर अंबेडकर नगर में भव्य निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन कर सैकड़ो की संख्या में लोगों की स्वास्थ्य जांच की गई तथा उन्हें आवश्यक दवाई एवं परामर्श दिए गए। इस स्वास्थ्य जांच शिविर का पूर्व सांसद रमेश बिधूड़ी ने फीता काटकर शुभारंभ किया।

इस शिविर में मैक्स हॉस्पिटल के अनुभवी डॉक्टरों द्वारा बीपी, शुगर, कोलेस्ट्रॉल, ईसीजी, सीबीसी, आई चेकअप व क्लोव डेंटल द्वारा दांतों की जांच की गई। 70 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्गों का वय वंदन योजना के तहत 10 लाख के मुफ्त इलाज हेतु आयुष्मान कार्ड बनाए गए। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत रोजगार मेला का भी आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ो लोगों ने अपना पंजीकरण कराया।

सांसद बिधूड़ी दक्षिणी दिल्ली के जमीनी एवं लोकप्रिय नेता है। केजरीवाल सरकार के दौरान उसकी गलत एवं जन विरोधी नीतियों का सबसे ज्यादा विरोध रमेश बिधूड़ी के द्वारा किया गया। दिल्ली से आप सरकार की विदाई के पीछे सांसद बिधूड़ी की मेहनत को नहीं नकारा जा सकता।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि नर सेवा नारायण सेवा की भावना से वह हमेशा जन समस्याओं के समाधान, समाज के कमजोर वर्ग की शिक्षा, स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील रहे हैं। उन्होंने कहा कि राजनीति प्लेटफार्म समाज सेवा का सबसे उम्दा माध्यम है। बतौर सांसद दक्षिण दिल्ली के सभी विधानसभाओं की अनेकों समस्याओं का समाधान कराकर उन्होंने यह साबित कर दिया कि वह दक्षिणी दिल्ली की जनता के चाहते और सही अर्थों में जन सेवक है। इस अवसर पर आयोजक महरौली जिला एससी मोर्चा के जिला अध्यक्ष चंद्रपाल बैरवा एवं मदनगीर मंडल अध्यक्ष दिलीप देवतवाल और उनकी पूरी टीम उपस्थित रही। जिस व्यापकता एवं निष्ठा के साथ कृष्णा मंदिर में यह शानदार कार्यक्रम आयोजित किया गया, उसकी सर्वत्र चर्चा हो रही है।

फन वे लर्निंग एनजीओ में गुलाफशा और ऋचा का जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाया गया, और बच्चों ने भी खूब आनंद लिया।

सरकार का निशाना, समोसा जलेबी कचोरी नहीं बल्कि खाद्य पदार्थों में छिपे, अतिरिक्त चीनी व तेल केहानिकारक सेवन के विकल्प से जागरूक कराना है

भारत में जीवनशैली से जुड़ी तेजी से बढ़ती बीमारियों व मोटापे से निपटने के लिए केंद्र सरकार की नई पहल- दिशानिर्देश जारी

–एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के हर देश के विद्वान से लेकर साधारण आम व्यक्ति को यह मानना पड़ेगा कि अर्ध सत्य, झूठ से भी अधिक खतरनाक व हानिकारक होता है इसीलिए किसी भी आदेश/निर्देश/जानकारी या बातचीत का पूरा सत्य, इसका उद्देश्य,पारदर्शिता जानना हर व्यक्ति के लिए जरूरी है। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं,क्योंकि पिछले तीन दिनों से मैं एडवोकेटकिशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र, सोशल इलेक्ट्रॉनिक व प्रिंट मीडिया में लगातार आर्टिकल्स, डिबेट विश्लेषण देख सुन व पढ़ रहा हूं कि समोसा जलेबी कचोरी फ्रेंच फ्राइज बहुत नुकसान कारक हैं,उससे बीमारियां होती है केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा इन खाद्य उत्पादों पर चेतावनी निर्देश जारी करने का निर्देश दिया है इसलिए मैं पिछले दो दिनों से लगातार इसपर रिसर्च कर अपना यह आर्टिकल तैयार किया हूं। असल में यह बात शुरू हुई है पीएम की अपील से हुई, उन्होंने 28 जनवरी 2025 को देहरादून में 38वें राष्ट्रीय खेलों के उद्घाटन समारोह में फिट इंडिया मूवमेंट की बात करते हुए नागरिकों से अपील की थी कि वे तेल की खपत में 10 पेर्सेंट की कमी करें और स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं। उन्होंने अपने कार्यक्रम 'मन की बात' में भी यह संदेश दिया था कि भारत को 'स्वस्थ भारत' बनाना है और यह बदलाव आम लोगों की आदतों से ही आएगा। फिर ग्लोबल बर्डन आफ डिजीज (जीबीडी) रिपोर्ट 2025 में भी बताया गया कि भारत में 2021 में 18 करोड़ वयस्क मोटापे के शिकार थे जो यह आंकड़ा 2050 में बढ़कर 44.9 करोड़ तक पहुंच सकता है ? हालांकि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने जून 2025 में सभी स्कूलों/दफ्तरों/संस्थानों में खाने-पीने की लोकप्रिय चीजों जैसे पिज़्ज़ा बर्गर समोसा वडा पाव कचोरी इत्यादि में मौजूद तेल में चीनी की मात्रा दिखाने वाले बोर्ड लगाने का प्रस्ताव/निर्देश दिया था। फिर 14 मई 2025 को शिक्षा मंत्रालय ने सीबीएसई स्कूलों में शुगर बोर्ड लगाने का निर्देश दिया था अब यह उसको विस्तारित कर तेल बोर्ड लगाने का निर्देश 2 दिन पूर्व ही दिया है। यानी कुल मिलाकर यह पूरी कवायत खाद्य पदार्थों में,चीनी तेल की मात्रा को रेखांकित कर उसका विकल्प चुनकर खाने व अपनीं जीवनशैली से जुड़ी तेजी से बढ़ती हुई बीमारियों व मोटापे को नियंत्रण में रखना व निपटने का एक सुझाव मात्र है, नाकि कोई जोर जबरदस्ती है, यदि इस सुझाव को पढ़ने वाला उसे नहीं मानता तो, उसकी मर्जी है। बस! यही इस मुद्दे का सार है। परंतु इसे मीडिया के माध्यम से विवादित बनाया जा रहा है,ऐसा मेरा मानना है। चूँकि भारत में जीवनशैली से जुड़ी तेजी से बढ़ती बीमारियों व मोटापे से निपटने के लिए केंद्र सरकार की नई पहल आई है,इसके निर्देश जारी कर दिए गए हैं, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से,इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, सरकार का निशाना, समोसा जलेबी कचोरी नहीं बल्कि खाद्य पदार्थों में छिपे,अतिरिक्त चीनी व तेल केहानिकारक सेवन के विकल्प से जागरूक कराना है।

साथियों बात अगर हम तेल चीनी बोर्ड लगाने के केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के आदेश/निर्देश को समझनें की करें तो स्वास्थ्य मंत्रालय के मुख्य सचिव ने सभी विभागों को "तेल और चीनी बोर्ड" लगाने के आदेश जारी किए हैं। यह आदेश, स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने और मोटापे तथा गैर-संचारी रोगों से निपटने के लिए, देश भर के केंद्रीय संस्थानों में लागू किया जाएगा। इन "तेल और चीनी बोर्डों नाश्ते में मौजूद वसा और चीनी की मात्रा को दर्शाया जाएगा, जिससे लोगों को जंक फ़ूड के बारे में जानकारी मिल सके।उद्देश्य:-इस पहल का मुख्य उद्देश्य, लोगों को उनके दैनिक भोजन में मौजूद वसा और चीनी की मात्रा के बारे में जागरूक करना है, ताकि वे स्वस्थ जीवनशैली अपना सकें।कार्यान्वयन:-ये बोर्ड, स्कूलों, कार्यालयों, सार्वजनिक संस्थानों और कैंटीन में लगाए जाएंगे, ताकि लोगों को इन खाद्य पदार्थों के हानिकारक प्रभावों के बारे में जानकारी मिल सके।डिजिटल डिस्प्ले:-कुछ संस्थानों में, इन बोर्डों को डिजिटल रूप से प्रदर्शित किया जाएगा, ताकि अधिक से अधिक लोगों तक यह जानकारी पहुंच सके।अन्य उपाय:-इसके अतिरिक्त, मंत्रालय ने सभी मंत्रालयों और विभागों को आधिकारिक स्टेशनरी और प्रकाशनों पर स्वास्थ्य संदेश छापने का भी निर्देश दिया है, ताकि मोटापे से लड़ने के लिए दैनिक अनुस्मारक दिया जा सके।स्वस्थ भोजन को बढ़ावा:-मंत्रालय ने कार्यालयों में स्वस्थ भोजन विकल्पों को बढ़ावा देने और शारीरिक गतिविधि को प्रोत्साहित करने के लिए भी कदम उठाए हैं, जैसे कि सीढ़ियों का उपयोग करने और पैदल चलने के मार्गों की सुविधा प्रदान करना फिट इंडिया मूवमेंट:-यह पहल,फिट इंडिया मूवमेंट का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य नागरिकों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना है।

साथियों बात अगर हम केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारासभी मंत्रालयों को लिखे पत्र की करें तो, केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों और स्वायत्त निकायों को हाल ही में लिखे एक पत्र में कहा की, हम विभिन्न स्थानों पर स्वस्थ आहार संबंधी आदतों को बढ़ावा देने के लिए चीनी और तेल बोर्ड पहल का प्रदर्शन करने का प्रस्ताव दिए जा रहे हैं। ये बोर्ड स्कूलों, कार्यालयों, सार्वजनिक संस्थानों आदि में रोज़मर्रा के खाद्य पदार्थों में छिपे वसा और चीनी के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदर्शित करते हुए दृश्य व्यवहारिक संकेत के रूप में काम करेंगे। यह अभियान सबसे पहले नागपुर में शुरू किया जा रहा है, जहाँ अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) इस पहल के लिए पायलट प्रोजेक्ट के रूप में काम करेगा।स्वस्थ विकल्पों को प्रोत्साहित करते हुए,सरकारी विभागों से मोटापे से लड़ने के दैनिक अनुस्मारक को सुदृढ़ करने के लिए सभी आधिकारिक स्टेशनरी और प्रकाशनों पर स्वास्थ्य संदेश छापने का अनुरोध किया। अपने पत्र में, स्वास्थ्य सचिव ने द लैंसेट में प्रकाशित एक हालिया अध्ययन का हवाला दिया, जिसमें अनुमान लगाया गया था कि 2050 तक लगभग 45 करोड़ भारतीय अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त हो सकते हैं। इसका मतलब है कि सदी के मध्य तक, चीन के बाद, भारत में दुनिया में दूसरे सबसे अधिक अधिक वजन और मोटे लोग होने की संभावना है। नागपुर में अब लोकप्रिय फ़ूड स्टॉल्स के पास कैलोरी काउंट पोस्टर लगा होगा, जिसमें चीनी, वसा और ट्रांस-फ़ैट की मात्रा के बारे में स्पष्ट जानकारी होगी। इसमें बार-बार सेवन से होने वाले दीर्घकालिक स्वास्थ्य जोखिमों की रूपरेखा होगी। ये चेतावनियाँ प्रत्यक्ष और जागरूकता पैदा करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। इसका उद्देश्य संयम को बढ़ावा देना है, प्रतिबंध को नहीं। इस अभियान का इस साल के अंत में अन्य शहरों में विस्तार होने की उम्मीद है और हमें उम्मीद है कि यह कदम लोगों को अधिक सोच-समझकर भोजन चुनने के लिए प्रोत्साहित करेगा।समोसे, पकौड़े, चाय-बिस्कुट या जलेबी में कितना तेल, चीनी और ट्रांस फैट मौजूद है? इसकी जानकारी अब आपको मिलेगी। स्वास्थ्य मंत्रालय ने सभी सरकारी विभागों से अपने कैफेटेरिया, लॉबी और मीटिंग रूम में ऐसी जानकारी प्रदर्शित करने के निर्देश दिए है। यह जानकारी लोकप्रिय भारतीय स्नैक्स के स्वास्थ्य जोखिमों को उजागर करने के लिए है, खासकर ऐसे समय में जब देश भर में जीवनशैली से जुड़ी बीमारियाँ तेजी से बढ़ती जा रही हैं।

साथियों बात अगर हम वर्तमान खास परिवेश के संबंध में डब्लूएचओ के विचारों की करें तो, एक नए अध्ययन से पता चलता है कि भारत में मधुमेह का प्रमुख कारण अति-प्रसंस्कृत और फास्ट फूड का सेवन है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि वर्तमान खाद्य परिवेश, जिसमें बहुत से लोग रहते हैं, काम करते हैं और अपना दैनिक जीवन व्यतीत करते हैं, में अत्यधिक प्रसंस्कृत और आसानी से उपलब्ध खाद्य पदार्थ शामिल हैं जिनमें अस्वास्थ्यकर वसा, शर्करा और सोडियम की मात्रा अधिक होती है। इनमें से कई खाद्य पदार्थों का विपणन भी बहुत अधिक होता है और वे अपेक्षाकृत सस्ते भी होते हैं।परिणामस्वरूप, उपभोक्ताओं को अक्सर स्वस्थ भोजन से संबंधित निर्णय लेने में चुनौती का सामना करना पड़ता है। अस्वास्थ्यकर आहार अब वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिम में अग्रणी, मोटापा, मधुमेह, हृदय रोग, स्ट्रोक और कैंसर सहित गैर-संचारी रोगों में योगदान दे रहा है।

साथियों बात अगर हम सीबीएसई द्वारा अपने सभी स्कूलों में तेल बोर्ड लगाने के आदेश की करें तो, देश में बढ़ते मोटापे को देखते हुए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने एक बड़ा कदम उठाया है। मंगलवार को सीबीएसई के निदेशक ने सभी स्कूल प्रमुखों को पत्र लिखकर निर्देश दिया कि वे अपने स्कूलों में 'ऑयल बोर्ड' लगाएं और छात्रों के बीच स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा दें। यह कदम 14 मई 2025 को जारी 'शुगर बोर्ड' से संबंधित सर्कुलर का ही विस्तार है।

अतः अगर हम उपरोक्त पर्यावरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि -सरकार का निशाना, समोसा जलेबी कचोरी नहीं बल्कि खाद्य पदार्थों में छिपे,अतिरिक्त चीनी व तेल केहानिकारक सेवन के विकल्प से जागरूक कराना है,सभी मंत्रालयों, विभागों, स्वायतः संस्थानों को निर्देश जारी-समोसा कचोरी फ्रेंच फ्राइज इत्यादि में कितना तेल व शुगर है, बोर्ड लगाकर दर्शाएं,भारत में जीवनशैली से जुड़ी तेजी से बढ़ती बीमारियों व मोटापे से निपटने के लिए केंद्र सरकार की नई पहल- दिशानिर्देश जारी।

फोगला आश्रम में 19 दिवसीय झूलन महोत्सव 22 जुलाई से

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रमणरेती क्षेत्र स्थित श्रीजी सदन (फोगला आश्रम) में श्रीभगवान भजनाश्रम एवं वृन्दावन रासलीला संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में 43वां 19 दिवसीय झूलन महोत्सव 22 जुलाई से 09 अगस्त 2025 पर्यन्त अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है। महोत्सव के समन्वयक डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि महोत्सव के अंतर्गत प्रख्यात रासाचार्य स्वामी डॉ. देवकीनंदन शर्मा के कुशल निर्देशन में भव्य रासलीला एवं भक्त चरित्रों का अत्यंत नयनाभिराम व चित्ताकर्षक मंचन किया जाएगा। श्रीभगवान भजनाश्रम के अध्यक्ष चांदबिहारी पाटोदिया, मंत्री राजकुमार पोद्दार एवं कोषाध्यक्ष बिहारीलाल सर्राफ आदि ने समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं से इस महोत्सव में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

कानपुर में प्लंबर की हत्या की वजह महिला, पुरानी रंजिश या फिर कुछ और ? जारी 6 से पूछ ताछ

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां घाटमपुर के पतारा में हुए प्लंबर हत्याकांड में पुलिस आधा दर्जन लोगों को हिरासत लेकर पूछताछ कर रही है लेकिन अभी तक घटना की सही वजह पता नहीं चल पाई है फिर भी व्यक्त की जा रही आशंका से हत्या की वजह महिला पुरानी रंजिश या फिर कुछ और जैसे सवाल भी उठ रहे हैं जिनके जवाब कीजिए पुलिस आधा दर्जन लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ भी कर रही है।

पुलिस के मुताबिक 24 घंटे से लापता प्लंबर का शव बुधवार देर शाम खेत में पड़ा मिला था। उसकी हत्या गला घोंटकर की गई थी। मौके पर पहुंची पुलिस और फोरेंसिक टीम ने साक्ष्य जुटाए है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। देर रात पुलिस ने आधा दर्जन संदिग्धों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरु की है। जो कि आज गुरुवार को भी जारी है।

घटना के बारे में प्राप्त विवरण के मुताबिक घाटमपुर थाना क्षेत्र के बरनाव मोड़ निवासी 45 वर्षीय राकेश कुरील पुत्र शिवराज प्लंबर का काम करके अपने परिवार का भरण पोषण करते थे। मंगलवार सुबह वह रोज की तरह घर से ड्यूटी जाने को कहकर निकले थे। शाम को वह वापस घर नहीं लौटे तो पत्नी ने उन्हें फोन मिलाया तो उन्होंने बताया कि वह थोड़ी देर में घर आ जाएंगे। इसके बाद से मोबाइल फोन बंद बताने लगा।

मौके पर पहुंची पुलिस ने बताया कि ग्रामीणों ने खेत में युवक का शव पड़ा देखा। उसका गला गमछे के सहारे कसा हुआ था। परिजनों ने फोनकर पुलिस को घटना की सूचना दी। इसके बाद एडीसीपी साउथ योगेश कुमार, घाटमपुर एसीपी कृष्णकांत यादव ने घटनास्थल पर जांच पड़ताल की थी।

फिलहाल पुलिस आधा दर्जन संदिग्धों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक घटना की वजह पुरानी रंजिश और किसी से अवैध संबंध भी हो सकते हैं। अलबत्ता पुलिस का दावा है कि घटना का खुलासा जल्द ही किया जाएगा।जिसके लिए हर संभव प्रयास भी लगातार किए जा रहे हैं।

राजेश खन्ना : फिल्मी दुनिया का बेताज बादशाह, अपनों का सदाबहार 'काका'

प्रदीप कुमार वर्मा

रुपहले पर्दे का एक सुपरस्टार , एक बेहतरीन फिल्म निर्माता, एक दमदार एवं लोकप्रिय राजनेता और एक सदाबहार जिंदा दिल इंसान। वैसे तो राजेश खन्ना ताउम्र किसी पहचान के मोहताज नहीं रहे लेकिन रस्म-ए- दस्तूर है कि आज उनकी पुण्यतिथि है और फिल्म जगत सहित पूरी दुनिया उनको याद कर रही है। आज ही के दिन 18 जुलाई 2012 को मुंबई में एक लंबी बीमारी के बाद उनका निधन हो गया। हालांकि फिल्मी रंगमंच पर तब से अब तक कई सितारे आए और गए लेकिन ₹काका₹ की जगह कोई नहीं ले सका। राजेश खन्ना ने छोटे नाटकों और रंगमंच से अपने अभिनय की शुरुआत की और फिल्मी दुनिया में शोहरत का नया मुकाम हासिल किया। उन्होंने कई फिल्में भी बनाई और इसके साथ ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता के रूप में राजनीति में भी हाथ आजमाया।

राजेश खन्ना वर्ष 1991 से 1996 के बीच नई दिल्ली संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस के सांसद रहे। लेकिन राजनीति राजेश खन्ना को रास नहीं आई और इसके बाद उन्होंने राजनीति से संन्यास ले लिया। काका उर्फ जतिन खन्ना उर्फ राजेश खन्ना का जन्म तत्कालीन ब्रिटिश भारत में 29 दिसंबर 1942 में पंजाब प्रांत के अमृतसर में हुआ। स्कूली दिनों से ही राजेश खन्ना का झुकाव अभिनय की ओर था। इसलिए उन्होंने अपने करियर की शुरुआत थियेटर से की और फिर बॉलावुड पर कई सालों तक राज किया। भले ही राजेश खन्ना को उनके फैंस ₹काका₹ के नाम से पुकारना पसंद करते हैं। लेकिन राजेश खन्ना का पहला नाम जतिन खन्ना था। उनके चाचा ने उनका नाम जतिन से बदलकर राजेश कर दिया। इस नाम ने न केवल उन्हें शोहरत दी, बल्कि यह नाम हर युवक और युवती के जेहन में अमर हो गया।

प्रख्यात फिल्म अभिनेता राजेश खन्ना ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत चेतन आंनद की फिल्म 'आखिरी खत' से की थी। इसके बाद साल 1969 में आई शक्ति सामंत की फिल्म 'अराधना' से राजेश खन्ना एक सफल एक्टर के रूप में बॉलीवुड में स्थापित हो गए। फिल्म 'आराधना' के बाद राजेश खन्ना बॉलीवुड में रोमांटिक एक्टर के रूप में फेमस हो गए। आराधना के बाद हिन्दी फ़िल्मों के पहले सुपरस्टार का खिताब अपने नाम किया। उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और लगातार 17 सोलो सुपरहिट फ़िल्में दीं। इनमें आराधना, इत्त्फ़ाक़, दो रास्ते, बंधन, डोली, सफ़र, खामोशी, कटी पतंग, आन मिलो सजना, ट्रैन, आनन्द, सच्चा झूठा, दुश्मन, महबूब की मेंहदी तथा हाथी मेरे साथी शामिल है। वह एक ऐसा जमाना था जब किसी फिल्म में राजेश खन्ना की मौजूदगी को उसे फिल्म के सुपरहिट होने का पैमाना माना जाता था।

करीब 50 साल के करियर में राजेश खन्ना उर्फ जतिन खन्ना और काका को फिल्म फेयर सहित कई पुरस्कार मिले। जिनमे वर्ष 2013 में मिला प्रतिष्ठित पद्म भूषण पुरस्कार भी शामिल है। अपने फ़िल्मी करियर में उन्होंने 180 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया और तीन बार फिल्मफेयर पुरस्कार जीते। राजेश खन्ना को फ़िल्मफेयर पुरस्कार के लिये चौदह बार तथा बंगाल फ़िल्म जर्नलिस्ट अवार्ड के लिये पच्चीस बार नामांकित किया गया। दोनों पुरस्कारों के लिये कुल उन्तालिस बार के नामांकन में उन्हें तीन बार फ़िल्मफेयर पुरस्कार एवं चार बार बंगाल फ़िल्म जर्नलिस्ट अवार्ड मिला। राजेश खन्ना को दस बार ऑल इंडिया क्रिटिक्स पुरस्कार के लिये नामांकित किया गया और उन्हें सात बार अवार्ड मिला।

राजेश खन्ना सुपरस्टार तो थे ही, उनके अफेयर भी उनकी तरह ही काफी सुपर रहे। सबसे पहले 70 के दशक में अंजू महेंद्रू के साथ काका का अफेयर चला। इसके बाद फिर 1973 में उन्होंने अपने से 15 साल छोटी डिंपल कपाड़िया से शादी कर ली। डिंपल और राजेश खन्ना का रिश्ता बड़ा ही अनयूजुअल-सा था। बेमेल उम्र, बेमेल करियर ग्राफ, लेकिन पक्की जोड़ी। इन दोनों के बारे में कहा जाता है कि बेशक, ये दोनों अलग-अलग रहे लेकिन कभी एक-दूसरे को तलाक नहीं दिया। राजेश खन्ना आखिरी वक्त में बुरी तरह बीमार पड़ गए थे। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक वे कैंसर से जूझ रहे थे। उन्हें अपनी मौत के डेढ़ साल पहले ही पता चला था कि वे इस जानलेवा बीमारी के शिकार हो चुके हैं। मौत के 20 दिन पहले उन्होंने फैमिली को कहा था कि 'मैं जानता हूं, दवाइयां अपना काम नहीं कर रही हैं, लगता है मेरा टाइम आ गया है'।

कैंसर जैसी घातक बीमारी के चलते 18 जुलाई 2012 में उनका देहांत हो गया। फिल्मी दुनिया और अपने लोगों के बीच ₹काका₹ कहकर पुकारे जाने वाले सुपरस्टार राजेश खन्ना ने 69 साल की उम्र में दुनिया और इंडस्ट्री दोनों को अलविदा कह दिया। राजेश खन्ना ने फिल्म ₹आनंद₹ में अपने शानदार अभिनय के जरिए न केवल लोगों के दिलों पर राज किया, बल्कि उनके द्वारा जीवन की नश्वरता के संबंध में बोले गए संवाद ₹ बाबुमोशाय जिंदगी बड़ी होनी चाहिए लंबी नहीं..₹। एक और डायलॉग ₹ बाबुमोशाय, जिंदगी और मौत ऊपर वाले के हाथ है... उससे ना तो आप बदल सकते है ना मैं... हम सब तो रंगमंच की कठपुतलियां है,जिनकी जोर उपरवाले की उंगलियों में बंधी है। कब कौन कैसे उठेगा... यह कोई नहीं बता सकता।₹ यही वजह है कि उनकी कमी इंडस्ट्री और फैन्स को हमेशा खलती रहेगी।

बदायुं। गांव के मुख्य मार्ग पर अवैध तरीके से घूरा डालने को लेकर ग्रामीणों में भारी आक्रोश बरसात के बाद राहगीरों का निकलना हुआ दुश्वार ,प्रधान सचिव व जिम्मेदार विभाग ने किया मोहन धारण

मुख्य मार्ग से घूर हटाने को लेकर ग्रामीणों का विरोध प्रदर्शन प्रशासन से की घूरा हटवाने की मांग

मुख्य मार्ग पर गंदगी होने की वजह से राहगीर वह स्कूली बच्चों को निकलने में हो रही भारी मुसीबत , संक्रामक बीमारियों के फैलने का बड़ा खतरा

भारत सरकार के संपूर्ण स्वच्छता अभियान मिशन को पलीता लगाते हुए लोग संबंधित विभाग एवं जिम्मेदार आखिर मौन क्यों पूरा मामला विकासखंड बिसौली के ग्राम पंचायत मिठामई गांव का बताया जा रहा है।

कांवड़ यात्रा अब धार्मिक नहीं, बल्कि योजनाबद्ध राजनीतिक कार्यक्रम बन गयी है

(आलेख : महेंद्र मिश्र)

कांवड़िये किस तरह से सड़कों पर उपद्रव कर रहे हैं वह चर्चा-ए-आम है। आए दिन मारपीट और हिंसा की घटनाएं सोशल मीडिया पर वायरल हैं। कहीं कांवड़ियों का कोई जत्था ढाबा तोड़ रहा है, तो कहीं कोई दुकान उनके निशाने पर है। कहीं किसी की कार तोड़ी जा रही है, तो कहीं हुड़दंगियों का यह गिरोह सरकारी बस पर ही टूट पड़ा है। आप रोजाना इन दृश्यों से दो-चार हो रहे होंगे। उसके बावजूद न तो उनके ऊपर कोई लाठीचार्ज हो रहा है और न ही कोई पुलिसिया कार्रवाई। उल्टे जगह-जगह पुलिस के अफसरान फूल-मालाओं के साथ उनका स्वागत ज़रूर करते देखे जा रहे हैं। और बहुत हुआ, तो नाराज कांवड़ियों को समझा-बुझा कर मनाने की कोशिश भर हो रही है। इससे ज्यादा पुलिस-प्रशासन की कहीं भूमिका नजर नहीं आ रही है। हरिद्वार के रास्ते की पूरी सड़क को भगवा भेष धारण किए इन गुंडों के हवाले कर दिया गया है।

सड़क के मुसाफिरों को खुद अपनी इज्जत बचाते हुए चलने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। कहीं अगर किसी कार चालक की गाड़ी कांवड़ से छू भर गयी, तो पीट-पीट कर उसका दोना बनना तय है। राह चलते यात्री के भूल से भी उलझने का मतलब है उसका लहूलुहान होना। अब इन परिस्थितियों में भला सरकार का रवैया क्या होना चाहिए? इन सारी घटनाओं को होते इतने दिन हो गए, क्या आप ने सूबे के मुख्यमंत्री का कोई बयान सुना है? क्या कोई बड़ा अफसर या फिर नौकरशाह किसी तरह का कोई निर्देश देता दिखा है? सूबे का कोई मंत्री-संत्री या फिर प्रभारी इन घटनाओं पर एतराज जताया है?

खुलेआम कानून और व्यवस्था की इस तरह से धज्जियां उड़ाई जा रही हैं, लेकिन इसके खिलाफ कहीं चूं तक नहीं है? चलिए एकबारगी अगर राज्य सरकार फेल कर रही है और वह अपनी जिम्मेदारी निभाने में नाकाम साबित हो रही है, तो फिर केंद्र क्या कर रहा है? या फिर वह भी अपनी जिम्मेदारी भूल गया है? हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कोई सूबा कानून-व्यवस्था से जुड़े किसी मसले पर नाकाम रहता है, तो उसका काम है नोटिस भेजकर उससे जवाब मांगना। लेकिन क्या आपने केंद्र की तरफ से इस तरह की कोई पहल देखी है? कहा तो यहां तक जाता है कि गृहमंत्री अमित शाह और यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बीच छत्तीस का रिश्ता है और दोनों एक दूसरे को फूटी आंख नहीं देखना चाहते हैं।

फिर तो अमित शाह के लिए योगी को घेरने का यह अच्छा मौका है। फिर भला वह क्यों नहीं पहल कर रहे हैं और नोटिस भेजकर आदित्यनाथ को नीचा दिखा दे रहे हैं। दरअसल इस मसले पर बीजेपी और उसकी सरकार के बीच ऊपर से लेकर नीचे तक एक तरह की आम सहमति है। और वो कतई इसको गलत नहीं मानते हैं। और अपने तरीके से इन घटनाओं को प्रश्रय देने का काम करते हैं।

अगर इसके पीछे की राजनीति और मकसद को आप नहीं समझ रहे हैं या तो आप बेहद भोले हैं या फिर बीजेपी और आरएसएस के गेम-प्लान से बिल्कुल नावाकिफ। दरअसल बीजेपी-संघ का एकमात्र उद्देश्य पूरे देश को धर्म की चासनी में डुबो देना है। और इस लिहाज से उनके लिए यह सबसे बेहतरीन मौका होता है। धर्म का नशा लोगों के सिर चढ़ कर बोले, बीजेपी और आरएसएस की यह सुबह से लेकर शाम तक कोशिश रहती है। लेकिन कांवड़ियों की इस खास जमात के जरिये बीजेपी कुछ ठोस चीजें हासिल करना चाहती है। उनको समझना हमारे लिए बेहद अहम होगा।

सर्वप्रमुख बात यह है कि वो इसके जरिये देश में हिंदुओं के वर्चस्व के स्थापित होने का संदेश देना चाहते हैं। दूसरे अर्थों में कहा जाए तो वह यह कहना चाहती है कि हिंदू धर्म और उसके भगवाधारी कानून-व्यवस्था से भी ऊपर हैं। किसी तरह के उल्लंघन पर उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हो सकती है। इस तरह से समाज में हिंदू धर्म के अनुयायियों की एक प्रिविलेज्ड पोजीशन बनाने और

फिर उसे दिखाने की कोशिश है। जबकि दूसरे धर्म चाहे वो मुस्लिम हों या कि ईसाई और यहां तक जैन और बौद्ध, उनका स्थान दोयम ही रहेगा।

मुसलमानों को तो सड़क पर 15 मिनट के लिए नमाज भी पढ़ने की इस देश में इजाजत नहीं है। किस तरह से गुड़गांव से लेकर देश के अलग-अलग हिस्सों में इस पर एतराज जताया जाता रहा है, वह किसी से छिपा नहीं है। ईसाइयों के लिए तो इस तरह से सोचना भी गुनाह है। अभी आपने मुंबई में जैन धर्म के अनुयायियों के जुलूस पर बरसने वाली पुलिस की लाठियों का दृश्य देखा ही होगा। और बौद्धों के मक्का गया को तो उसके अनुयायियों के लिए बचाना भी मुश्किल हो रहा है। उस पर हिंदू धर्म के पंडे कब्जे के लिए आतुर हैं। इस तरह से इन कांवड़ियों के जरिये एक बात का खुला संदेश दिया जा रहा है कि सबसे पहले यह देश हिंदुओं का है। और बाकी का नंबर उसके बाद आता है। और इन्हीं रास्तों से आरएसएस-बीजेपी अपने हिंदू राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ा रहे हैं।

इसके जरिये एक दूसरा संदेश जो दिया जा रहा है, वह इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। वह है देश से लोकतंत्र और उसकी संस्थाओं का खात्मा। जिस तरह से पूरी राज्य मशीनरी इन गुंडों के सामने नतमस्तक है, उससे क्या वह अपनी पुरानी साख को बनाए रख पाने में सक्षम होगी? कहा जाता है कि शासन इकबाल से चलता है। पुलिस-प्रशासन अगर वही खो देगा, तो शासन चलाने के लिए उसके पास बचेगा क्या? दरअसल आरएसएस का एकमात्र मकसद देश से लोकतंत्र का खात्मा है। उसकी जगह वह उसी पुरानी वर्ण व्यवस्था का पक्षधर है, जिसमें तमाम जातीय श्रेणियां हैं और कथित बड़ी जातियों का कथित छोटी जातियों पर वर्चस्व है। लिहाजा इस लोकतंत्र को खत्म करने के लिए भी उसने एक प्रक्रिया अपनायी है।

चूंकि लोकतंत्र संस्थाओं के सहारे चलता है, इसलिए उसकी पहली कोशिश इन संस्थाओं को खत्म करने की है। इन उपद्रवियों के सामने पुलिस प्रशासन का समर्पण उसी का एक हिस्सा है। वैसे भी हम जानते हैं कि मनुवादी वर्णव्यवस्था को फिर से खड़ा करने की पहली शर्त है मौजूदा व्यवस्था का खात्मा। आरएसएस-बीजेपी उसी काम को कर रहे हैं। यह अनायास नहीं है कि राजस्थान के एक विधायक थाने में घुसकर थानाध्यक्ष की कुर्सी पर बैठ जाते हैं और थानाध्यक्ष समेत तमाम पुलिसकर्मियों को अपने ही थाने में उनके सामने बैठने के लिए मजबूर होना पड़ता है। यह मौजूदा व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने की कोशिश का हिस्सा है।

यह उनके लिए अपने तरीके से कैडर भर्ती का मौका भी है। जिसमें न केवल उन्हें सहज और सरल तरीके से प्रशिक्षण मिल जा रहा है, जो बल्कि इसके जरिये उनके भीतर के तमाम दूसरे तत्वों को धर्म के जरिये प्रतिस्थापित करने का मौका भी मिल रहा है। इसका असर यह होगा कि जल चढ़ाकर लौटे शख्स के किसी और से ज्यादा बीजेपी-आरएसएस का कैडर बनने की संभावना है। इससे भी ज्यादा उन युवाओं को अपनी भड़ास निकाल देने का मौका साबित हो रहा है, जो न केवल बेरोजगार और कुंठित हैं, बल्कि हर तरीके से दयनीय स्थितियों में रहने के लिए मजबूर हैं। कांवड़ यात्रा उनके लिए सेफ्टीवाल्व का काम कर रही है। नतीजतन यह जल जितना शंकर के पिंड पर नहीं पड़ रहा है, उससे ज्यादा युवकों की खोपड़ी ठंडा करता दिख रहा है।

कहा जाता है कि इन कांवड़ यात्राओं में ज्यादातर दलित और पिछड़े समुदाय के युवा शामिल होते हैं। वैसे भी शंकर के भक्त ज्यादातर इसी तबके से आते हैं। लिहाजा संख्या में उनके ज्यादा रहने की संभावना हमेशा बनी रहती है। बीजेपी-आरएसएस के लिए यह पिछड़े और दलितों के बीच अपनी पैठ बनाने का सबसे बेहतरीन मौका साबित होता है। और वह भी किसी जातीय और सामाजिक मुद्दे पर नहीं, बल्कि खुद अपने सर्व प्रिय धार्मिक एजेंडे पर। इस कड़ी में दलित-पिछड़े समुदाय उन बच्चों को, जो दूसरी सामाजिक न्याय की पार्टियों के प्रभाव में होते हैं, उनसे तोड़ने का मौका मिल जाता है।

वर्ण व्यवस्था के निचले पायदान पर होने के चलते इस हिस्से में पैदा हुई कुंठा को भी निकलने देने का यह बेहतर मौका साबित होता है। इस धार्मिक कार्यक्रम के जरिये वो कुछ दिनों के लिए ही सही, खुद को सबके बराबर खड़े देखते हैं। बराबर ही नहीं, बल्कि हर तरह से ऊपर दिखते हैं। यहां तक कि इस दौरान सत्ता भी उनके सामने नतमस्तक होती है। हर लिहाज से उनका सीना फूला रहता है। कुल मिलाकर दलित-पिछड़े तबकों के खिलाफ एफआईआर दर्ज हो गयी है। इस देश में अब विज्ञान और तर्क की बात करना भी गुनाह हो गया है। अंधविश्वास के खिलाफ आवाज उठाना सबसे बड़ा अपराध है।

जबकि नागरिक होने की जरूरी शर्त होती है कि वह शख्स विज्ञान में विश्वास करता हो, तार्किक हो और बराबरी और भाईचारे में यकीन करता हो। लेकिन बीजेपी-आरएसएस की डिक्शनरी में ये न केवल उपेक्षित शब्द हैं, बल्कि इनको घृणा की नजर से देखा जाता है। यह अनायास नहीं है कि पूरा संघ और बीजेपी मिलकर संविधान की प्रस्तावना से सेकुलरिज्म और समाजवाद शब्द को निकालने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा दिए हैं। अंततः इनका लक्ष्य नागरिकता बोध खत्म करके देश को एक भीड़ में तब्दील कर देना है, जो कहने के लिए हिंदुओं का होगा, लेकिन हकीकत में जाहिलियत उसकी सर्वप्रमुख और सर्वोच्च पहचान होगी।

टाटा ने सभी एसयूवी को लगाया पंच! चार साल में रच दिया नया इतिहास, बाकी सब रह गईं पीछे

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Tata Motors की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से भारतीय बाजार में ऑफर की जाने वाली सबसे सस्ती एसयूवी Tata Punch ने नया कीर्तिमान बनाया है। टाटा की इस एसयूवी ने किस तरह के रिकॉर्ड को बनाया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में एसयूवी सेगमेंट के वाहनों की सबसे ज्यादा मांग रहती है। इसी को देखते हुए निर्माताओं की ओर से कई तरह की एसयूवी को बाजार में ऑफर किया जाता है। देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Tata Motors की ओर से भी माइक्रो एसयूवी के तौर पर Tata Punch की बिक्री की जाती है। हाल में ही इस एसयूवी किस तरह के नए रिकॉर्ड को बनाया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Tata Punch ने बनाया नया रिकॉर्ड

टाटा मोटर्स की ओर से माइक्रो एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Tata Punch को काफी पसंद किया जाता है। लॉन्च के बाद से अब तक इस एसयूवी ने कई रिकॉर्ड बनाए हैं। हाल में ही निर्माता की ओर से जानकारी दी गई है कि एसयूवी ने एक और कीर्तिमान को हासिल कर लिया है।

हासिल हुआ यह कीर्तिमान

निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक टाटा पंच ने चार साल में छह लाख यूनिट्स के उत्पादन का नया कीर्तिमान हासिल किया है। इस एसयूवी को भारतीय बाजार में अक्टूबर 2021 में लॉन्च किया गया था। 2024 में यह एसयूवी सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली एसयूवी रही है।

अधिकारियों ने कही यह बात

टाटा मोटर्स के पैसेंजर इलेक्ट्रिक व्हीकल सेगमेंट के चीफ कमर्शियल ऑफिसर विवेक श्री वत्स ने कहा कि च नए भारत की उस भावना का प्रतीक है जो आत्मनिर्भर है, बेझिझक है और अपना रास्ता खुद तय करना जानता है। 6 लाख उत्पादन का आंकड़ा पार करना सिर्फ एक निर्माण उपलब्धि नहीं, बल्कि उन 6 लाख से अधिक भारतीयों के भरोसे की पुष्टि है, जिन्होंने पंच को चुना — एक ऐसी कार जो आत्मविश्वास, मौजूदगी और नई शुरुआत का प्रतीक बन चुकी है।

कैसे हैं फीचर्स

टाटा की इस एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें एलईडी डीआरएल, प्रोजेक्टर हेडलाइट, शॉर्क फिन एंटीना, 90 डिग्री तक खुलने वाले दरवाजे, 16 इंच अलॉय व्हील्स, सिंगल पेन सनरूफ, ड्यूल टोन डैशबोर्ड, ऑटो एसी, रियर एसी वेंट, रियर वाइपर और वॉशर, कूल्ड ग्लोव बॉक्स, क्रूज कंट्रोल, ईको और सिटी ड्राइव मोड्स, 26.03 सेमी इंफोटेनमेंट सिस्टम, एंड्राइड ऑटो, एपल कार प्ले, वायरलेस चार्जर, चार इंच इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर जैसे फीचर्स मिलते हैं।

कितनी है सुरक्षित

टाटा पंच में सेफ्टी फीचर्स के तौर पर एबीएस, ईबीडी, ऑल डिस्क ब्रेक, सीएससी, ड्यूल एयरबैग, इलेक्ट्रॉनिक ब्रेक, ईपीबी, ऑटो होल्ड, ईएसपी, इमोबिलाइजर, स्पीड अलर्ट, रियर पार्किंग सेंसर, सीट बेल्ट रिमाइंडर, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज जैसे सेफ्टी फीचर्स मिलते हैं।

कितनी है कीमत

टाटा पंच की एक्स शोरूम कीमत लाख रुपये से शुरू हो जाती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 10.31 लाख रुपये है।

लोहिया ने योद्धा इलेक्ट्रिक ऑटो किया लॉन्च, एक बार चार्ज के बाद मिलेगी 227 किलोमीटर की रेंज, जानें कितनी है कीमत

भारतीय बाजार में कमर्शियल वाहन सेगमेंट में भी इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग बढ़ रही है। जिसे देखते हुए Lohia Auto की ओर से Youdha नाम से नए इलेक्ट्रिक ऑटो को लॉन्च कर दिया गया है। इसमें किस तरह के फीचर्स और रेंज को दिया गया है। किस कीमत पर इलेक्ट्रिक ऑटो को लॉन्च किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में जिस तरह से प्रदूषण को कम करने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग में बढ़ोतरी हो रही है। उसे देखते हुए कई निर्माताओं की ओर से नए वाहनों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। लोहिया ऑटो की ओर से Youdha नाम से नए इलेक्ट्रिक ऑटो को लॉन्च (Lohia Youdha launch) कर दिया गया है। निर्माता ने इसमे किस तरह के फीचर्स और रेंज को दिया है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Lohia ने लॉन्च किया Youdha इलेक्ट्रिक ऑटो

लोहिया ऑटो की ओर से भारतीय बाजार में नए कमर्शियल वाहन सेगमेंट में Youdha नाम से नए इलेक्ट्रिक ऑटो को लॉन्च (electric auto rickshaw) कर दिया है। निर्माता की ओर से इसमें सुरक्षा के साथ ही रेंज का भी ध्यान रखा गया है।

कितनी है रेंज

Lohia Youdha इलेक्ट्रिक ऑटो में निर्माता की ओर से 11.8 kWh की क्षमता की एलएफपी बैटरी को दिया गया है। इस बैटरी को एक बार फुल चार्ज करने के बाद 227 किलोमीटर (EV auto range India) तक चलाया जा सकता है। इसमें लगी मोटर से ऑटो को छह किलोवाट की पावर और 55 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है।

इसकी बैटरी को चार्ज होने में चार से पांच घंटे का समय लगता है। इसके साथ ही इसकी टॉप स्पीड 40 किलोमीटर प्रति घंटा तक है। इसमें ड्राइवर के अलावा तीन यात्री के साथ सफर किया जा सकता है।

कैसे हैं फीचर्स

निर्माता की ओर से इस इलेक्ट्रिक ऑटो को कई बेहतरीन फीचर्स के साथ ऑफर किया गया है। इसमें सात इंच का डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, 12 इंच पहिए, रीजनरेटिव ब्रेकिंग, हाइड्रोलिक ब्रेक को दिया गया है।

कितनी है कीमत

Lohia Youdha इलेक्ट्रिक ऑटो को भारतीय बाजार में 2.79 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है। इस ऑटो के साथ निर्माता की ओर से पांच साल या 1.30 लाख किलोमीटर की वारंटी को दिया जा रहा है।

कहां होगा उपलब्ध

निर्माता की ओर से इलेक्ट्रिक ऑटो को सबसे पहले उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, असम जैसे राज्यों में सबसे पहले बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाएगा।

रेंज रोवर वेलर ऑटोबायोग्राफी को भारत में किया गया लॉन्च, पेट्रोल के साथ मिलेगा डीजल इंजन का विकल्प

परिवहन विशेष न्यूज

लग्जरी एसयूवी निर्माता रेंज रोवर की ओर से 17 जुलाई 2025 को भारतीय बाजार में नई एसयूवी के तौर पर रेंज रोवर वेलार की ऑटोबायोग्राफी को लॉन्च कर दिया है। भारत में ऑफर की गई एसयूवी में किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितना दमदार इंजन दिया गया है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। लग्जरी एसयूवी सेगमेंट में रेंज रोवर की ओर से भारतीय बाजार में कई उत्पादों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से 17 जुलाई को भारतीय बाजार में नई एसयूवी के तौर पर Range Rover Velar Autobiography को लॉन्च कर दिया है। निर्माता की ओर से इस एसयूवी में किस तरह के फीचर्स को दिया गया है। कितने इंजन के विकल्प दिए गए हैं। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुई Range Rover Velar Autobiography

भारतीय बाजार में रेंज रोवर की ओर से वेलार ऑटोबायोग्राफी को लॉन्च कर दिया गया है। निर्माता की ओर से इसमें कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है। इसके साथ ही इंजन के भी दो विकल्प दिए गए हैं।

कैसे हैं फीचर्स

Range Rover Velar Autobiography में निर्माता की ओर से श्री डी सराउंड साउंड सिस्टम, सिग्नेचर फ्लोटिंग रूफ, फ्लश डोर हैंडल, पिक्सल एलईडी लाइट्स, एलईडी डीआरएल, पैनोरमिक रूफ, 20 इंच सेटिन डार्क ग्रे अलॉय व्हील्स, 20वे मसाज फ्रंट सीट, पावर रिक्लाइन सीट्स, एंबिएंट लाइट्स, फोर जोन क्लाइमेट कंट्रोल, केबिन एयर प्यूरीफायर, श्रीडी सराउंड कैमरा, इलेक्ट्रॉनिक एयर सस्पेंशन, वेड सेंसिंग, एडेप्टिव डायनेमिक्स जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

कितना दमदार इंजन

निर्माता की ओर से इसमें पेट्रोल और डीजल इंजन के विकल्प को दिया गया है। इसमें दिए गए पेट्रोल इंजन से एसयूवी को 183.9 किलोवाट की पावर और 365 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसके D200 डीजल इंजन से एसयूवी को 150 किलोवाट की पावर और 430 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है।

कितनी है कीमत

रेंज रोवर वेलार ऑटोबायोग्राफी को भारतीय बाजार में 84.90 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 89.90 लाख रुपये है।

टाटा मोटर्स ने अपनी इन दो इलेक्ट्रिक कारों पर दे रही लाइफटाइम बैटरी वारंटी, कई बेहतरीन फीचर्स से है लैस

टाटा मोटर्स ने Nexon EV और Curvv EV के लिए लाइफटाइम हाई-वोल्टेज बैटरी वारंटी की घोषणा की है जिससे ग्राहकों को बैटरी की चिंता से मुक्ति मिलेगी। यह सुविधा नए और मौजूदा दोनों ग्राहकों के लिए उपलब्ध है। कंपनी इलेक्ट्रिक एसयूवी की बिक्री को बढ़ावा देने के लिए मौजूदा ग्राहकों को 50000 रुपये तक का लॉयल्टी बोनस भी दे रही है।

नई दिल्ली। भारत की सबसे बड़ी इलेक्ट्रिक कार निर्माता कंपनी में से एक टाटा मोटर्स अपने ग्राहकों के लिए एक शानदार तोहफा लेकर आई है। कंपनी अपनी पॉपुलर इलेक्ट्रिक एसयूवी Tata Nexon EV और Curvv EV के लिए लाइफलाइट हाई-वोल्टेज बैटरी वारंटी की घोषणा की है। यह सुविधा न केवल नए खरीदारों के लिए लेकर आया गया है बल्कि मौजूदा मालिकों को भी मिलेगा।

क्या है इस घोषणा में खास?

टाटा मोटर्स ने हाल ही में लॉन्च हुई हैरियर ईवी के साथ लाइफटाइम बैटरी वारंटी की शुरुआत की है। अब कंपनी ने इस सुविधा को छोटी इलेक्ट्रिक एसयूवी, कर्व ईवी और नेक्सन ईवी के 45 kWh बैटरी वेरिएंट्स तक के लिए बढ़ा दिया है। टाटा मोटर्स के इस घोषणा के बाद लोगों के अंदर से बैटरी खराब होने पर उसे बदलवाने के लिए लगने वाले खर्चे की चिंता खत्म हो जाएगी। इस लाइफटाइम बैटरी वारंटी के साथ, टाटा मोटर्स ने ग्राहकों को बैटरी स्वास्थ्य और संभावित महंगे रिप्लेसमेंट को लेकर एक बड़ी राहत दी है।

कंपनी का यह कदम मौजूदा ग्राहकों को भी लाभ देगा। लाइफटाइम बैटरी वारंटी मिलने से टाटा की इलेक्ट्रिक एसयूवी की रिसेल वैल्यू बेहतर होगी। अगर कोई ग्राहक भविष्य में अपनी EV बेचना चाहता है, तो उसे इसकी अच्छी कीमत मिल पाएगी।

इलेक्ट्रिक एसयूवी की बिक्री को और बढ़ावा देने के लिए, टाटा मोटर्स अपने मौजूदा इलेक्ट्रिक वाहन ग्राहकों को कर्व ईवी और नेक्सन ईवी (45 kWh वेरिएंट) की खरीद पर 50,000 रुपये तक का अतिरिक्त लॉयल्टी बोनस भी दे रही है।

टाटा मोटर्स का विजन

टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लिमिटेड के चीफ कमर्शियल ऑफिसर विवेक श्रीवत्स ने इस पहल पर टिप्पणी करते हुए कहा कि प्रीमियम ईवी तकनीक को सुलभ बनाकर, हमने भारत के ईवी सेगमेंट के जबरदस्त विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस विकास के पीछे एक प्रमुख कारक ग्राहकों में चिंता मुक्त स्वामित्व अनुभव के लिए विश्वास जगाना है। आज, हमें कर्व.ईवी और नेक्सन.ईवी 45 kWh के सभी ग्राहकों के लिए लाइफटाइम HV बैटरी वारंटी समाधान पेश करके इस भावना को और आगे बढ़ाने पर गर्व है।

Tata Nexon EV और Curvv EV की कीमत

Nexon EV के 45 kWh वेरिएंट की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 13.99 लाख रुपये है, जबकि Curvv EV 45 kWh वेरिएंट की शुरुआती एक्स कीमत 17.49 लाख रुपये और 55 kWh वेरिएंट की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 19.25 लाख रुपये है।

भारत में लॉन्च हो गई नई BMW 2 सीरीज गैन कॉप, जानें कैसे हैं फीचर्स और कितनी है कीमत

BMW 2 Series Launch जर्मनी की लग्जरी वाहन निर्माता BMW की ओर से भारतीय बाजार में कई बेहतरीन कारों को ऑफर किया जाता है। निर्माता की ओर से औपचारिक तौर पर BMW 2 Series Gran Coupe को लॉन्च कर दिया गया है। इस गाड़ी में किस तरह के फीचर्स को दिया जा रहा है। कितना दमदार इंजन मिलेगा। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जर्मनी की लग्जरी वाहन निर्माता BMW की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से औपचारिक तौर पर 17 जुलाई 2025 को नई गाड़ी के तौर पर BMW 2 Series Gran Coupe को लॉन्च (BMW 2 Series Launch) कर दिया गया है। इस गाड़ी में किस तरह के फीचर्स को दिया गया है। इसमें कितना दमदार इंजन दिया गया है। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया गया है। बाजार में इसका मुकाबला किस गाड़ी के साथ होगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुई BMW 2 Series Gran Coupe

बीएमडब्ल्यू की ओर से भारतीय बाजार में 17 जुलाई 2025 को नई गाड़ी के तौर पर BMW 2 Series Gran Coupe को लॉन्च (BMW 2 Series India) कर दिया गया है। इस गाड़ी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा रहा है।

कैसे हैं फीचर्स

निर्माता की ओर से BMW 2 Series Gran Coupe में कई बेहतरीन फीचर्स (Gran Coupe features) को ऑफर किया गया है। इसमें 10.7 इंच कर्व्ड इंफोटेनमेंट सिस्टम, 10.24 इंच इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, 360 डिग्री कैमरा, पैनोरमिक सनरूफ, ADAS, वायरलेस चार्जर, ऑटो पार्क असिस्ट, वायरलेस एंड्राइड ऑटो, एपल कार प्ले, 12 स्पीकर के साथ हरमन कार्डन ऑडियो सिस्टम, हेड्स अप डिस्प्ले, एंबिएंट लाइट, डिजिटल की, केबिन प्री कूलिंग, पार्क असिस्ट, एबीएस, ब्रेक असिस्ट, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज जैसे कई फीचर्स दिए गए हैं।

कितना दमदार इंजन

बीएमडब्ल्यू की ओर से इसमें 1.5 लीटर की क्षमता का तीन सिलेंडर का टर्बो इंजन दिया गया है। इस इंजन से कार को 115 किलोवाट की पावर और 230 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसके साथ सात स्पीड ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन दिया गया है। इसकी टॉप स्पीड 230 किलोमीटर प्रति घंटा तक है। इसमें राइड के लिए एफिशिएंट, पर्सनल और स्पोर्ट मोड्स को दिया गया है।

कितनी लंबाई-चौड़ाई

BMW 2 Series Gran Coupe की लंबाई 4546 एमएम रखी गई है, जो इसके पुराने वर्जन के मुकाबले 20 एमएम ज्यादा है। इसकी चौड़ाई 1800 एमएम, ऊंचाई 1445 एमएम और व्हीलबेस 2670 एमएम है।

कितने रंगों का विकल्प

निर्माता की ओर से इस कार को चार रंगों के विकल्प के साथ लाया गया है। इसमें Black Sapphire Metallic, Alpine White, Portimao Blue Metallic और Brooklyn Grey रंगों का विकल्प दिया गया है। इंटीरियर में Veganza Perforated Mocha और Veganza Perforated Oyster का विकल्प दिया गया है।

कितनी होगी कीमत

बीएमडब्ल्यू की ओर से नई BMW 2 Series Gran Coupe को दो वेरिएंट में लॉन्च किया गया है। इसके बेस वेरिएंट BMW 218 M स्पोर्ट की एक्स शोरूम कीमत 46.90 लाख रुपये है। इसके टॉप वेरिएंट BMW 218 M स्पोर्ट प्रो की एक्स शोरूम कीमत 48.90 लाख रुपये (BMW car price) है। इस गाड़ी को डीलरशिप के जरिए बुक किया जा सकता है और इसकी डिलीवरी को भी आज से शुरू कर दिया गया है।

किनसे है मुकाबला

BMW 2 Series Gran Coupe को निर्माता की सबसे सस्ती गाड़ी के तौर पर लॉन्च किया गया है। इसका बाजार में सीधा मुकाबला Mercedes Benz A Class के साथ होगा।

कौशल आधारित शिक्षा की ओर ओर बढ़े भारत

विजय गर्ग

अगर आपकी नौकरी की परिभाषा केवल सरकारी नौकरियों तक सीमित है, तो निश्चित रूप से भारत में नौकरियों का संकट है। डिजिटलीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी के नेतृत्व में स्वचालन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) के बढ़ते उपयोग के साथ, भविष्य में सरकारी नौकरियों की संख्या में और कमी आने की संभावना है। लेकिन अगर नौकरी का मतलब निजी क्षेत्र में रोजगार या स्वरोजगार है, तो कोई संकट नहीं है। भारतीय अर्थव्यवस्था तीन दशक से लगातार 6 प्रतिशत से अधिक की दर से बढ़ रही 1 है, और नौकरियों पैदा हो रही हैं। आज भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवाओं का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में हिस्सा लगभग 55 प्रतिशत, उद्योग का 27 प्रतिशत और कृषि का 17 प्रतिशत है और पिछले 10 वर्षों में, ये सेवाएं ही हैं जो 7-9 प्रतिशत की दर से बढ़ रही हैं, जबकि उद्योग 4-6 प्रतिशत और कृषि 3-5 प्रतिशत की दर से बढ़ रहे हैं। आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 के अनुसार, भारत को 2030 तक सालाना लगभग 78.5 लाख नए गैर कृषि रोजगार सृजित करने की आवश्यकता है। यह आंकड़ा स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने और जनसंख्या लाभांश का लाभ उठाने के लिए आवश्यक रोजगार सृजन के विशाल पैमाने को रेखांकित करता है। तीव्र वैश्विक प्रतिस्पर्धा के कारण विनिर्माण क्षेत्र में नए रोजगार सृजन के अवसर सीमित हैं। यही कारण है कि केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 2 लाख करोड़ रुपये के कुल आवंटन के साथ रोजगार- लिंक्ड प्रोत्साहन (पीएलआइ) योजना शुरू की। इस योजना का लक्ष्य दो वर्षों (अगस्त 2025 से जुलाई 2027 के बीच) के भीतर देश भर में 3.5 करोड़ से अधिक रोजगार सृजित करना है, जिसमें विनिर्माण क्षेत्र पर विशेष जोर दिया गया है। लेकिन सेवा क्षेत्र वैश्विक प्रतिस्पर्धा से उतना प्रभावित नहीं होता और इसीलिए उसकी वृद्धि दर उद्योग और कृषि की तुलना

में दोगुनी है। सेवा क्षेत्र के प्रमुख चालक आइटी और आइटी-सक्षम व्यवसाय, वित्तीय व्यवसाय, रियल एस्टेट, व्यापार, होटल, परिवहन और संचार रहे हैं। डिजिटल परिवर्तन ने विशेष रूप से आइटी और संबंधित सेवाओं के विकास को बढ़ावा दिया है। सेवा निर्यात में भी सफलता मिल रही है। इस क्षेत्र में संभावनाएं अत्यधिक हैं। चुनौती यह है कि युवाओं को उन क्षेत्रों में स्किल प्रदान करें जहां उनकी आवश्यकता है और विस्तार की अधिक संभावनाएं हैं। केंद्रीय कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (2023-24) की वार्षिक रिपोर्ट स्पष्ट रूप से स्वीकार करती है कि सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक यह सार्वजनिक धारणा है, जो कौशल को उन लोगों के लिए अंतिम उपाय मानती है जो औपचारिक शैक्षणिक प्रणाली में प्रगति नहीं कर पाए हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, 20 केंद्रीय मंत्रालय कौशल विकास कार्यक्रम चला रहे हैं लेकिन उनमे समन्वय की कमी है। मांग-आपूर्ति बेमेल है। साथ ही, सीमित गतिशीलता है जो कुशल व्यक्ति को औपचारिक उच्च शिक्षा में जाने का मार्ग प्रशस्त करती है। हाल ही में, हमने उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में सकल घरेलू उत्पाद को चारगुना करने के लिए एक विस्तृत अध्ययन किया और कौशल से संबंधित मुद्दों की जांच की। कालेजों के बीच राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की समझ और कार्यान्वयन में कमी स्पष्ट थी। कौशल विकास के उद्देश्यों के सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन में प्रणालीगत चुनौतियां आती हैं, खासकर बुनियादी ढांचे, संसाधन आवंटन और विभिन्न स्तरों पर क्षमता निर्माण के संबंध में छात्रों और उनके माता-पिता को विभिन्न क्षेत्रों में उभरते हुए नौकरी के अवसरों से अवगत कराना और उन्हें उपयुक्त कौशल प्रदान करने वाले संस्थान का चयन करने में मदद करना बहुत मुश्किल काम नही है। यह प्रत्येक शहर में समय-समय पर छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों को आमंत्रित करके कौशल परामर्श मेलों का आयोजन करके किया जा सकता है। इसलिए, न तो नौकरियों की कमी है और न ही कौशल की, बल्कि आवश्यकता समाज को कौशल आधारित शिक्षा की ओर उन्मुख करने की है ताकि छात्रों को सही प्रकार की नौकरियों के लिए कुशल बनाया जा सके।

ऐसा करके ही भारत न सिर्फ अपनी युवा आबादी को उत्पादक बना सकेगा बल्कि इससे देश के आर्थिक विकास को वह गति मिलेगी, जिसकी जरूरत इस समय महसूस की जा रही है। युवाओं को जब नौकरी मिलती है तो वह सैलरी खर्च करते हैं, घर खरीदते हैं, कार खरीदते हैं और जरूरत की दूसरी चीजों पर पैसा खर्च करते हैं। उनका जीवन स्तर बेहतर होता है। इससे मांग बढ़ती है और अर्थव्यवस्था का चक्का तेजी घूमता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

ट्रंप आब सिर्फ कारोबारी

विजय गर्ग

अमेरिकन राष्ट्रपति इस वादे पर चुने गये थे कि वह तमाम युद्धों को बंद करवा देंगे।

पर हालात बदल गये हैं और अब ट्रंप ने कहा है कि वह यूक्रेन को और हथियार देंगे, यानी रूस यूक्रेन का युद्ध बंद न हो रहा है। उधर ईरान और अमेरिका दोनों एक-दूसरे को धमका रहे हैं कि खबरदार देख लूंगा। युद्ध कहीं के बंद न हो रहे। ट्रंप की कोई न सुन रहा है। पर ट्रंप अपने मतलब की बात सुन रहे हैं।

युद्ध अधिक हो जाये तो हथियारों की सेल भी ज्यादा होगी, ट्रंप के लिए यह बात ज्यादा फायदेमंद है। रुके हुए युद्धों में हथियार कंपनियों के मुनाफे भी रुक जाते हैं। युद्ध होता है तो हथियार कंपनियां मुनाफा खाती हैं, नेता कमीशन खाते हैं। जनता क्या खाती है, इससे बहुत ज्यादा मतलब किसी देश के नेता को न होता।

पाकिस्तान में देख लें। सब कुछ महंगा हो रहा है और पाकिस्तानी सेना कह रही है कि बजट में सबसे बड़ा हिस्सा हमारा होना चाहिए। पाकिस्तानी सेना युद्ध एक न जीतती, पर पाकिस्तान के नेता सेना के आगे बजट सारा हार जाते हैं। पाकिस्तान में जनरल युद्ध हारता है, तो फील्ड मार्शल हो जाता है। डर है कि पाकिस्तान के फील्ड मार्शल आसिम मुनीर कहीं पीएम मोदी से निवेदन न कर दें कि एक हमला और कर दीजिये, फिर मैं फील्ड मार्शल से राष्ट्रपति बन जाऊंगा। पाकिस्तान की मजबूरी है इसलिए दो-दो देशों चीन और अमेरिका को बाप बनाना पड़ रहा है। पाकिस्तान की हालत उस गर्लफ्रेंड जैसी है, जिसे अपने दोनों ही ब्वॉयफ्रेंड्स से वसूली करनी है। ब्वॉयफ्रेंड भी जानते हैं कि गर्लफ्रेंड वसूलीबाज है, धंधेबाज है। पर वो रिश्ता चलाये रखते हैं।

पर पाकिस्तान कंगाल देश है, उसे हथियार उधार पर चाहिए होते हैं, सो ट्रंप की दिलचस्पी पाकिस्तान को हथियार बेचने में नहीं है। उधार के ग्राहक को ज्यादा भाव नहीं मिलते।

ट्रंप के पुराने कारोबारी दोस्त एलन मस्क ने अपनी राजनीतिक पार्टी बना ली है। मस्क को समझ में आ गया कि तमाम धंधों के साथ राजनीति का धंधा भी कर लेना चाहिए, चार पैसे फालतू कमा लिये जाते हैं। चार पैसे एक्स्ट्रा कमाने के चक्कर में कई बार इज्जत भी चली जाती है।

अमेरिका पर अब कोई देश पूरा भरोसा नहीं करता। धंधेवाले के लिए पहली प्राथमिकता धंधा होती है। जो हथियार ख़रीद ले, वही दोस्त है। जो नकद देकर ख़रीदे वह परम दोस्त। भारत फ्रांस से खरीदता है राफेल, अमेरिका से नहीं खरीदता। दोस्ती कैसे चले। जिस दोस्ती में चार पैसे न कमा पायें, वो दोस्ती कैसी। गहरी बात है, पर ट्रंप समझते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

यू-आकार की कक्षा में बैठने से गर्दन में दर्द हो सकता है

विजय गर्ग

मलयालम फिल्म, स्थानार्थी श्रीकुट्टन में चरमोत्कर्ष दृश्य से एक क्यू लेते हुए, दक्षिण भारत के कई स्कूल कक्षाओं में यू-आकार के बैठने की व्यवस्था को अपना रहे हैं। कर्नाटक की एक बाल अधिकार कार्यकर्ता नरसिम्हा राव ने राज्य के शिक्षा मंत्री मधु बांगरप्पा से औपचारिक अनुरोध किया है, जिसमें अर्ध-परिपत्र बैठने के पैटर्न को लागू करने का आग्रह किया गया है। राव ने जोर देकर कहा कि यह बैठने का विन्यास छात्रों के बीच समावेशिता और समान भागीदारी को बढ़ावा देता है, इसके अलावा पीठ की बेंच को खत्म करता है। हालांकि, डॉक्टर इस तरह के बैठने की व्यवस्था के कारण मस्कुलोस्केलेटल और आर्थोपेडिक स्वास्थ्य के बारे में चिंता जताते हैं। ₹10-12 वर्ष और उससे अधिक आयु के बच्चों के लिए, लंबे समय तक पाठ के दौरान मुड़े हुए सिर के साथ बैठने से मांसपेशियों के मुद्दे और गर्दन में दर्द हो सकता है। DrAnkush गर्ग ने कहा, चिंता 10-16 वर्ष की आयु के किशोरों के लिए अधिक प्रासंगिक है, जब अकादमिक मांग तेज होती है, तो लंबे समय तक बैठे अध्ययन की आवश्यकता होती है बैठने की व्यवस्था शिक्षकों को भी प्रभावित कर सकती है। ₹यह उन शिक्षकों पर संभावित शारीरिक तनाव पैदा करता है जिन्हें छात्रों के साथ आंखों के संपर्क को बनाए रखने के लिए अपने शरीर को बार-बार मोड़ने की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, शिक्षक के करीब बैठे छात्र आगे की तुलना में बेहतर सुनते हैं, ₹डॉ अंकुश गर्ग ने कहा हालांकि, उन्होंने बताया कि यह छोटे बच्चों को प्रभावित नहीं कर सकता है - जिनकी आयु 5-10 वर्ष है - जितना कि उनकी रीढ़ काफी लचीली है और उनकी मांसपेशियां अभी भी विकसित हो रही हैं। एक पूर्व बैकबेंचर, डॉ। एक बाल रोग विशेषज्ञ का मानना है कि यू-आकार की बैठने की व्यवस्था संभावित रूप से अपवर्तक त्रुटियों को याद किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि पारंपरिक बैठने की व्यवस्था के कई फायदे हैं। ₹पीठ पर बैठे बच्चे जो बोर्ड को पढ़ने के लिए संघर्ष करते हैं, उन्हें अक्सर शुरुआती नेत्र परीक्षण मिलते हैं। पढ़ने में कठिनाई की उनकी स्व-रिपोर्टिंग अक्सर आंखों की परीक्षाओं का संकेत देती है। मॉन्टेसरी सेटिंग्स में, जहां छात्र टेबल के चारों ओर बैठते हैं, अपवर्तक त्रुटियां किसी का ध्यान नहीं जा सकती हैं क्योंकि दूरी दृष्टि की कम आवश्यकता है। डॉ। अंकुश गर्ग ने कहा कि इस बैठने की व्यवस्था को शुरू करने वाले स्कूलों में बच्चे समय-समय पर सिर हिला सकते हैं, डॉ। अंकुश गर्ग ने सुझाव दिया कि ₹शिक्षक भी प्रत्येक अवधि के बाद बच्चों को अपनी सीट बदलने पर विचार कर सकते हैं बैठने की प्रणाली ने अपनी सीमाओं के बावजूद शिक्षकों और विद्यार्थियों से समान रूप से समर्थन प्राप्त किया है।

विज्ञान से परे

विजय गर्ग

दशकों से, भारतीय छात्रों को यह विश्वास करने के लिए वातानुकूलित किया गया है कि सफलता एक संकीर्ण शैक्षणिक सुरंग के अंत में निहित है - एक जो स्कूल में विज्ञान के साथ शुरू होता है और इंजीनियरिंग या चिकित्सा के साथ समाप्त होता है। जबकि इस सूत्र ने पिछली पीढ़ियों की सेवा की है, भविष्य कुछ व्यापक, अधिक बारीकियों और वास्तविक दुनिया के चिंतनशील की मांग करता है: मानविकी, सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य की ओर एक बदलाव।

आज, दुनिया अब विज्ञान बनाम कला के कठोर साइलो में विभाजित नहीं है। वास्तविक समस्याओं का हम सामना करते हैं - जलवायु परिवर्तन, मानसिक स्वास्थ्य संकट, डिजिटल नैतिकता, सामाजिक असमानता - अंतःविषय सोच की आवश्यकता होती है। ये अकेले जीव विज्ञान या भौतिकी की चुनौतियां नहीं हैं, बल्कि मानव व्यवहार, शासन, नैतिकता, संस्कृति, नीति और अर्थशास्त्र को समझने की हैं। और यही वह जगह है जहाँ मानविकी और सामाजिक विज्ञान कदम रखते हैं।

गैर-विज्ञान विषयों से जुड़ा कलंक सिर्फ पुराना नहीं है - यह हानिकारक है। वास्तव में, मानविकी और वाणिज्य कैरियर के अवसरों की बहुतायत प्रदान करते हैं। व्यवहार अर्थशास्त्र और पत्रकारिता से लेकर पर्यावरण नीति, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, लोक प्रशासन, कानूनी अध्ययन, विकास अनुसंधान, शहरी नियोजन, मनोविज्ञान, सामग्री रणनीति और डिजाइन सोच तक - गुंजाइश तेजी से बढ़ रही है। डिजिटल क्रांति ने केवल उदार कला स्नातकों की आवश्यकता को बढ़ाया है जो गंभीर रूप से सोच सकते हैं, प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं, और जटिल सामाजिक प्रणालियों को समझ सकते हैं।

इसके अलावा, भारत की ज्ञान अर्थव्यवस्था केवल इंजीनियरों और डॉक्टरों का उत्पादन करने का जोखिम नहीं उठा सकती है। हमें मानवविज्ञानी की आवश्यकता है जो आदिवासी समावेश के साथ मदद कर सकते हैं, अर्थशास्त्री जो ग्रामीण विकास को मॉडल कर सकते हैं, राजनीतिक वैज्ञानिक जो विदेश नीति को आकार दे सकते हैं, और शिक्षक जो हमारी टूटी हुई स्कूली शिक्षा प्रणाली पर पुनर्विचार कर सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 बहु-विषयक शिक्षा को सही तरीके से प्रोत्साहित करती है - लेकिन इसकी सफलता कैरियर सुरंग दृष्टि से दूर जाने की सामाजिक इच्छा पर निर्भर करती है।

माता-पिता और छात्रों को यह समझना चाहिए कि मानविकी और वाणिज्य फॉलबैक विकल्प नहीं हैं; वे

अपने आप में सीमा हैं। वे नेताओं, विचारकों और चेंजमेकर्स को आकार देते हैं। कॉर्पोरेट क्षेत्र भी मानव संसाधन, संचार, कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी और ईएसजी (पर्यावरण, सामाजिक, शासन) अनुपालन में भूमिकाओं के लिए उदार कला स्नातकों को तेजी से महत्व दे रहा है। थिंक टैंक, अंतर्राष्ट्रीय संगठन, सिविल सेवा, गैर-लाभकारी और यहां तक कि तकनीकी फर्मों को समाज के लेंस के माध्यम से डेटा की भावना बनाने के लिए सामाजिक वैज्ञानिकों की आवश्यकता है।

इस मिथक को तोड़ने का समय आ गया है कि केवल विज्ञान प्रतिष्ठा या समृद्धि की गारंटी देता है। सच्ची प्रगति विविध विषयों को गले लगाने में निहित है, समीकरणों के रूप में ज्यादा के रूप में सहानुभूति मूल्यांकन, और विचारों के रूप में ज्यादा के रूप में आविष्कार ।

आज, छात्रों को यह चुनने के लिए सशक्त होना चाहिए कि ₹सुरक्षित₹ क्या है, लेकिन प्रासंगिक क्या है। मानविकी और सामाजिक विज्ञान अब कम सड़क नहीं है - वे आगे की सड़क हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

अन्वेषण करें कि विज्ञान कई क्षेत्रीय भाषाओं के साथ भारत जैसे देश में कैसे संचार करता है

विजय गर्ग

विज्ञान की भाषा मानव ज्ञान की वास्तुकला में एक मूलभूत स्तंभ के रूप में खड़ी है। यह केवल तकनीकी शब्दावली या वाक्यात्मक सम्मेलनों का संग्रह नहीं है, बल्कि संचार की एक गतिशील और विकसित प्रणाली है जो अनुभवजन्य ज्ञान के निर्माण, सत्यापन और प्रसार को सक्षम बनाती है। वैज्ञानिक समझ की खोज इसे व्यक्त करने के लिए उपयोग की जाने वाली भाषा की सटीकता, स्पष्टता और संरचना के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। रोजमर्रा के प्रवचन के विपरीत, वैज्ञानिक भाषा अस्पष्टता को कम करने, प्रजनन क्षमता को बढ़ावा देने और भाषाई और सांस्कृतिक बाधाओं को पार करने की इच्छा रखती है। इस अर्थ में, विज्ञान एक सार्वभौमिक विधि और एक सार्वभौमिक भाषा दोनों के रूप में कार्य करता है, अवलोकन, साक्ष्य और तर्क में निहित एक साझा लेक्सिकॉन के माध्यम से प्राकृतिक दुनिया के बारे में सत्य को स्पष्ट करने की मांग करता है।

वैज्ञानिक भाषा का विकास ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से स्थित है। प्राचीन ग्रीस के प्राकृतिक दर्शन से लेकर न्यूटोनियन यांत्रिकी के गणितीय औपचारिकता और क्वांटम भौतिकी के प्रतीकात्मक सार तक, वैज्ञानिक प्रवचन का विकास महामारी विज्ञान और विधि में बदलाव को दर्शाता है। लैटिन ने एक बार विज्ञान के लिंगुआ फ्रैंका के रूप में कार्य किया, जो विविध राष्ट्रों और विद्वानों में एक मानकीकृत माध्यम प्रदान करता है। आधुनिक युग में, अंग्रेजी ने काफी हद तक इस भूमिका को लिया है, जो वैज्ञानिक प्रकाशन और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में प्रमुख भाषा बन गई है। यह भाषाई बदलाव न केवल संचार के लिए बल्कि वैश्विक विज्ञान में पहुंच, इक्विटी और समावेश के लिए भी निहितार्थ है।

एक ही भाषा का प्रभुत्व, वैश्विक सामंजस्य को बढ़ावा देते हुए, गैर-अंग्रेजी बोलने वाले विद्वानों के हाशिए और विविध एपिस्टेमोलॉजिकल दृष्टिकोणों के संभावित नुकसान के बारे में भी चिंता पैदा करता है। वैज्ञानिक भाषा इसकी औपचारिक संरचना, तार्किक सामंजस्य और अनुभवजन्य ग्राउंडिंग की विशेषता है। यह तकनीकी शब्दावली, मानकीकृत प्रारूपों (जैसे आईएमआरऐडीः परिचय, तरीके, परिणाम, और चर्चा संरचना), और सांख्यिकीय और गणितीय संकेतन के उपयोग पर भारी निर्भर करता है। इस तरह की विशेषताओं को स्पष्टता बढ़ाने, सहकर्मी मूल्यांकन की सुविधा और परिणामों की प्रतिकृति सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। हालांकि, यह बहुत ही सटीक अक्सर वैज्ञानिक ग्रंथों को आम जनता के लिए दुर्गम बनाता है, जो बड़े पैमाने पर वैज्ञानिक समुदायों और समाज के बीच एक व्यापक अंतर में योगदान देता है। यह संचार विभाजन विज्ञान संचारकों और शिक्षकों की आवश्यकता को रेखांकित करता है जो सटीकता से समझौता किए बिना जटिल विचारों को अधिक सुलभ भाषा में अनुवाद कर सकते हैं।

इसके अलावा, विज्ञान की भाषा विकृत है; यह न केवल दुनिया का वर्णन करता है, बल्कि वर्गीकरण, नामकरण और मॉडलिंग के माध्यम से इसका निर्माण करता है। जीव विज्ञान, रासायनिक नामकरण और भौतिक कानूनों में वर्गीकरण ऐसे उदाहरण हैं जहां भाषाई विकल्प आकार देते हैं कि घटनाओं को कैसे माना और व्याख्या की जाती है। किसी प्रजाति का नामकरण करने, एक चर को परिभाषित करने या सैद्धांतिक ढांचे के निर्माण के कार्य में महामारी संबंधी प्रतिबद्धताएं शामिल हैं और वैचारिक भार वहन करती हैं। इस प्रकार, वैज्ञानिक भाषा मूल्य-तटस्थ नहीं है; यह बिजली संरचनाओं, सांस्कृतिक संदर्भों और संस्थागत ढांचे के भीतर एम्बेडेड है।

एक तेजी से अंतःविषय और परस्पर जुड़ी दुनिया में, वैज्ञानिक भाषा का भविष्य अधिक समावेशी और अनुकूली होते हुए कठोर बने रहने की क्षमता में निहित है। यह अनुभवजन्य सटीकता और नैतिक जिम्मेदारी के बीच विशेष डोमेन और व्यापक जनता के बीच की खाई को पाटना चाहिए। विज्ञान की भाषा को समझना, इसलिए, न केवल एक भाषाई या महामारी संबंधी कार्य है; यह हमारे समय की सबसे अधिक दबाव वाली चुनौतियों के साथ, जलवायु परिवर्तन से लेकर महामारी तक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जैव विविधता के नुकसान तक उलझाने की कुंजी है।

भारत में विज्ञान की भाषा का लोकप्रियकरण वैज्ञानिक समुदायों और आम जनता के बीच की खाई को पाटने में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। भाषाई विविधता और साक्षरता के अलग-अलग स्तरों द्वारा चिह्नित आबादी के साथ, भारत में प्रभावी विज्ञान संचार के लिए न केवल भाषाओं में बल्कि सांस्कृतिक और शैक्षिक संदर्भों में भी अनुवाद की आवश्यकता होती है। विज्ञान प्रसार, राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद और क्षेत्रीय विज्ञान पत्रिकाओं जैसी पहल ने स्थानीय भाषाओं में वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन प्रयासों का उद्देश्य एक वैज्ञानिक स्वभाव को बढ़ावा देना है, जैसा कि भारतीय संविधान में निहित है, और अंधविश्वास और गलत सूचना का मुकाबला करता है। इन कोशिशों के बावजूद चुनौतियां बनी हुई हैं. अंग्रेजी औपचारिक वैज्ञानिक प्रवचन पर हावी रहती है, गैर-अंग्रेजी बोलने वालों के लिए पहुंच को सीमित करती है। इसके अलावा, विज्ञान संचार को अक्सर अनुसंधान के लिए माध्यमिक के रूप में देखा जाता है, जिससे संस्थागत समर्थन और प्रशिक्षित संचारकों की कमी होती है। हालांकि, डिजिटल मीडिया, स्थानीय यूट्यूब विज्ञान चैनलों और जमीनी स्तर पर विज्ञान क्लबों के उदय ने सगाई के लिए नए मंच बनाए हैं। भारत में विज्ञान की लोकप्रियता केवल तथ्यों का अनुवाद करने के बारे में नहीं है, बल्कि जिज्ञासा, महत्वपूर्ण सोच और जांच की संस्कृति की खेती है। नागरिकों को सशक्त बनाने और देश की वैज्ञानिक और विकासात्मक यात्रा में सूचित भागीदारी को सक्षम करने के लिए इस पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना आवश्यक है।

डिस्कवरी की जीभ

विज्ञान बोलता है, लेकिन किस जीभ में? विशाल भाषाई महासागर में जो भारत है, 22 से अधिक आधिकारिक रूप से मान्यता प्राप्त भाषाओं और सैकड़ों बोलियों के साथ, सवाल अर्थ से कहीं अधिक है। यह एक दार्शनिक, राजनीतिक और व्यावहारिक जांच है। क्या विज्ञान भारत में अंग्रेजी में है, या यह तमिल, हिंदी, बंगाली या कन्नड़ में पनप सकता है? क्या विज्ञान को एक सार्वभौमिक भाषा की आवश्यकता होती है, या इसे पानी की तरह अनुकूलित करना चाहिए, हर सांस्कृतिक पोत के आकार को लेते हुए इसे डाला जाता है? यह पता लगाने का प्रयास कि विज्ञान भारत में कैसे संचार करता है, इसका ऐतिहासिक विकास, वर्तमान तनाव, शैक्षिक वास्तविकताएं और आगे का रास्ता। यह तर्क देता है कि जबकि अंग्रेजी वैज्ञानिक क्षेत्र पर हावी है, क्षेत्रीय भाषाओं में वैज्ञानिक ज्ञान, दयालु जिज्ञासा और समावेशी नवाचार को बढ़ावा देने की गहरी क्षमता है।

विज्ञान और भाषा: वैश्विक दृश्य

विज्ञान को अक्सर एक सार्वभौमिक उद्यम माना जाता है। सीमाओं को पार करने के लिए समीकरणों और प्रयोगों की उम्मीद है। लेकिन विज्ञान का संचार, जिस तरह से इसे पढ़ाया जाता है, साझा किया जाता है, बहस की जाती है और प्रलेखित किया जाता है, वह भाषा से गहराई से उलझ जाता है। आज, अंग्रेजी विज्ञान का वैश्विक लिंगुआ फ्रैंका है। पत्रकार, सम्मेलन, सहयोग और अधिकांश डेटाबेस अंग्रेजी बोलते हैं। लेकिन हमेशा ऐसा नहीं था। अरबी, लैटिन, संस्कृत, चीनी और ग्रीक सभी ऐतिहासिक रूप से विज्ञान और दर्शन की भाषाओं के रूप में कार्य करते हैं। अल-ख्वारिज़्मी ने अरबी, संस्कृत में आर्यभट्ट और ग्रीक में यूक्लिड में लिखा। प्रत्येक युग ने विज्ञान को अपनी संस्कृति की भाषा बोलते हुए देखा। यह केवल खोज के बारे में नहीं था, बल्कि यह खोज लोगों और समुदायों तक कैसे पहुंची।

द इंडियन लैंडस्केप: एक बहुभाषी मोज़ेक

भारत अपनी भाषाई विविधता में अद्वितीय है। भारत का संविधान 22 ₹अनुसूचित भाषाओं₹ को मान्यता देता है, लेकिन नृवंशविज्ञान 450 से अधिक जीवित भाषाओं को सूचीबद्ध करता है। यह विविधता साहित्य, संगीत और लोककथाओं में परिलक्षित होती है, लेकिन विज्ञान काफी हद तक एक भाषाई गलियारे में वापस आ गया है: अंग्रेजी। जबकि अंग्रेजी औपनिवेशिक शासन से विरासत में मिली थी, यह विज्ञान और उच्च शिक्षा की डिफ़ॉल्ट भाषा बन गई थी। वैज्ञानिक संस्थान, अनुसंधान प्रकाशन और तकनीकी शिक्षा लगभग विशेष रूप से अंग्रेजी का उपयोग करते हैं। यह एक विरोधाभास बनाता है: एक ऐसे देश में जहां बहुमत धाराप्रवाह अंग्रेजी नहीं बोलता है, विज्ञान भाषाई दीवारों के पीछे बंद है।

औपनिवेशिक विरासत और आधुनिक विज्ञान

भारत में आधुनिक विज्ञान ने औपनिवेशिक काल के दौरान जड़ पकड़ ली। भारतीय विज्ञान संस्थान (1909) और बाद में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों जैसे संस्थानों को पश्चिमी प्रणालियों पर मॉडलिंग की गई और मुख्य रूप से अंग्रेजी में कार्य किया गया। अंग्रेजी-मध्यम शिक्षा को प्रशासकों और पेशेवरों के एक कुलीन वर्ग को बनाने के लिए प्राथमिकता दी गई थी। स्वतंत्रता के बाद, जबकि भारतीय राज्य ने साहित्य और बुनियादी शिक्षा में क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा दिया, विज्ञान अंग्रेजी में काम करता रहा। कारण व्यावहारिक थे: वैश्विक अनुसंधान, प्रकाशन मानकों और कैरियर की गतिशीलता तक पहुंच। लेकिन यह व्यावहारिकता एक कीमत पर आई।

अंग्रेजी-केवल विज्ञान की लागत

ग्रामीण भारत में, जहां अधिकांश आबादी रहती है, विज्ञान शिक्षा अक्सर एक विदेशी जीभ में रटने की याद के रूप में समाप्त होती है। छात्रों को हर दिन अपने खेतों और घरों में देखी जाने वाली घटनाओं को समझे बिना न्यूटन के नियमों का पाठ करना सिखाया जाता है। यह डिस्कनेक्ट दो वर्ग बनाता है: जो लोग विज्ञान कर सकते हैं और जो इसे केवल दूसरे हाथ से सीख सकते हैं। इससे भी बदतर, यह स्थानीय ज्ञान प्रणालियों को अलग कर देता है, जिनमें से कई गहराई से अनुभवजन्य और पारिस्थितिक हैं। कृषि ज्ञान, हर्बल दवा, और जल प्रबंधन सभी क्षेत्रीय भाषाओं में पनपते हैं लेकिन औपचारिक वैज्ञानिक प्रवचन में शायद ही कभी सम्मानित होते हैं।

क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान: परिवर्तन के बीज

इस विभाजन को पाटने के लिए सचेत प्रयास हुए हैं। तमिल वर्चुअल अकादमी, केरल साठरा साहित्य परिषद (केएसएसपी) और विज्ञान प्रसार जैसे संगठनों ने क्षेत्रीय भाषाओं में वैज्ञानिक सामग्री बनाने का काम किया है। NCERT पाठ्यपुस्तकों का हिंदी और अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जाता है। ऑल इंडिया रेडियो ने लंबे समय से मौखिक भाषाओं में विज्ञान कार्यक्रमों की मेजबानी की है। केरल जैसे राज्यों में, मलयालम में स्कूल विज्ञान मेले आयोजित किए जाते हैं। तमिलनाडु में, पाठ्य पुस्तकें राज्य बोर्ड के छात्रों के लिए तमिल में उपलब्ध हैं। इन पहलों से पता चला है कि वैज्ञानिक सोच किसी भी भाषा में पनप सकती है बशर्ते सामग्री आकर्षक, सांस्कृतिक रूप से निहित और आयु-उपयुक्त हो। हालांकि, चुनौतियां बनी हुई हैं: वैज्ञानिक शब्दावली का अनुवाद करना अक्सर कठिन होता है, और कई शब्द अंग्रेजी से थोक उधार लिए जाते हैं। भारतीय भाषाओं में एक जीवंत, विकसित वैज्ञानिक लेक्सिकॉन का विकास अभी भी प्रगति पर है।

अनुवाद और अनुकूलन की भूमिका

अनुवाद केवल शब्दों को बदलने के बारे में नहीं है; यह संदर्भ बदलने के बारे में है। जब विज्ञान का अनुवाद किया जाता है, तो उसे सांस्कृतिक रूपकों, स्थानीय उदाहरणों और भाषाई बारीकियों के अनुकूल होना चाहिए। ₹प्रकाश संश्लेषण₹ की अवधारणा पर विचार करें एक पाठ्यपुस्तक अनुवाद इसे सही ढंग से समझा सकता है, लेकिन एक गांव में एक शिक्षक सूर्य के प्रकाश, एक सांस्कृतिक रूप से परिचित प्रक्रिया का उपयोग करके खाना पकाने की सादृश्य के माध्यम से इसे समझा सकता है। कुछ वैज्ञानिक शब्द, जैसे "जीन" या "क्वांटम", शायद कभी भी सही अनुवाद न हों. लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि विज्ञान को अन्य भाषाओं में नहीं पढ़ाया जा सकता है। इसका सीधा सा मतलब है कि हमें रचनात्मक होना चाहिए। समानताएं, दृश्य और कहानियां जटिल विचारों को भाषाओं में सुलभ बना सकती हैं। क्षेत्रीय भाषाओं, यूट्यूब विज्ञान संचारकों और मोबाइल ऐप में विकिपीडिया जैसे ओपन-एक्सेस टूल का उपयोग तेजी से विज्ञान को बहुभाषी और बहुभाषी बनाने के लिए किया जा रहा है। जैव विविधता के बारे में असमिया में पॉडकास्ट, ब्लैक होल पर मराठी व्याख्याकार वीडियो, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बारे में हिंदी मेम पुनर्परिभाषित कर रहे हैं कि विज्ञान को कैसे माना जाता है और साझा किया जाता है।

भाषा के माध्यम से स्वदेशी ज्ञान को पुनः प्राप्त करना

भारतीय भाषाओं में विज्ञान केवल अनुवाद के बारे में नहीं है; यह पुनर्ग्रहण के बारे में भी है। स्वदेशी पारिस्थितिक ज्ञान, पारंपरिक चिकित्सा, खेती प्रथाओं, और यहां तक कि खगोल विज्ञान भी क्षेत्रीय भाषाओं में लंबी परंपराएं हैं। हालांकि, इन ज्ञान प्रणालियों को अक्सर ₹मुख्यधारा के विज्ञान₹ से बाहर रखा जाता है इन परंपराओं को याद करने में उन्हें अपनी मूल भाषाओं में दस्तावेजीकरण करना शामिल है, उन्हें आधुनिक तरीकों के माध्यम से मान्य करना जहां उपयुक्त हो, और उन्हें वैज्ञानिक पाठ्यक्रम में एकीकृत करना। यह बहुवचन ज्ञान प्रणालियों के लिए सम्मान को बढ़ावा देता है और स्थानीय समुदायों के लिए विज्ञान की प्रासंगिकता को मजबूत करता है।

नीति और संस्थानों की भूमिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने एक साहसिक बयान दिया: यह मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा को कम से कम ग्रेड 5 तक प्रोत्साहित करता है, और अधिमानतः ग्रेड 8 तक। विज्ञान के लिए, यह अवसर की एक खिड़की प्रदान करता है। यदि अच्छी तरह से लागू किया जाता है, तो छात्र उस भाषा में मुख्य अवधारणाओं को समझ सकते हैं जो वे सोचते हैं और सपने देखते हैं। लेकिन नीतियों को शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यपुस्तक विकास और वैज्ञानिक शब्दावली निर्माण में निवेश से मिलान किया जाना चाहिए। इसके अलावा, उच्च शिक्षा को धीरे-धीरे द्विभाषिकता के लिए अधिक मिलनसार होना चाहिए। संस्थान दोहरे भाषा के संसाधनों की पेशकश कर सकते हैं और अंग्रेजी के साथ क्षेत्रीय भाषा पत्रिकाओं का समर्थन कर सकते हैं।

विज्ञान संचार और जनता

कोवड-19 महामारी ने हमें सिखाया कि विज्ञान संचार को देश के हर कोने तक पहुंचना चाहिए। जब तक हर जीभ में सच नहीं बोला जाता, तब तक गलतफहमी सच्चाई से अधिक तेजी से यात्रा करती है। संकट के दौरान, कई क्षेत्रीय प्रभावितों ने स्थानीय मुहावरों और भाषाओं में मास्किंग, टीके और सामाजिक गड़बड़ी की व्याख्या करने के लिए कदम रखा। इसने काम किया। यह दर्शाता है कि विज्ञान की सार्वजनिक समझ न केवल सटीकता पर, बल्कि परिचित पर निर्भर करती है। भोजपुरी में समझाया गया वायरस अंग्रेजी की लैब रिपोर्ट से ज्यादा प्रभावी हो सकता है। वैज्ञानिकों, पत्रकारों और शिक्षकों को एक बहुभाषी विज्ञान कथा शिल्प के लिए एक साथ काम करना चाहिए।

जहाँ सफाई एक कर्म नहीं, एक पूजा है: इंदौर की दिव्यता

[कर्म की माटी में खिली स्वच्छता की सुनहरी फसल]

इंदौर, वह नगरी जो स्वच्छता के स्वर्णिम आकाश में सूरज-सा चमकता है, जिसने अपनी धरती को न केवल भारत का गौरव बनाया, बल्कि विश्व मंच पर एक अनुपम मिसाल कायम की। यह शहर केवल ईंट-पत्थर का समूह नहीं, बल्कि एक ऐसी सजीव कथा है, जो हर गली, हर चौराहे, हर नुक्कड़ पर स्वच्छता की अमर गाथा गाती है। स्वच्छता सर्वेक्षण 2024-25 में लगातार आठवीं बार भारत का सबसे स्वच्छ शहर बनकर इंदौर ने न केवल एक कीर्तिमान रचा, बल्कि हर भारतीय के हृदय में गर्व और प्रेरणा का दीप जलाया। यह उपलब्धि केवल आंकड़ों की जीत नहीं, बल्कि प्रशासन, स्वच्छता कर्मियों और जनता के अटूट समर्पण, जुनून और एकजुटता का वह अनमोल रत्न है, जो इंदौर को स्वच्छता का ताज पहनाता है। सूरत ने दूसरा और नवी मुंबई ने तीसरा स्थान हासिल कर इस स्वच्छता महायज्ञ में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की, जबकि 3-10 लाख जनसंख्या वर्ग में चंडीगढ़, नोएडा और उज्जैन ने भी अपनी स्वच्छता की चमक बिखेरी। नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इन विजेताओं को सम्मानित किया, जिसने इस उपलब्धि को और अधिक गौरवशाली बना दिया।

इंदौर की यह स्वच्छता कथा कोई साधारण उपलब्धि नहीं, बल्कि एक ऐसी क्रांति है, जिसने स्वच्छ भारत मिशन को नया आलोक प्रदान किया। स्वच्छता सर्वेक्षण, जो आज विश्व का सबसे विशाल शहरी स्वच्छता मूल्यांकन बन चुका है, ने 4,500 से अधिक शहरों को 10 मापदंडों और 54 संकेतकों के आधार पर परखा। कचरा प्रबंधन, सेवा वितरण और नागरिक भागीदारी जैसे पहलुओं पर इंदौर ने न केवल अपनी अजेय श्रेष्ठता साबित की, बल्कि सुपर स्वच्छता लीग में भी शीर्ष स्थान हासिल कर एक नया इतिहास रच दिया। यह लीग उन 15 शहरों की थी, जो पिछले तीन वर्षों में शीर्ष तीन स्थानों पर रहे, और इंदौर ने इसमें भी अपनी अनमोल बादशाहत कायम रखी। यह उपलब्धि इंदौर की उस अटल प्रतिबद्धता का प्रतीक है, जो स्वच्छता को केवल एक लक्ष्य नहीं, बल्कि एक जीवनशैली मानती है।

2016 में जब इंदौर ने पहली बार स्वच्छता सर्वेक्षण में शीर्ष स्थान हासिल किया, तब से लेकर आज तक, इस नगरी ने अपनी स्वच्छता को न केवल बनाए रखा, बल्कि इसे और अधिक निखारा। इंदौर नगर निगम और स्थानीय प्रशासन की दृढ़ इच्छाशक्ति ने इसे संभव बनाया। 100% डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण, 98% स्रोत पर कचरे का पृथक्करण, और कचरे से सीएनजी उत्पादन जैसे अभिनव उपायों ने इंदौर को सात सितारा 'गार्बेज फ्री सिटी' की रेटिंग दिलाई। आंकड़े बताते हैं कि इंदौर में प्रतिदिन 1,200 टन कचरे का वैज्ञानिक प्रबंधन किया जाता है, जिसमें से 550 टन गीले कचरे से खाद और 50 टन से अधिक प्लास्टिक का पुनर्चक्रण होता है। महापौर पुष्यमित्र भार्गव और नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय जैसे नेतृत्वकर्ताओं ने इस अभियान को एक जन-आंदोलन में बदल दिया। विजयवर्गीय का एक बयान, ₹सुपर स्वच्छ इंदौर, यह एक नया युग है !₹ इस शहर की स्वच्छता के प्रति उस अटूट विश्वास को दर्शाता है, जो हर इंदौरी के हृदय में बसता है।

इंदौर की स्वच्छता गाथा उन अनाम नायकों के बिना अधूरी है, जिन्हें हम 'सफाई मित्र' कहते हैं। ये स्वच्छता कर्मी, जो सूरज की पहली किरण से लेकर रात की अंतिम छाया तक सड़कों, नालों और गलियों को चमकाते हैं, इस शहर के असली हीरो हैं। स्वच्छता सर्वेक्षण 2023 में चंडीगढ़ को 'सर्वश्रेष्ठ सफाई मित्र

सुरक्षित शहर' का पुरस्कार मिला, लेकिन इंदौर ने भी अपने सफाई मित्रों की सुरक्षा और सम्मान को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। इन कर्मियों को आधुनिक उपकरण, प्रशिक्षण और सामाजिक सम्मान प्रदान किया गया, जिसने उनके मनोबल को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। ये सफाई मित्र केवल कचरा नहीं उठाते, बल्कि इंदौर की शान को हर दिन नया आलम देते हैं।

इंदौर की स्वच्छता का सबसे बड़ा रहस्य उसकी जनता है। यह शहर केवल प्रशासन की नीतियों या कर्मियों की मेहनत का परिणाम नहीं, बल्कि उन लाखों इंदौरियों का उपहार है, जिन्होंने स्वच्छता को अपनी संस्कृति बना लिया। कचरे को स्रोत पर अलग करना, सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखना, और स्वच्छता अभियानों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना—इंदौर की जनता ने हर कदम पर प्रशासन का साथ दिया। स्वच्छता सर्वेक्षण 2023 में 12 करोड़ नागरिकों की प्रतिक्रियाओं ने साबित किया कि स्वच्छता केवल सरकारी योजना नहीं, बल्कि जन-आंदोलन है। इंदौर में कचरे से सीएनजी उत्पादन और जैविक खाद जैसे नवाचारों ने न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दिया, बल्कि नागरिकों में यह विश्वास जगाया कि उनका हर छोटा प्रयास मायने रखता है।

इस बार स्वच्छता सर्वेक्षण में एक नया प्रयोग हुआ। इंदौर, सूरत, नवी मुंबई, चंडीगढ़, नोएडा और उज्जैन जैसे 15 शहरों को सुपर स्वच्छता लीग में शामिल किया गया, जिसमें पिछले तीन वर्षों में शीर्ष तीन स्थानों पर रहे शहरों को रखा गया। इस लीग में 12,500 अंकों की स्कीम के तहत प्रदर्शन का मूल्यांकन हुआ, और इंदौर ने इसमें भी अपनी अजेयता साबित की। इसके साथ ही, एक नई पहल के तहत इन शीर्ष शहरों को कमजोर स्वच्छता स्कोर वाले शहरों को गोद लेकर उनकी स्थिति सुधारने की जिम्मेदारी दी गई। यह चुनौती इंदौर की नेतृत्व शक्ति को और परखेगी, साथ ही अन्य शहरों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी।

सूरत, नवी मुंबई, चंडीगढ़, नोएडा और उज्जैन ने भी स्वच्छता के क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी। सूरत, जो पिछले वर्ष इंदौर के साथ संयुक्त रूप से पहले स्थान पर था, इस बार दूसरे स्थान पर रहा। नवी मुंबई ने लगातार तीसरे स्थान पर अपनी स्थिति मजबूत की, जबकि चंडीगढ़ और नोएडा ने 3-10 लाख जनसंख्या वर्ग में अपनी स्वच्छता की मिसाल कायम की। उज्जैन, मध्य प्रदेश का एक और रत्न, ने भी इस श्रेणी में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई। ये शहर साबित करते हैं कि सामूहिक इच्छाशक्ति और प्रयासों से कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं।

इंदौर की यह उपलब्धि न केवल भारत, बल्कि विश्व स्तर पर स्वच्छता के नए मानक स्थापित करती है। स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य अब शहरों को पूरी तरह कचरा-मुक्त बनाना है। इंदौर जैसे शहरों को अब न केवल अपनी स्वच्छता को बनाए रखना है, बल्कि अन्य शहरों को भी इस पथ पर ले जाना है। सर्वेक्षण की थीम 'रिड्यूस, रियूज, रिसायकल' पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। इंदौर का यह सफर हमें सिखाता है कि स्वच्छता केवल एक आदत नहीं, बल्कि एक संस्कृति है, जो हमारे शहरों को और अधिक सुंदर, स्वस्थ और रहने योग्य बनाती है।

इंदौर की स्वच्छता गाथा एक ऐसी प्रेरणा है, जो हर भारतीय के हृदय को झंकृत करती है। यह कहानी प्रशासन की दृढ़ता, स्वच्छता कर्मियों की मेहनत और जनता के अटूट विश्वास की त्रिवेणी है। लगातार आठवीं बार भारत का सबसे स्वच्छ शहर बनना केवल एक उपलब्धि नहीं, बल्कि एक संदेश है—कि जब हम एकजुट होकर संकल्प लेते हैं, तो असंभव कुछ भी नहीं। इंदौर के सफाई मित्रों, प्रशासन और जनता को सलाम, जिन्होंने इस नगरी को स्वच्छता का स्वर्णिम ताज पहनाया। यह गाथा केवल इंदौर की नहीं, बल्कि हर उस भारतीय की है, जो अपने देश को स्वच्छ, सुंदर और समृद्ध देखना चाहता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

भारत का आध्यात्मिक इतिहास पूरी दुनिया के लिए प्रेरणास्रोत

डॉ.नर्मदेश्वर प्रसाद चौधरी

कथावाचन कौन कर सकता है और कौन नहीं कह सकता है, आजकल इस संबंध में चारों ओर से बड़ा ज्ञान सुनने को मिल रहा है। इस संदर्भ में अमूमन दो वर्ग सामने आए हैं – एक वर्ग कहता है कि कोई भी कथा कह सकता है, और दूसरा वर्ग कहता है कि कथा कहने का अधिकार केवल और केवल ब्राह्मणों का है। पहला वर्ग थोड़ा उदार है, लिबरल है, और कथा कहने को सबकी आज़ादी मानता है। दूसरा वर्ग दकियानूसी, जातिवादी, परंपरावादी, लकीर का फ़कीर है, वह कथा वाचन को केवल ब्राह्मणों की जागीर समझता है। इन दोनों वर्गों में कोई मेल नहीं है ।साथ ही एक तीसरी बात भी निरंतर सामने आ रही है जो 'मनुस्मृति' की गई बीती बातों को सही सिद्ध करने में लगी हुई है। आश्चर्य है कि ऐसी बातों का जिस त्वरा के साथ प्रतिकार होना चाहिए, नहीं किया जा रहा है। वे बातें ऐसी हैं जो, जिन परम्पराओं की संवैधानिक स्तर पर तिलांजलि दी जा चुकी है जिनके कारण समाज गर्त में चला गया था, उनके ही पुनर्स्थापना की बात करती है और संविधान से संचालित इस देश में जिसे खुले तौर पर निर्लज्जता के साथ बेरोक बेटोक प्रस्तुत भी किया जा रहा है।

भारत ऋषियों का देश रहा है जिस पर प्रत्येक भारतीय को गर्व है। भारत का आध्यात्मिक इतिहास पूरी दुनिया के लिए प्रेरणा का स्रोत है। भारत की यही आध्यात्मिक दृष्टि ही उसे विश्व गुरु बनाती है – एक ऐसी भूमि जो सृष्टि के प्रत्येक जीव का कल्याण चाहती है। इतनी ही गौरवशाली इस देश की सांस्कृतिक विरासत भी है जो भिन्न-भिन्न तरह से प्रकट हुई है मगर इसी मिट्टी में ऐसे तत्त्व भी मौजूद हैं जो उस विरासत को न तो समझते हैं और न ही उनका अनुकरण करने की ज़रा भी मंशा रखते हैं।

वर्तमान में जो कुछ भी भारतीय समाज में चारों ओर घटित हो रहा है, उसका अगर बारीकी से अध्ययन किया जाए तो यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि दिन-ब-दिन लोगों के बीच की खाइयाँ लगातार बढ़ती चली जा रही हैं। सौहार्द मिटता जा रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस जैसे किसी भी मसले पर दृढ़ता के साथ जो बातें रखी जानी चाहिए, या तो वे रखी नहीं जाती हैं या उसे रखने वाले लोग मौजूद नहीं हैं।

इस संबंध में यह भी हमेशा याद रखना चाहिए कि किसी को भी छोटा समझना बहुत ही घातक सिद्ध होता है क्योंकि उसका प्रतिकार या प्रतिफलन केवल इसी

रूप में प्रायः फलित होगा कि जब अमुक व्यक्ति या वर्ग अवसर प्राप्त करता है तो वह उनको (जिन्होंने उसे छोटा बनाया गया या जाताया गया) छोटा सिद्ध करके ही दम लेगा। प्रतिशोध या प्रतिकार से प्रेम कभी फलित नहीं होता है।

आजकल कथावाचकों के संबंध में जो चर्चा चल रही है वह बड़ी हास्यास्पद है और यह लोगों के पास भारत के विरासत की सांस्कृतिक समझ कितनी है, इसका भी परिचय देती है। भारत की ऋषि परम्परा ने अज्ञात को अनुभव से जाना। अज्ञात इतना विराट है, इतना आलोकित है कि उसमें जीवन की सारी पीड़ा भस्मीभूत हो जाती है। सारे दंश, सारे कष्ट, अज्ञान सब मिटे जाते हैं।

अज्ञात से प्राप्त उस परम अनुभव को ऋषियों ने कहानियों में पिरोया। प्रतीकों में गढ़ा। उसे मूर्तियों में ढाला। तीर्थों में तराशा। उसे महाकाव्यों में गुथा। उसे वाणी के माध्यम से सबमें बाँटा मगर प्रश्न यह है कि ऋषियों ने जब परम का अनुभव किया तो उसे दूसरों को बताने की फ़जूल ज़हमत में क्यूँ पड़ गए? क्योंकि इसी बताने में ही तो सारे फ़साद की जड़ मौजूद है।

इस विराट का अनुभव इतना आनन्ददायी होता है कि यह हमें समझ लेना चाहिए कि बिना बताए रहा नहीं जा सकता है। सूली पर लटका जा सकता है; ज़हर पिया जा सकता है; गला स्वयं का कटवाया जा सकता है; बस चुप भर नहीं रहा जा सकता है। इसी अनुभव को तो उपनिषदों ने – सत्-चिद-आनन्द कहा है। इसे ही तो गीता में भगवान कृष्ण ने श्रेष्टता का शिखर बताया है – जीवन के हर आयाम में श्रेष्टतम की अनुभूति।

क्या यह समझने में किसी को कोई भी कठिनाई हो सकती है कि जब भी किसी के जीवन में अच्छे अनुभव आते हैं तो वह सबके साथ बाँटना चाहता है, और अगर कटु अनुभव आते हैं, तो उन्हें छुपा लेना चाहता है। ओशो ने कहा है – "सुख फैलता है; दुख सिकोड़ता है।" इसलिए दुख में निरंतर जीने वाला व्यक्ति एक दिन जीवन से मुक्त होना चाहता है। सुख की राह पर चलने वाला फैलता जाएगा और एक दिन ब्रह्म को उपलब्ध होगा। क्योंकि भौतिक सुख की चाह भी अंततः आध्यात्मिक सुख की चाह में परिवर्तित होगी ही यदि वह चाह ठीक-ठीक मार्ग पर आरूढ़ रह जाए।

हम जानते हैं कि आदमी सामान्यतः अपने अच्छे अनुभवों को संरक्षित रखता है; बुरे अनुभवों को छोड़ता चला जाता है। तभी तो वह ज़िंदगी को जीने लायक बना पाता है। दुख में बहुत देर तक रहा नहीं जा सकता है। दुख को बदलना ही पड़ता है। बुद्ध ने भी जब दुख का समग्रीभूत अनुभव किया तो उसे परिश्रम, साधना और तप से बदल लिया।

व्यंग्य : चाह बाबा होने की !

कस्तूरी दिनेश

आजकल मन बाबा होने को कर रहा है | अपने घर का नहीं रे बाबा, इसमें दुःख ही दुःख है .हो तो सारी दुनिया का हो ! आनन्द ही आनन्द ! उम्र साठ की बॉर्डर लाइन पर पहुंच गई है ! जीवन भर बैल की तरह जुटा हुआ गृहस्थी की गाड़ी खींचता रहा पर घर में न मान,न सम्मान ! उपर से बहुओं का फुसफुसाना--- "बुड्ढा टोकाटाकी करते दिन-रात घर में खांसते-खुखरते पड़ा रहता है ! न काम का,न धाम का दुश्मन अनाज का ! भगवान इसको उपर बुलाते भी नहीं...! ऊपर जाए तो माँ गौरी को चुनरी चढ़ाऊँ !

इसके उलट,जगत बाबा बनने का मज़ा ही कुछ और है | आप जहां खड़े हो जाएँ,दुनिया त्राहिमाम-त्राहिमाम करती आपके चरणों की पवित्र धूलि को अपने माथे पर लेपने के लिए चरणों में लोट जाए ! बड़े-बड़े मंत्री और संत्री आपके आश्रम के दरवाजे पर लाइन लगाये अपने नम्बर की बाट जोहें | कल तक एक छोटी सी नौकरी और ट्रांसफर के लिए आपके गिड़गिड़ाने की आवाज, जिन महान देश-सेवकों के कानों तक पहुंचने के पहले दम तोड़ देती थी, आज आपके बाबा होते ही उन्हीं की आत्मा आपके चरण-चापने के लिए व्याकुल छटपटाने लगे ! है न परमानन्द वाली बात !

बाबा होने के लिए किसी डिग्री या प्रतिभा की जरूरत नहीं होती | थोड़ी धूर्तता का घोल,थोड़ी बेईमानी की वासनी और थोड़ा धर्म का गुलाब जल मिला दीजिये और भकोसिये आजीवन अपार श्री-सम्पत्ति की सुगन्धित स्वादिष्ट मिठाई ! करोड़ो का आश्रम बनाइए,मन्दिर-मस्जिद,चर्च-मदरसे खड़े कीजिए !प्रवचन झाड़िए,ग़रीबों कि मजबूरी का फायदा उठाकर धर्म परिवर्तन कीजिए ! कोई रोकने-टोकने वाला नही ! मंत्री को वोट कटने का डर है, पुलिस को माहवारी के नुकसान का भय...! अब बचा रोकने-टोकने वाला और कौन माई का लाल...? बस बन जाइए छांगुर बाबा ! विदेशों से करोड़ो की फंडिंग का दक्षिणा पाइए,देश की ऐसी तैसी की हरचंद कोशिश कीजिए !

कोई बात नहीं आज आप गली-गली,मारे-मारे घूम-घूमकर टिकली-चूड़ी, चूर्ण-मसाला बेचते रहे ! बहुत हो गया पर अब ये बेवकूफी बंद करिये अपने ज्ञान-चक्षु खोलिए ! दाढ़ी-वाढ़ी, खोपड़ी का जुल्फ बढ़ाइए और काला पीला लबादा ओढ़कर बन जाइए बाबा...! झूठमूठ का ओठ हिलाते मन्त्र पढ़िए,बीमारी ठीक करिए,भूत भगाइए ! सारी दुनिया आपके चरणों में लोटेगी बंदे ! अपने देश में मूर्खों की कमी है क्या ...! एक ढूढो हजार मिलते हैं !

हाँ,योग्य शिष्य बनाना न भूलियेगा ! आप ही की तरह गुणवान-प्रतिभावान , जो नाच-गा करके,आपकी यश-कीर्ति को अखिल भू-लोक क्या,स्वर्ग-लोक तक पहुंचा सके ! आपके पास जन्नत की एजेंसी है ! स्वर्ग वालों को भी तो धरती पर आपके द्वारा किये जा रहे इस महान धार्मिक श्रम-साध्य,पवित्र जिम्मेदारी का बोध होना चाहिए ताकि हूरों की दुनिया में आपका सीट भी रिजर्व हो सके ! अल्लाह,प्रभु और भगवान तीनों ने ही गूढ़ परामर्श के बाद मनुष्य जाति के उद्धार के लिए आपको इस पृथ्वी पर अवतार ग्रहण करवाया है ! मेरे देश के महान कर्मयोगी छांगुर बाबाओं, आप लोगों का बहुत-बहुत आत्मिक आभार ! भक्तों के अपने इस उद्धार—कर्म में तन-मन-धन लगाकर जुटे रहिये ! जयहिंद !

संवाद का संकट: क्या रिश्तों का आधार दरक रहा है?

[सुनना भूलती पीढ़ी : क्या हम संवादहीन युग में हैं?

सोचिए, एक पल ठहरकर, आख़िर क्या खो गया कि कानों में गूँजती आवाज़ें भी अब दिल तक नहीं पहुँचतीं? टेक्नॉलॉजी के इस अथाह समंदर में इंसानी संवाद का वो नन्हा सा दीप कहीं डूब सा गया है। चारों ओर सूचनाओं का सैलाब है—नोटिफिकेशन की घंटियाँ, मैसेज की बाढ़, वीडियो, रील्स, और अनगिनत अपडेट। इस डिजिटल कोलाहल में किसी की बात को गहराई से सुनना, उसके मन तक पहुँचना अब दुर्लभ अनुभव बन गया है। पहले गाँव के चौपालों पर, घर के आँगनों में, या चाय की दुकानों पर लोग घंटों बतियाते थे। हँसी-मजाक, कहानियाँ, और अनुभवों का आदान-प्रदान होता था। आज वही लोग एक कमरे में बैठकर भी अपने-अपने मोबाइल स्क्रीन पर खोए रहते हैं। यह बदलाव केवल तकनीकी सुविधा का परिणाम नहीं, बल्कि एक गहरे संवादहीनता के संकट का द्योतक है, जो हमारी सामाजिक और भावनात्मक ज़िंदगी को खोखला कर रहा है।

संवाद का अर्थ केवल शब्दों का लेन-देन नहीं है। इसमें आँखों का मिलना, आवाज़ की गर्माहट, और भावनाओं की साझेदारी शामिल होती है। लेकिन आज की पीढ़ी इतनी व्यस्त हो चुकी है कि उसे सुनने की फ़ुर्सत ही नहीं। एक अध्ययन के अनुसार, औसतन एक व्यक्ति दिन में 7-8 घंटे डिजिटल स्क्रीन पर बिताता है, जिसमें से अधिकांश समय सोशल मीडिया, स्ट्रीमिंग, या मैसेजिंग पर जाता है। वहीं, आमने-सामने की बातचीत का समय घटकर महज़ 20-30 मिनट प्रतिदिन रह गया है। यह आँकड़ा दर्शाता है कि हमारी प्राथमिकताएँ बदल चुकी हैं। बातचीत अब सतही प्रतिक्रियाओं तक सिमट गई है—"ठीक है", "देख लिया", या इमोजी भेज देना ही काफी माना जाता है। लेकिन क्या यह वास्तव में संवाद है? सच्चा संवाद तो तब होता है, जब हम सामने वाले की बात को धैर्य से सुनें, उसकी भावनाओं को समझें, और अपने विचारों को आत्मीयता से साझा करें।

आज की पीढ़ी अपनी बात कहने में तो माहिर है, लेकिन सुनने की कला भूलती जा रही है। सोशल मीडिया ने हर व्यक्ति को

वक्ता बना दिया है। हर कोई अपनी पोस्ट, स्टोरी, या रील्स के ज़रिए अपनी बात दुनिया तक पहुँचाना चाहता है। एक सर्वेक्षण के मुताबिक, 80% से अधिक युवा रोज़ाना सोशल मीडिया पर अपनी राय या अनुभव साझा करते हैं, लेकिन केवल 30% लोग दूसरों की पोस्ट को गहराई से पढ़ते या समझते हैं। यह एकतरफा संचार का युग है, जहाँ हर कोई बोलना चाहता है, लेकिन सुनने वाला कोई नहीं। इस होड़ में परिवारों में बुज़ुर्गों की कहानियाँ, जो कभी जीवन की सीख का खज़ाना होती थीं, अब "पुरानी बातें" बनकर रह गई हैं। बच्चों की कल्पनाएँ और सपने, जो बातचीत में झलकते थे, अब स्क्रीन पर बनने वाली रील्स तक सीमित हो गए हैं। स्कूलों में भी शिक्षक और विद्यार्थी के बीच का संवाद औपचारिकताओं तक सिमट गया है। इसका परिणाम यह है कि हम एक-दूसरे से भावनात्मक रूप से कटते जा रहे हैं।

इस संवादहीनता का सबसे गहरा असर हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार, पिछले दशक में अवसाद और चिंता के मामले 25% तक बढ़े हैं, और इसका एक बड़ा कारण सामाजिक अलगाव है। लोग अपनी भावनाओं को साझा करने से हिचकते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि कोई उन्हें गंभीरता से सुनेगा ही नहीं। एक अध्ययन में पाया गया कि 60% से अधिक लोग मानते हैं कि उनके दोस्त या परिवार वाले उनकी बात को पूरी तरह समझते नहीं। यह भावनात्मक दूरी अकेलेपन को जन्म देती है। हम स्क्रीन पर घंटों बिताते हैं, फिर भी मन में एक खालीपन रहता है। यह खालीपन हमारे रिश्तों को कमज़ोर कर रहा है। दोस्तों के बीच की गहरी बातचीत, जो पहले घंटों चलती थी, अब व्हाट्सएप ग्रुप की हल्की-फुल्की चैट तक सिमट गई है।

कई लोग तर्क देते हैं कि संवाद के तरीके बदल गए हैं, और हमें पुराने ढर्रे पर नहीं अटकना चाहिए। यह सच है कि तकनीक ने संचार को तेज़ और सुगम बनाया है। हम मीलों दूर बैठे लोगों से पलक झपकते जुड़ सकते हैं। लेकिन क्या यह जुड़ाव गहरा है? क्या एक वीडियो कॉल उस गर्मजोशी की जगह ले सकती है, जो आमने-सामने की बातचीत में होती है? तकनीक ने हमें सुविधाएँ दी हैं, लेकिन हमारी संवेदनाओं को सुन्न भी किया है। एक शोध के अनुसार, 70% लोग मानते हैं कि सोशल मीडिया ने उनकी वास्तविक ज़िंदगी के रिश्तों को प्रभावित किया है। हमारी बातचीत अब तकनीक की मध्यस्थता पर निर्भर हो गई है, और इसने हमें एक-दूसरे से भावनात्मक रूप से दूर कर दिया है।

इस संवादहीनता का एक और ख़तरनाक पहलू है—हम दूसरों की पीड़ाओं और अनुभवों के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं। समाचारों में जब किसी त्रासदी की खबर आती है, हम एक इमोजी या कमेंट के साथ अपनी प्रतिक्रिया दे देते हैं, लेकिन उसे गहराई से महसूस करना भूल जाते हैं। सोशल मीडिया पर हर घटना पर त्वरित राय देना हमारी आदत बन गई है, पर रुककर सोचना, समझना, और संवेदना दिखाना अब कम होता है। यह संवेदनहीनता हमें मानवीयता से दूर ले जा रही है। हम उपभोक्ता बन गए हैं, जो हर चीज़ को "कंटेंट" के रूप में देखते हैं, न कि एक जीवंत अनुभव के रूप में।

इस संकट से उबरने के लिए हमें अपनी प्राथमिकताओं पर पुनर्विचार करना होगा। क्या हम हर समय "ऑनलाइन" रहने की होड़ में अपने रिश्तों को खो रहे हैं? सुनना समय की बर्बादी नहीं, बल्कि रिश्तों का आधार है। अगर हम अपने परिवार, दोस्तों, या बच्चों की बातों को ध्यान से सुनें, तो उनके मन को समझ पाएँगे। बुज़ुर्गों की कहानियों में अनुभव का खज़ाना है, बच्चों की बातों में सपनों की उड़ान है, और दोस्तों की बातचीत में सहारा है। एक छोटा-सा प्रयास, जैसे फोन को कुछ देर के लिए अलग रखकर किसी की बात सुनना, रिश्तों में नई जान डाल सकता है।

आज का सबसे बड़ा उपहार शायद यही है कि हम किसी को बिना जल्दबाजी, बिना बाधा, पूरी तन्मयता से सुनें। यह छोटा-सा कदम हमारे रिश्तों को फिर से मज़बूत कर सकता है। संवादहीन युग में अगर हम सुनने की आदत को पुनर्जनन कर लें, तो यह अकेलापन और भावनात्मक दूरी कम हो सकती है। तकनीक को पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता, लेकिन उसे इंसानी रिश्तों की जगह कभी नहीं लेने देना चाहिए। हमें यह तय करना है कि हमारी पीढ़ी केवल अपनी बात कहने वाली बनेगी, या एक-दूसरे को सुनने और समझने वाली। यह चुनाव हमारे हाथ में है। शायद यही वह जवाब है, जो इस संवादहीन युग की सबसे बड़ी ज़रूरत है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

हर किसी को जानना चाहिए दुनिया बदलने वाली इन

राजेश जैन

हर सुबह जब सूरज उगता है, तो उसके साथ इंसानी जिज्ञासा भी एक नई दिशा में निकल पड़ती है। आज विज्ञान सिर्फ प्रयोगशालाओं की बात नहीं, बल्कि हमारे रोज़मर्रा के जीवन, करियर और भविष्य से जुड़ा हुआ सच है। हाल में विज्ञान की दुनिया में कई रोमांचक, क्रांतिकारी और उम्मीदों से भरी खोजें सामने आई हैं। ये खोजें सिर्फ तकनीक नहीं ला रहीं, बल्कि इंसानी ज़िंदगी को नए मायनों में परिभाषित कर रही हैं। इसलिए इनके बारे में हर किसी को जानना चाहिए।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का सुपर युग

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिर्फ वर्चुअल असिस्टेंट या चैटबॉट तक सीमित नहीं रह गई है। एआई अब शोधकर्ता, शिक्षक और डॉक्टर के रूप में उभर रही है। बड़े भाषा मॉडल्स (जैसे जीपीटी) अब संदर्भ समझते हैं, विश्लेषण करते हैं और ऐसे क्षेत्रों में योगदान दे रहे हैं जो पहले इंसानी सोच की परिधि में ही आते थे। मेडिकल डायग्नोसिस, न्यायिक विश्लेषण और यहां तक कि कला रचना में भी एआई की भूमिका उल्लेखनीय हो चुकी है। एआई आने वाले समय की सबसे बड़ी शक्ति है। इससे जुड़ी समझ रखना किसी को भी तकनीकी रूप से सक्षम और नैतिक दृष्टिकोण से सतर्क बनाएगा।

क्वांटम कंप्यूटिंग

क्वांटम कंप्यूटर अब विज्ञान गल्प नहीं रह गए हैं। कई स्टार्टअप्स और शोध संस्थान ऐसे क्वांटम सिस्टम पर काम कर रहे हैं जो दवा विकास, जटिल गणनाओं और एनक्रिप्शन तोड़ने जैसे कार्यों को चुटकियों में कर सकते हैं। इनमें स्थिर क्यूबिट्स, कम त्रुटि दर और बेहतर क्वांटम एल्गोरिदम विकसित किए जा चुके हैं।

कंप्यूटर साइंस और फिजिक्स में रुचि रखने वालों के लिए यह एक रोमांचक क्रांति है, जो करियर और शोध की नई राहें खोलती है।

जीन एडिटिंग की क्रांति

आज हम तकनीक की मदद से वैज्ञानिक डीएनए में गड़बड़ियों को ऐसे ठीक कर पा रहे हैं जैसे कंप्यूटर कोड में बग हटाते हैं। 2025 में सिकल सेल, थैलेसीमिया और कुछ कैंसर जैसे रोगों के इलाज में जीन एडिटिंग की भूमिका निर्णायक हो रही है। यह सिर्फ चिकित्सा नहीं, बल्कि जीवन की गुणवत्ता को पुनर्परिभाषित करने का युग है। इसलिए जैव प्रौद्योगिकी और नैतिक विज्ञान की इस जटिलता को समझना चाहिए।

चाँद और मंगल: अब केवल कविताओं में नहीं

अंतरिक्ष विज्ञान हमारी जिज्ञासा जगाता है। यह भविष्य की तकनीक, संचार और ऊर्जा प्रणालियों के लिए नई ज़मीन तैयार करता है। नासा का आर्टेमिस मिशन, यूरोपीय और भारतीय स्पेस एजेंसियों के रोवर और जेम्स वेब टेलीस्कोप मिलकर ब्रह्मांड के रहस्यों को उजागर कर रहे हैं। मंगल की सतह, चंद्रमा के ध्रुव और दूरस्थ गैलेक्सियाँ अब मानव समझ के दायरे में आ रही हैं।

ग्रीन एनर्जी और सुपर बैटरियाँ

जलवायु परिवर्तन के युग में सस्टेनेबल ऊर्जा ही एकमात्र रास्ता है। इसका तकनीकी और पर्यावरणीय पक्ष समझना बेहद जरूरी है। ऊर्जा क्रांति अपने चरम पर है। सॉलिड-स्टेट बैटरियाँ अब सिर्फ प्रयोग नहीं, बल्कि व्यावसायिक रूप ले चुकी हैं। ये बैटरियाँ जल्दी चार्ज होती हैं, ज्यादा सुरक्षित हैं और लंबी चलती हैं। साथ ही, सोलर और विंड पैनल्स पहले से ज्यादा कुशल हो गए हैं।

ब्रेन-कंप्यूटर इंटरफेस

अब कंप्यूटर सिर्फ हाथों से नहीं, दिमाग से भी चल रहा है। न्यूरोटेक्नोलॉजी ने ऐसे इंटरफेस बनाए हैं जो लकवे से पीड़ित व्यक्ति को फिर से चलना, बोलना और संवाद करना सिखा सकते हैं। न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर्स के इलाज में ये एक नई आशा की किरण हैं।

स्मार्ट मटीरियल्स

अब वैज्ञानिक ऐसी सामग्रियाँ बना रहे हैं जो अपने आप रिपेयर होती हैं, तापमान या दबाव के अनुसार रंग या रूप बदलती हैं और जिनका उपयोग अंतरिक्ष से लेकर मोबाइल स्क्रीन तक हो रहा है। हर इंजीनियर, वास्तुकार और डिज़ाइनर को मटीरियल साइंस की इन संभावनाओं से परिचित होना चाहिए।

पर्सनल मेडिसिन — हर किसी के लिए अलग दवा

हर इंसान की बायोलॉजी अलग होती है, इसलिए दवा भी अलग होनी चाहिए। जीनोमिक्स और फार्माकोजेनेटिक्स अब इस दिशा में इलाज को बिल्कुल पर्सनल बना रहे हैं, जिससे इलाज और ज्यादा सटीक और सुरक्षित हो रहे हैं।

गहरे समुद्र के रहस्य और समाधान

पृथ्वी की 70% सतह को समझना, जैव विविधता और जलवायु संतुलन के लिए अनिवार्य है। इसलिए समुद्र विज्ञान ने गहराई से खोज की जा रही है। नई प्रजातियाँ, जलवायु पर महासागरों का असर और ब्लू इकोनॉमी के लिए नए अवसर खोजे जा रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन पर वैज्ञानिक हमला

कार्बन कैप्चर टेक्नोलॉजी, सौर विकिरण प्रबंधन, और जलवायु मॉडलिंग की मदद से इंसान धरती को बचाने की ठोस कोशिशें कर रहा है। यह हममें से हर किसी की जिम्मेदारी है कि वह पर्यावरणीय संकट को समझे और समाधान में सहभागी बने।

खराब, ग़लत और अस्वास्थ्यकर सामग्रियों का इस्तेमाल रूकना चाहिए

समौसा और जलेबी भारत के सबसे प्रसिद्ध व्यंजनों में से एक है, जो अधिकतर लोगों द्वारा सेवन किए जाते हैं। पाठकों को बताता चलूं कि इन दिनों समौसा और जलेबी को लेकर चर्चाएं गर्म हैं, क्यों कि ये दोनों ही व्यंजन ऐसे हैं, जिन्हें शायद देश में सबसे ज्यादा सेवन किया जाता है। हर गली-मोहल्ले, दुकान, नुक्कड़, फुटपाथ, बाजार में मिलने वाले इन व्यंजनों के अलावा अन्य फ्राइड या तले हुए व्यंजनों को लेकर किया जा रहा प्रयास काफी सराहनीय इसलिए है, क्यों कि इनमें काफी मात्रा में नमक,तेल, शक्कर की मात्रा देखने को मिलती है। तैलीय और मीठे खाद्य पदार्थों को लेकर हमारे देश में कोई विशेष गाइडलाइंस नहीं हैं, लेकिन अब इस पर यदि प्रयास किया जा रहा है तो इससे अच्छी बात भला और क्या हो सकती है ? पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में स्वास्थ्य मंत्रालय ने 21 जून 2025 को ही लोगों में स्वास्थ्यकारी खानपान की आदत को बढ़ावा देने के लिए सरकारी संस्थानों में खाने से जुड़ी चीजों में शक्कर और तेल से जुड़ी जानकारी वाले बोर्ड लगाने के सुझाव संबंधी एक एडवाइजरी जारी की थी और इस एडवाइजरी(जो कि सुझाव था) के जरिए आम लोगों को रोजाना के खाद्य पदार्थों में छिपी वसा(फैट) और शक्कर(शुगर) से जुड़ी अहम जानकारी देने का लक्ष्य रखा गया था। एडवाइजरी में खाद्य पदार्थों से जुड़ी इन जानकारियों को कैफेटेरिया, मीटिंग रूम्स और अन्य सार्वजनिक जगहों पर लगाने की बात कही गई, ताकि इनके जोखिमों को लेकर जागरूकता बढ़ाई जा सके। सरकार ने इसके जरिए लोगों में स्वस्थ खानपान की आदत और ज्यादा शारीरिक गतिविधियों को बढ़ावा देने की भी बात कही थी, ताकि वे ज्यादा फल, सब्जी और कम वसा वाला खाना खाएं और शक्कर वाले पेय पदार्थ या उच्च-वसा वाले स्नैक्स को भी कम करें, क्यों कि आज की भागम-भाग जिंदगी में हम अपने खान-पान पर अधिक ध्यान नहीं देते हैं और जिसके कारण स्वास्थ्य संबंधी अनेक समस्याएं हमारे देश में लगातार पैदा हो रहीं हैं। मसलन मोटापा, शुगर (डायबीटिज), हाई बीपी, हाई कालेस्ट्राल, हृदय संबंधी बीमारियां लगातार अपने पैर फैला रहीं हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि मधुमेह, मोटापा और उच्च रक्तचाप जैसी जीवनशैली संबंधी बीमारियों को रोकने के लिए चीनी, नमक और तेल का सेवन सीमित करना आज के समय में बहुत ही आवश्यक व जरूरी हो गया है। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि तैलीय और मीठे खाद्य पदार्थों के बारे में चेतावनी जारी हो, ताकि हम अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग व जागरूक रह सकें। हालांकि, इसी बीच सोशल मीडिया पर समोसा जलेबी को लेकर एक पोस्ट भी शेयर की जा रही है कि समोसा- जलेबी सेहत के लिए हानिकारक है और इसके साथ ही दावा किया जा रहा है कि समोसा और जलेबी के पैकट में चीनी और तेल की मात्रा के लिए स्वास्थ मंत्रालय जल्द ही इस पर लेबल लगाने वाली है, जो कि भ्रामक है। पाठकों को बताता चलूं कि सरकार की ओर से लेबल पर कितनी चीनी और तेल की मात्रा है, इससे संबंधी कोई सूचना नहीं दी गई है। दरअसल, जैसा कि ऊपर भी जानकारी दे चुका हूं कि आम लोगों में स्वास्थ्यकारी खानपान की आदत को बढ़ावा देने के लिए सरकारी संस्थानों में खाने से जुड़ी चीजों में शक्कर और तेल से जुड़ी जानकारी वाले बोर्ड लगाने का प्रस्ताव दिया गया था। बहरहाल, यह प्रस्ताव अच्छा है, क्यों कि हमारे देश में, अनुमानतः 10 करोड़ से अधिक लोग मधुमेह (डायबिटीज) से पीड़ित हैं और बड़ी बात यह है कि यह संख्या बहुत ही तेजी से बढ़ रही है, और कुछ अनुमानों के अनुसार, 2050 तक यह

आंकड़ा 13.5 करोड़ को भी पार कर सकता है। इतना ही नहीं, लगभग 13.6 करोड़ लोग प्री-डायबिटिक स्थिति में हैं, जिसका मतलब है कि उन्हें कभी भी मधुमेह हो सकता है ।कुछ अध्ययनों में यह भी अनुमान लगाया गया है कि 2050 तक दुनिया में मधुमेह से पीड़ित लोगों की संख्या दोगुनी हो जाएगी, जिसमें भारत में भी मामलों की संख्या में भारी वृद्धि होगी ।एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार हमारे देश को 'दुनिया की मधुमेह राजधानी' के रूप में भी जाना जाता है। मधुमेह ही नहीं भारत में मोटापे से पीड़ित लोगों की संख्या भी बहुत अधिक है। आंकड़े बताते हैं कि भारत में 100 मिलियन (10 करोड़) से ज्यादा लोग मोटापे की समस्या से जूझ रहे हैं ।एक अन्य आंकड़े की बात करें तो हमारे देश में, लगभग 135 मिलियन लोग मोटापे से पीड़ित हैं, और यह संख्या दक्षिण एशियाई क्षेत्र में सबसे तेजी से बढ़ती हुई मोटापे की दर का हिस्सा है। इतना ही नहीं, साल 2050 तक, भारत की लगभग एक तिहाई आबादी मोटापे से पीड़ित हो सकती है, जो एक महामारी का रूप ले सकती है ।बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि मोटापे के कारण गंभीर और क्रोनिक बीमारियों का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। अनेक अध्ययनों से यह पता चलता है कि अधिक वजन के शिकार लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कमजोर हो जाती है, जिसके कारण उनमें संक्रामक बीमारियों का जोखिम काफी बढ़ जाता है। हालांकि, यहां यह एक अलग बात है कि हमारे देश में मोटापा बढ़ रहा है और इसके खिलाफ जागरूकता भी लगातार बढ़ रही है। इस क्रम में स्वयं हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'फिट इंडिया अभियान' के तहत देश की आम जनता से तेल और चीनी का उपभोग कम करने का आह्वान किया था। उन्होंने यहां तक भी कहा था कि लोग अपने भोजन में तेल को कम करके विकसित भारत बनाने में योगदान दे सकते हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि इस क्रम में अत्यधिक तेल और मिठास के खिलाफ आकाशवाणी पर भी निरंतर प्रचार पिछले कुछ समय से चल रहा है। वास्तव में जब आम लोगों को इन व्यंजनों (विशेषकर समौसा और जलेबी) में वसा और चीनी,नमक आदि की मात्रा के बारे में पता होगा तो इसका असर आम जनता पर निश्चित ही कहीं न कहीं पड़ेगा और वे अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो सकेंगे। वास्तव में तमाम रेस्तरां और मिष्ठान भंडारों पर इस चेतावनी को लटकाना आवश्यक है, क्यों कि अक्सर व्यंजनों को तैयार करते समय वसा,तेल व नमक आदि की मात्रा की परवाह नहीं की जाती है। चेतावनी के कारण

लोग तेल और चीनी के प्रयोग को कम करने के लिए प्रेरित होंगे। वास्तव में बचाव बहुत जरूरी है। कहना ग़लत नहीं होगा कि जब समोसे, जलेबी जैसे खाद्य पदार्थों पर चेतावनी रहेगी, तो खानपान में सुधार की गति को और बल मिलेगा और हम फिट इंडिया की ओर अग्रसर हो पाएंगे। समौसा,जलेबी ही नहीं आज बाजार में बहुत से व्यंजन ऐसे उपलब्ध होते हैं जिनमें तेज मसाले, नमक, चीनी,वसा,मैदा, कृत्रिम रंग और विभिन्न रसायनों तक का खतरनाक उपयोग हो रहा है। समौसा और जलेबी बनाने में तो एक ही तेल का बार-बार उपयोग किया जाता है और यह बात किसी व्यक्ति विशेष से छिपी हुई नहीं है। खराब, गलत, अस्वास्थ्यकर सामग्रियों का इस्तेमाल तत्काल रुकना चाहिए। हालांकि, यह भी एक कटु सत्य है कि मात्र चेतावनी से सुधार होने वाला नहीं है, क्यों कि चेतावनी तो तंबाकू उत्पादों पर भी लिखी/छपी होती है। खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने वाले महकमों, उसके अधिकारियों, स्वास्थ्य विभाग को भी इसके लिए युद्ध स्तर पर सक्रिय होना पड़ेगा, तभी हम वास्तव में अपने देश को स्वास्थ्य के क्षेत्र में अग्रणी बनाकर विकसित भारत का सपना साकार कर पायेंगे, अन्यथा यह सब बातें कागजों तक ही सीमित रह जाएंगी, धरातल पर नहीं उतरेंगी। वास्तव में 'शुद्ध के लिए युद्ध' होना चाहिए।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार,

योग शिक्षिका पर अभद्र टिप्पणी मामले में मंत्री इरफान की राहत याचिका खारिज

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची , झारखंड की योग शिक्षिका राफिया नाज पर पांच वर्ष पूर्व की गयी आपत्तिजनक टिप्पणी को लेकर झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी को निचली अदालत ने राहत देना मुमकिन नही समझा । बुधवार को सुनवाई के बाद एमपी-एमएलए मामले के विशेष न्यायाधीश सार्थक शर्मा की अदालत से उनकी ओर से व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट की मांग वाली याचिका को खारिज कर दिया है। दोनों पक्षों को सुनने के बाद अदालत ने याचिका खारिज कर दी। अदालत ने पूर्व में उन्हें कोर्ट में उपस्थित होने के लिए समन जारी किया है। सुनवाई के दौरान शिकायतकर्ता के अधिवक्ता जितेंद्र कुमार वर्मा ने याचिका का विरोध करते हुए कहा कि मंत्री इरफान अंसारी का मुख्यालय राजधानी में है, जो कोर्ट से काफी निकट है।

ऐसे में उपस्थिति में छूट की मांग करना सही नहीं है। जबकि इरफान अंसारी की ओर से व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट की मांग की गई।

बता दें कि इरफान अंसारी पर आरोप है कि एक निजी समाचार चैनल पर योग शिक्षिका राफिया नाज के पहनावे को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। इससे उनकी छवि धूमिल हुई और धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंची है। इसको लेकर राफिया नाज ने 19 अगस्त 2020 को सिविल कोर्ट रांची में इरफान अंसारी के खिलाफ स्त्री लज्जा भंग करने और पहनावे को लेकर अनुचित टिप्पणी करने का आरोप लगाते हुए शिकायतवाद दर्ज कराई थी। अदालत मानहानि करने के मामले में संज्ञान लेते हुए समन जारी किया था।

रामपली हैदराबाद में ठाकुर ज्वैलर्स शोरूम के शुभारंभ के अवसर पर उपस्थित, कुमावत सेवा समिति उप्पल के संरक्षक चंद्रप्रकाश मोटावत, आर .कुमावत, ओमकार दुबलदिया, शोरूम के प्रबंधक धाराराम रेनवाल, बाबूलाल रेनवाल बाबूलाल खरनालिया, नाथूराम लारना

झारखंड मे महिला उत्थान निमित्त जोहार योजना को विश्व बैंक की सराहना

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, झारखंड का सरकारी स्तर पर अभिवादन का शब्द जोहार होता है । जो उत्तर भारत की संस्कृत के बाद एक मात्र शास्त्रीय तथा 2600 वर्ष पुरानी भाषा ओड़िया में भी जोहार का मतलब प्रणाम को कहा जाता है ।इसी जोहार (Jharkhand opportunities for harnessing rural growth) पर नामित महिला उत्थान निमित्त राज्य सरकार एवं विश्व बैंक सौजन्य से संचालित योजना को आज विश्व बैंक ने अपार सफलता बताया है . जेएसएलपीएस द्वारा संचालित इस योजना की उपयोगिता पर खरे उतरने के कारण स्वयं विश्व बैंक द्वारा तारीफ करना झारखंड के लिए गर्व की बात मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा है . मई 2017 से जून 2024 तक जोहार परियोजना का जन्म काल खंड होता है जहां विश्व बैंक की 70% ऋण सहायता और राज्य सरकार का 30% अंशदान रही है .

विश्व बैंक ने आज झारखंड में चलाई गयी इस 'जोहार परियोजना' की खुलकर तारीफ करते हुए कहा कि इस ग्रामीण विकास विभाग के अधीन झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी द्वारा संचालित इस परियोजना ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा दिखाई है. सिर्फ 4 वर्षों में 21 महिलाओं के नेतृत्व वाले फार्मर प्रोड्यूसर ऑर्गेनाइजेशन यानी एफपीओ ने 21 मिलियन अमेरिकी डॉलर का टर्नओवर हासिल कर लिया है.

विश्व बैंक ने रांची के कांके स्थित प्रोड्यूसर ग्रुप की चेयरपर्सन आशा देवी और उनके जैसी हजारों महिलाओं की उपलब्धियों की सराहना की है. एक्स पर विश्व बैंक के जोहार परियोजना से जुड़े पोस्ट को साझा करते हुए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने लिखा कि 'झारखंड की मेरी माताएं-बहनें आज सशक्त होकर आगे बढ़ रही हैं. आप सभी आगे बढ़ते रहें, आपका यह बेटा और भाई हमेशा आपके साथ हैं'.वहीं, विश्व बैंक ने अपने पोस्ट में लिखा कि आज, हम अपने व्यवसाय के हर पहलू को समझते हैं—मुनाफ़े के मार्जिन से लेकर बाज़ार के रुझानों तक. हमने साथ मिलकर बातचीत करना सीख लिया है और जानते हैं कि हमें कम पर समझौता नहीं करना है.

जेएसएलपीएस के अनुसार, यह परियोजना झारखंड के 17 जिलों के 68 प्रखंडों में लागू है।

इसके तहतः3,500 उत्पादक समूहों के ज़रिए 2 लाख ग्रामीण परिवारों की आय में वृद्धि हुई।

2.24 लाख उत्पादकों को संगठित कर 3,922 उत्पादक समूहों का गठन किया गया।

17,000 सामुदायिक कैडरों को प्रशिक्षित कर स्थानीय महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया गया।

यह योजना मुख्यतः कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन, और लघु वनोपज जैसे क्षेत्रों में केंद्रित रही।

ओडिशा की एक लड़की न्याय की लड़ाई हार गई : प्रियंका गांधी

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : बालासोर एफएम कॉलेज के एक छात्र की मौत ने अब गरमागरम बहस छेड़ दी है। कांग्रेस की पोस्टर गर्ल प्रियंका गांधी ने भी इस मुद्दे पर अपनी राय व्यक्त की है। अपने सोशल मीडिया हैंडल @X पर पोस्ट करते हुए, उन्होंने एफएम कॉलेज के छात्र के परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की और बताया कि कैसे न्याय न मिलने पर छात्र ने यह कदम उठाया ।प्रियंका गांधी ने सोशल मीडिया हैंडल X पर पोस्ट शेयर करते हुए कहा, 'ओडिशा की एक और लड़की न्याय की लड़ाई हार गई। न्याय मांगने पर उसे सिर्फ़ अपमान और धोखा मिला। इसी उत्पीड़न ने उसे आत्महत्या जैसा कदम उठाने पर मजबूर किया।'

उन्होंने आगे कहा, 'दिल्ली से लेकर मणिपुर और ओडिशा तक, क्या भाजपा का एक ही लक्ष्य है? आरोपियों का समर्थन करना, पीड़ितों को धोखा देना और न्याय में बाधा डालना।'

प्रियंका गांधी ने प्रधानमंत्री से सवाल करते हुए कहा कि क्या अब देश की आधी जनता न्याय की उम्मीद छोड़ दे? एफएम कॉलेज की छात्रा की शिकायत को बार-बार नज़रअंदाज़ किए जाने के बाद, उसने कथित तौर पर 12 जुलाई को एक कठोर फैसला लिया। उसने खुद पर पेट्रोल डालकर आग लगा ली। इसके बाद वह चार दिनों तक मौत से लड़ती रही और आखिरकार 15 जुलाई को उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। इससे पूरे राज्य में बवाल मच गया है। विपक्ष सरकार को घेर रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर भी इस पर चर्चा हो रही है। तुंग के नेता इस मुद्दे पर अपनी राय रख रहे हैं।

सड़कों पर उतरने से पहले अपनी सरकार के कामों की समीक्षा करें : बीजेपी

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वरः सांसद अपराजिता सारंगी ने एक प्रेस वार्ता में बीजद पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने पिछली सरकार पर सीधा सवाल उठाया। बीजद सरकार ने 24 साल ओडिशा पर राज किया। अब जो मगरमच्छ के आंसू बहा रहे हैं, वे नवीन पटनायक थे, उनकी सरकार के दौरान हुई तमाम घटनाओं को सब जानते हैं। क्या तत्कालीन मुख्यमंत्री एक बार भी पीड़िता से मिलने गए? कांग्रेस भी 40 साल सत्ता में रही। महिलाओं के साथ कई घटनाएं हुईं। क्या राष्ट्रपति कभी आए? बीजद और कांग्रेस और दिल्ली से आए कांग्रेस नेता माहौल बिगाड़ रहे हैं। 24 साल की सरकार में बीजद का मुख्यमंत्री था। कांग्रेस 40 साल सत्ता में रही।

उन्होंने अब तक महिला सुरक्षा के लिए कोई माहौल क्यों नहीं बनाया? दोषारोपण की राजनीति चल रही है। विपक्ष अपना अस्तित्व बचाने के लिए ये सारे कार्यक्रम कर रहा है। बेहतर होता कि वे आत्ममंथन करते और सड़कों पर उतरते। हम जानते हैं कि उन्होंने अपने समय में महिलाओं को कितना न्याय दिया। कांग्रेस और बीजद सिर्फ़ प्रासंगिक, प्रासंगिक और ख़बरों में बने रहने के लिए ऐसा कर रहे हैं। विपक्ष के आंदोलन को हर कोई नापसंद कर रहा है। अपराजिता ने सोशल मीडिया पोस्ट दिखाकर विपक्ष पर हमला बोला। कैसे बीजद और कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने बीमार लड़की पर अत्याचार किया।

ऐसे समय में, वे विपक्ष के व्यवहार की आलोचना कर रहे हैं। वे डायनों की तरह काम कर रहे हैं, वे डायनों की तरह सड़कों पर झाड़ू लगा रहे हैं। अगर बीजद और कांग्रेस ने महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित की होती, तो ऐसी घटनाएं कभी नहीं होतीं। अपराजिता ने अलका लांबा का नाम लिए बिना उन पर निशाना साधा। एक महिला नेता दिल्ली से माहौल बिगाड़ने आईं। अपराजिता ने कहा कि कांग्रेस और बीजद को महिला सुरक्षा पर बोलने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है।

गौशाला को शेड निर्माण के लिए दी सहयोग राशि

परिवहन विशेष न्यूज

सुचित्रा जीडिमेटलाः जीडिमेटला स्थित वीर हनुमान गौशाला में सुराराम महिला भजन मंडली व शापुर नगर महिला भजन मंडली और से संचालित जीव दया गौशाला में शेड निर्माण के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया। महिला भजन मंडली ने आगे भी गौशाला में शेड निर्माण या गायों के संरक्षण हेतु दान किया जाएगा ।सुराराम महिला भजन मंडली द्वारा 51101 राशि सहयोग किया ।शापुर नगर महिला भजन मंडली द्वारा 101600 राशि सहयोग किया गौशाला में गौभक्त चेनाराम सीरवी, भंवराई सीरवी,सरजू माली , लीला देवी सीरवी,अनिता माली, शोभा जाट, संतोष सीरवी, देवी माली, रेखा सीरवी, सुरजा माली, शोभा, संगीता सीरवी, गीता सीरवी व अन्य उपस्थित रहे

सीरवी समाज कोथरूड मगाराम मुलेवा बने अध्यक्ष व डगराराम गेहलोत बने सचिव

परिवहन विशेष न्यूज

महाराष्ट्र पुणेः श्री आईमाताजी मंदिर ट्रस्ट सीरवी समाज कोथरूड की साधारण सभा में नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। नई कार्यकारिणी कमेटी वर्तमान अध्यक्ष लक्ष्मणराम परीहार व सभी समाज बंधुओ की उपस्थिति में सर्व सहमति से चुनाव सम्पन्न हुए। जिसमें सर्वसम्मति से अध्यक्ष मगाराम मुलेवा पाबुजी देवली को अध्यक्ष तथा डगराराम गेहलोत मामावास को सचिव चुना गया। इसके अलावा अन्य पदाधिकारियों में मूलाराम सोलंकी को उपाध्यक्ष, कालूराम भायल को सह सचिव तथा नारायणलाल गेहलोत को कोषाध्यक्ष, हेमराज परमार को सह-कोषाध्यक्ष चुना गया। इसके अलावा सलागार मगाराम सोलंकी, आशाराम भायल, मोतीलाल गेहलोत, हिराराम परमार, मोटाराम परमार को शामिल किया गया। कार्यकारिणी सदस्य नथाराम राठोड़, मुलाराम काग, मोहनलाल आगलेचा, बाबूलाल गेहलोत, चंदनमल देवड़ा, शेषाराम सोलंकी, बाबूलाल राठौड़, बाबूलाल काग, किशनाराम पवार, मांगीलाल काग, को सर्व सहमति से मनोनीत किया। नये अध्यक्ष मगाराम मूलेवा ने कहा कि समाज के सदस्यों ने हम लोगों को जो जिम्मेदारी सौंपी है उसका निर्वाहन पूरी निष्ठा व समर्पण के साथ करेंगे। नई कार्यकारिणी पदाधिकारियों व सदस्यों को शपथ दिलाई गई और समाज की ओर से सम्मान किया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**